सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 199, नई दिल्ली, शुक्रवार 26 सितंबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार
किसी भी जीवन में आपका एकमात्र दायित्व स्वयं के प्रति सच्चा होना है।

03 श्एक दिन - एक घंटा - साथश् स्वच्छता के लिए श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन किया
06 अस्पतालों में पुस्तकालय
08 झारखंड के पारसनाथ पहाड़ियों मे नक्सलियों के ठिकाने से मिले हथियार...

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत एवं परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र द्वारा सांझा प्रयास

"सुरक्षित और सशक्त वातावरण" " विषय पर एक महत्वपूर्ण कार्यशाला"

संजय बाटला

1. न्यायालय, कानूनी जानकारों एवं विभागों को बनाया जाएगा सहयोगी
2. कार्यशाला के सत्रों में पीसीपीएनडीटी एक्ट, एमटीपी एक्ट, पॉक्सो एक्ट के प्रावधानों तथा उनके दुरुपयोग पर व्यापक चर्चा की जाएगी।
3. सुरक्षित वातावरण बनाने और उनके सशक्तिकरण के लिए न्यायपालिका एवं प्रशासन के संयुक्त प्रयासों को मजबूती प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण कदम।

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.) TOLWA

बालिका सुरक्षा पर कार्यशाला का आयोजन, न्यायालय, कानूनी जानकारों एवं विभागों को बनाया जाएगा सहयोगी, "बालिका सुरक्षा भारत में और उसके लिए एक सुरक्षित एवम्-सशक्त वातावरण की ओर" के साथ फाइनेस कंपनियों द्वारा नियमों के बाहर जाकर जनता को परेशान करने के विषय पर एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन करने का लिया गया फैसला।

इसका उद्देश्य बालिकाओं के खिलाफ हिंसा, बाल विवाह और तस्करी रोकने के उपायों पर चर्चा कर उनके सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के लिए योजना बनाना है।

यह कार्यशाला बालिकाओं के लिए सुरक्षित कार्यशाला में बालिकाओं को निर्भीक और आत्मविश्वासी बनने का संदेश देने का प्रयास किया जाएगा। कार्यशाला के सत्रों में पीसीपीएनडीटी एक्ट, एमटीपी एक्ट, पॉक्सो एक्ट के प्रावधानों तथा उनके दुरुपयोग पर व्यापक चर्चा की जाएगी।

वातावरण बनाने और उनके सशक्तिकरण के लिए न्यायपालिका एवं प्रशासन के संयुक्त प्रयासों को मजबूती प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

इसके अलावा फाइनेस कंपनियों द्वारा नियमों का पालन नहीं करने पर जनता को क्या करना चाहिए पर विशेष वार्तालाप की जाएगी।

दिल्ली से 17 शहरों के लिए चलेंगी डीटीसी की ई-बसें

दिल्ली परिवहन निगम ने दो दशक बाद अंतरराज्यीय ई-बस सेवा की शुरुआत की है। नई योजना के तहत छह राज्यों के 17 शहरों के लिए 100 आधुनिक बसों का संचालन होगा। इससे यात्रियों को सीधी, सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल यात्रा मिलेगी।

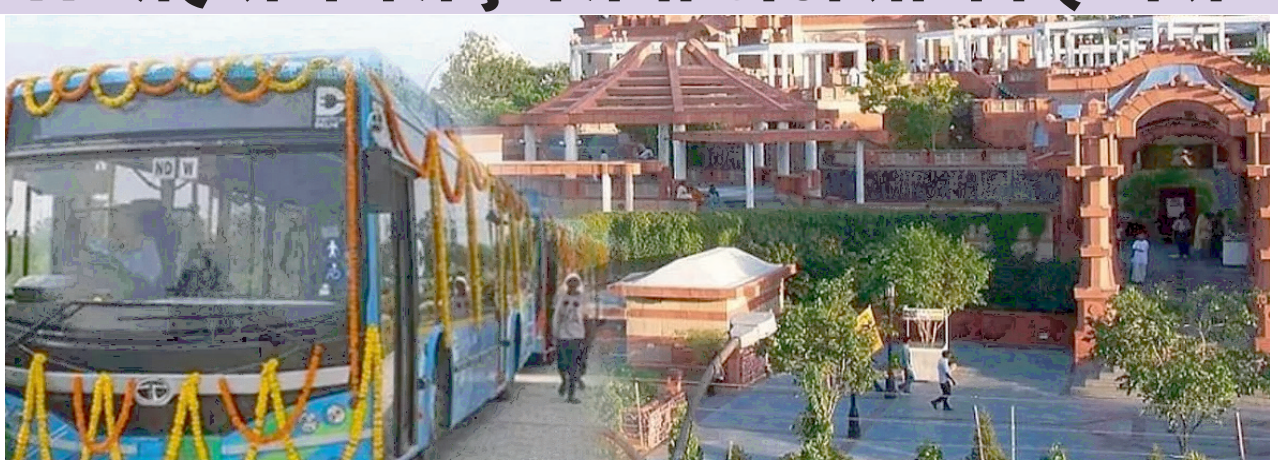

नई दिल्ली। करीब दो दशक बाद दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) ने फिर से अंतरराज्यीय बस सेवा शुरू कर दी है। हाल ही में यूपी के बड़ौत के लिए छह ई-बसों की शुरुआत की गई है। निगम अब इस योजना को और आगे बढ़ा रहा है। इसके तहत छह राज्यों के 17 शहरों के लिए 100 ई-बसों का संचालन किया जाएगा।

यात्रियों की पुरानी पसंद थी डीटीसी

डीटीसी की अंतरराज्यीय बस सेवा पहले भी बेहद लोकप्रिय रही है। 2004 तक निगम की बसें दिल्ली से अन्य राज्यों में नियमित रूप से चलती थीं। यात्रियों की पहली पसंद होने के बावजूद, डीजल से सीएनजी में परिवर्तन और दूसरे राज्यों में सीएनजी की सुविधा न होने से यह सेवा धीरे-धीरे बंद हो गई। 2010 में पूरी तरह सीएनजी अपनाने के बाद अंतरराज्यीय सेवा भी समाप्त कर दी गई। सरकार को उम्मीद है कि नई ई-बस सेवा शुरू होने के बाद लोग निजी कारों की जगह सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करेंगे।

अन्य शहरों के लिए जल्द मिलेगी हरी झंडी

अधिकारियों का कहना है कि बसों की खरीद और अन्य राज्यों के साथ तालमेल की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। नई बसों की डिलीवरी होते ही सेवा को हरी झंडी दिखा दी जाएगी। इसके शुरू होने के बाद दिल्ली और पड़ोसी राज्यों के बीच यात्रा करने वाले लाखों यात्रियों को सीधी, आरामदायक और सुरक्षित यात्रा का नया विकल्प मिलेगा।

राजधानी में घटा वाहनों का घनत्व, मेट्रो पर बढ़ा भरोसा....

नई दिल्ली में डीटीसी और क्लस्टर बसों की संख्या बढ़ी है, पर इनसे सफर करने वाले यात्रियों की संख्या घटी है। रिपोर्ट के अनुसार, मेट्रो की लोकप्रियता में वृद्धि दर्ज की गई है। सड़क हादसों में भी कमी आई है।

नईदिल्ली। राजधानी में वाहनों की संख्या का दबाव घटा है। प्रति हजार आबादी पर वाहनों की संख्या 2015-16 में 530 थी जो 2023-24 में घटकर 373 रह गई। इस अवधि में सड़क हादसों में भी कमी दर्ज की गई। 2015 में 8,085 सड़क हादसे हुए थे। वहीं, 2022 में इनकी संख्या घटकर 5,560 रह गई। यह जानकारी हाल ही में निदेशालय आर्थिक एवं सांख्यिकी की ओर से जारी दिल्ली स्टेट फ्रेमवर्क इंडिकेटर रिपोर्ट में सामने आई है। रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) और क्लस्टर बसों की संख्या 2015-16 के 5,842 से बढ़कर 2023-24 में 7,485 हो गई है। हालांकि, इन बसों में रोजाना सफर करने वाले यात्रियों की औसत संख्या 46 लाख से घटकर 42 लाख रह गई। रिपोर्ट बताती है कि मेट्रो में यात्रियों का भरोसा लगातार बढ़ा है। 2015-16 में जहां औसतन 26 लाख यात्री रोजाना मेट्रो से सफर करते थे। वहीं, 2023-24 में यह संख्या बढ़कर 58 लाख तक पहुंच गई। दिल्ली की आबादी में सार्वजनिक परिवहन तक पहुंच भी उतार-चढ़ाव भरी रही। 2015-16 में 42.95 प्रतिशत लोगों को पब्लिक ट्रांसपोर्ट तक सीधी पहुंच थी। अब ये आंकड़ा 2022-23 में घटकर 40.80 प्रतिशत पर आ गया। हालांकि, 2023-24 में इसमें सुधार हुआ और यह 45.83 प्रतिशत तक पहुंच गया।

सड़क हादसों में कमी

सड़क सुरक्षा के लिहाज से भी तस्वीर पहले से बेहतर हुई है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों के अनुसार, 2015 में सड़क हादसों में मरने या घायल होने वालों की संख्या 9,880 थी जो 2021 में घटकर 5,228 रह गई। हालांकि, 2022 में इसमें हल्की बढ़ोतरी दर्ज की गई और यह संख्या 6,174 तक पहुंच गई। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2030 तक सरकार का लक्ष्य है कि हर व्यक्ति को सुरक्षित, किफायती, सुलभ और टिकाऊ परिवहन प्रणाली उपलब्ध कराई जाए। साथ ही, सड़क सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए पब्लिक ट्रांसपोर्ट का विस्तार किया जाएगा। इसमें विशेष ध्यान महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों और दिव्यांगों जैसे संवेदनशील वर्गों पर दिया जाएगा।

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा-डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अर्थॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
• दशहरे के दूसरे दिन
• दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
• स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

"श्री श्री दुर्गा शरणम" तैंतीसवां सार्वजनिक दुर्गोत्सव

प्रिय महोदय,

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपके शहर उत्तम नगर में 'उत्तम नगर कालीबाड़ी द्वारा शनिवार दिनांक 27 सितंबर, 2025 से 2 अक्टूबर, 2025 बृहस्पतिवार तक सी-50, मनसा राम पार्क, नई दिल्ली-59 में श्री श्री दुर्गा माँ की पूजा एवम् 20 अक्टूबर, 2025 सोमवार श्री श्री काली माँ की पूजा का भव्य आयोजन किया जा रहा है। अतः आप सबसे हार्दिक निवेदन है कि आप सब इस विशाल आयोजन में सम्मिलित होकर माँ दुर्गा एवम् काली माँ का आर्शीवाद प्राप्त करें और इस आयोजन को सफल बनायें।

प्रिय भक्तों!

हमें आपको यह सूचित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि उत्तम नगर कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 में 33वें वर्ष दुर्गा पूजा एवं काली पूजा समारोह का आयोजन कर रही है। हम आपके परिवार और मित्रों को 27 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक हमारे काली मंदिर में आयोजित होने वाले इस समारोह में शामिल होने के लिए सादर आमंत्रित करते हैं।

आइए एक बार फिर खुशियाँ बाँटें, अपनी आत्मा को समृद्ध करें और पारिवारिक माहौल में त्योहार का आनंद लें। आप सभी के उदार सहयोग और भागीदारी की हम बहुत सराहना करते हैं। दुर्गा पूजा पर और हमेशा आप पर ईश्वर की कृपा बनी रहे।

भवदीय
उत्तम नगर कालीबाड़ी,
मलय डे (अध्यक्ष) 7217666618

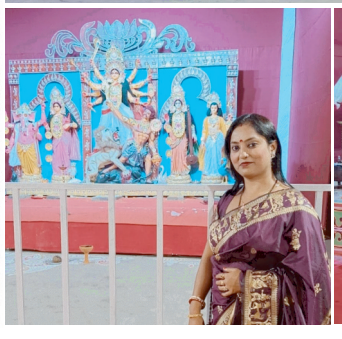

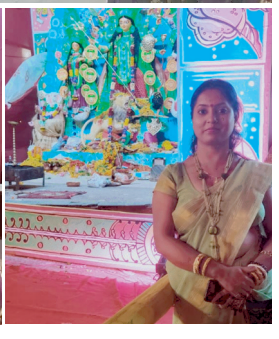

जयंत डे (सचिव) 9654385888
पिंकी कुंडू (सदस्य)

पूजा कार्यक्रम-2025

27 सितंबर 2025, (शनिवार). बोधन
28 सितंबर 2025, (रविवार) षष्ठी आमंत्रण और अधिबास
29 सितंबर 2025, (सोमवार) सप्तमी पूजा
30 सितंबर 2025, (मंगलवार) अष्टमी और संधि पूजा
1 अक्टूबर 2025, (बुधवार) नवमी पूजा
2 अक्टूबर 2025, (गुरुवार) दशमी पूजा और विसर्जन
पुष्पांजलि 11.00 बजे से 1:00 बजे तक,
प्रसाद वितरण 1.00 बजे से 1:30 बजे तक,
भोग वितरण 1.30 बजे से 3.00 बजे तक।
संध्या आरती- 7.00 बजे
श्री श्री काली पूजा सोमवार, 20 अक्टूबर, 2025

कार्यक्रम का स्थानः
कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

You're Invited!

Anandomela Food Fiesta 2025

Celebrate the spirit of Durga Puja with food, fun, and festivity!

Join us at our much-awaited Anandomela Food Fiesta, where the aroma of tradition meets the joy of celebration! Bring your favorite homemade delicacies, share your culinary skills, and enjoy a vibrant evening with your community.

Date: 28.09.2025
Venue: KALI BARI (uttam nagar)
Time: 7.00PM

Whether you're a seasoned cook or just love feeding people, we welcome your participation with open arms!

For stall bookings and participation details,
Please contact:
Mrs.Pinki Kundu- 7053533169
Mrs.Tithi Ghosh- 9013088489

Let's make this Durga Puja even more delicious and memorable!

Regards
Jayant Dey
General Secretary

श्री जगन्नाथ पुरी की चंदन यात्रा

जानिए भगवान जगन्नाथ की विशेष यात्रा के बारे में:

1 क्या है चंदन यात्रा ?

चंदन यात्रा ओडिशा के पुरी में श्री जगन्नाथ जी की एक पवित्र परंपरा है, जिसमें भगवान को चंदन लेप कर ठंडक दी जाती है। यह यात्रा अक्षय तृतीया से शुरू होकर 42 दिनों तक चलती है।

2 क्यों मनाई जाती है ?

गर्मियों में भगवान को शीतलता देने के लिए यह परंपरा शुरू हुई। इसे भगवान को रसेवाश और "भक्ति" का प्रतीक माना जाता है।

3 कैसे मनाई जाती है ?

भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के प्रतिरूपों को नौका विहार के लिए नरेंद्र सरोवर ले जाया जाता है, जहाँ वे सुंदर नौकाओं पर सवारी करते हैं।

4 मुख्य आकर्षण

- चंदन लेप की प्रक्रिया
- भव्य शोभायात्रा
- नौका विहार

भक्तों की भीड़ और भक्ति गीत

5 धार्मिक महत्व

यह यात्रा रथ यात्रा की तैयारी की शुरुआत मानी जाती है। अक्षय तृतीया से यह पर्व शुरू होकर भगवान के बाहर निकलने तक चलता है।

6 भक्ति का भाव

यह पर्व हमें सिखाता है कि ईश्वर की सेवा में शुद्ध मन, श्रम और प्रेम से किया गया हर कार्य उन्हें प्रसन्न करता है।

जय जगन्नाथ! हरि बोल!

माँ दुर्गा से जुडे रहस्य

हिन्दू धर्म में मां दुर्गा का अपना एक खास महत्व है। नवरात्रि आते ही हर जगह मां के मंदिर सज जाते हैं और भक्त कतारों में खड़े होकर माता के दर्शन की प्रतीक्षा करते हैं। मां दुर्गा को पहाड़ावाली, शेरावाली, जगदम्बा, मां अम्बे, आदि नामों से भी जाना जाता है। माता के मंदिर पूरे भारत में बने हुए हैं। अगर आप मंदिरों की संख्या गिनने लगेंगे तो थक जायेंगे।

सरस्वती, लक्ष्मी, और पार्वती माता का ही रूप हैं और त्रिदेव की पत्नियां भी हैं। माता के बारे में हमारे पुराणों और शास्त्रों में बहुत सी कथायें हैं। देवी पूरण में देवी के रहस्यों का खुलासा होता है।

आज हम आपको माता के बारे में कुछ ऐसी बातें बताने जा रहे हैं, जो उनके हर भक्त को जाननी चाहिए। हालांकि हम आपको पूरी बात तो नहीं लेकिन जरूरत की लगभग सभी बातें बता सकते हैं।

आखिर कौन है माता रानी ????

अम्बिका: अकेले रहकर हर तरफ घूमने वाले सदाशिव ने अपने शरीर से शक्ति की रचना की, जो उनसे कभी भी अलग होने वाली नहीं थी। भगवान शिव की उस शक्ति को विकार रहित अविनाशी, बुद्धि तत्व बताया गया। उसी शक्ति को अम्बिका के नाम से जाना जाता है। इनकी 8 भुजाएं हैं और ये अनेक शस्त्र धारण करती हैं। यह कालरूप सदाशिव की पत्नी हैं इन्हें जगदम्बा के नाम से भी जाना जाता है।

देवी दुर्गा: हिरण्याक्ष के बारे में तो आप जानते ही हैं। यह अत्यंत क्रूर राक्षस था। इसके प्रकोप से धरती वासी ही नहीं स्वर्ग के देवता भी परेशान हो चुके थे। इसलिए उन्होंने मां अम्बिका की आराधना की। उन्होंने हिरण्याक्ष को उसकी सेना सहित नष्ट कर दिया, तब से उन्हें दुर्गा के नाम से भी जाना जाने लगा।

माता सती: राजा दक्ष की पुत्री सती से भगवन शंकर की शादी हुई थी। एक बार एक यज्ञ में भगवन शंकर को ना बुलाये जाने पर सती क्रोधित हो गयीं और यज्ञ कुंड में कूदकर अपने प्राणों की आहुति दे दीं। इसके बाद उनके शरीर के अंग जहां-जहां गिरे, वहां शक्तिपीठों का निर्माण हो गया। बाद में सती ने हिमालयराज के यहां पार्वती के रूप में जन्म लिया और घोर तपस्या करके शिव को पति के रूप में पा लिया।

पार्वती: सती के दूसरे रूप को पार्वती के नाम से जाना जाता है। माता पार्वती को भी दुर्गा का स्वरूप माना जाता है, लेकिन वह दुर्गा नहीं हैं। इनके दो पुत्र गणेश और कार्तिकेय हैं।

कैटभा: हिरण्याक्ष की तरफ से युद्ध करने वाले मधु और कैटभ नाम के दो भाइयों का वध करने के बाद माता को इस नाम से भी पुकारा जाने लगा।

काली: भगवान शंकर की तीन पत्नियां थी। उमा उनकी तीसरी पत्नी थीं। उत्तराखंड में देवी उमा का एकमात्र मंदिर है। भगवान शंकर की चौथी पत्नी के रूप में मां काली की पूजा की जाती है। इन्होने इस धरती को भयानक राक्षसों के आतंक से मुक्त किया। काली भी देवी अम्बा की पुत्री थीं। इन्होने ही रक्तबीज नाम के भयानक दानव का वध किया था।

महिषासुर मर्दिनी ऋषि कात्यायन की पुत्री ने ही राम्भासुर के पुत्र महिषासुर का वध किया था, इसके बाद ही उन्हें महिषासुर मर्दिनी के नाम से जाना जाने लगा। एक अन्य कहानी के अनुसार महिषासुर के आतंक से त्रस्त सभी देवताओं ने मिलकर अपने शरीर से एक ज्योति निकाली जो एक सुन्दर कन्या के रूप में प्रकट हुई। सभी ने अपने अस्त्र-शस्त्र दिए इसके बाद ही महिषासुर का वध माता ने किया।

तुलजा भवानी और चामुंडा माता: चंड और मुंड दो भाइयों का वध करने के बाद माता अम्बिका को ही चामुंडा के नाम से जाना जाने लगा। महिषासुर मर्दिनी को ही कई जगहों पर तुलजा भवानी के नाम से जाना जाता है। तुलजा भवानी और चामुंडा की पूजा खासतौर पर महाराष्ट्र में ज्यादा की जाती है।

दश महाविद्यायें: इनमें से कुछ देवी अम्बा के रूप हैं तो कुछ देवी सती या मां पार्वती या राजा दक्ष की अन्य पुत्रियां हैं। इनके नाम निम्नलिखित हैं-

1.काली, 2.तारा, 3.त्रिपुरसुंदरी, 4.भुवनेश्वरी, 5.छिन्नमस्ता, 6.त्रिपुरभैरवी, 7.धूमावती, 8.बगलामुखी, 9.मातंगी और 10.कमला।

वाहन सिंह या शेर क्यों ?????

एक कथा के अनुसार माता पार्वती भगवान शिव को पाने के लिए हजारों सालों तक तपस्या करती रहीं, इस वजह से वह काली हो गयीं। शादी हो जाने के बाद एक बार भगवान शंकर ने मजाक में उन्हें काली कह दिया तो माता पार्वती पुनः कैलाश से वापस आकर तपस्या करने लगी।

एक दिन एक भूखा शेर उनके पास से गुजरा और उन्हें खाने के बारे में सोचने लगा। लेकिन उसने इंतजार करना उचित समझा। देवी की तपस्या पूरी होने पर उन्हें गोरा होने का वरदान मिला। तब से उन्हें गौरी के नाम से भी जाना जाने लगा। सिंह भी माता के साथ-साथ कई सालों तक तपस्या करता रहा, इससे माता ने प्रसन्न होकर उसे अपना वाहन बना लिया। ज्यादातर देवियों के वाहन सिंह ही हैं।

2 वर्ष से 10 वर्ष तक के बीच की उम्र की कुमारी कन्याओं का नवरात्र में पूजन करना चाहिए

दो वर्ष की कुमारी कन्या की पूजा करने से दुःख तथा दरिद्रता का नाश होता है। शत्रुओं का क्षय तथा धन, आयु और बल की वृद्धि होती है।

तीन वर्ष की कन्या त्रिमूर्ति कहलाती है। इसकी पूजा करने से धर्म, अर्थ, काम की पूर्ति होती है। धन-धान्य का आगम होता है और पुत्र - पौत्र आदि की वृद्धि होती है।

चार वर्ष की कुमारी कन्या कल्याणी कहलाती है। इसकी पूजा करने से विद्या, विजय, राज्य तथा सुख की कामना प्राप्त होती है।

पाँच वर्ष की कन्या रोहिणी कहलाती है। इसके पूजन करने से रोगों का नाश होता है।

छह वर्ष की कन्या कालिका कहलाती है। इसका पूजन करने से शत्रुओं का नाश होता है।

सात वर्ष की कन्या चण्डिका कहलाती है। इसका पूजन करने से धन तथा ऐश्वर्य की अभिलाषा पूर्ण होती है।

आठ वर्ष की कन्या शाम्भवी कहलाती है। इसकी पूजा करने से सम्मोहन, दुःख - दारिद्र्य का

नाश तथा संग्राम में विजय प्राप्त होती है।

नौ वर्ष की कन्या दुर्गा कहलाती है। इसका पूजन करने से क्रूर शत्रुओं का विनाश, उग्र कर्म की साधना के निमित्त और परलोक में सुख प्राप्त होता है।

दस वर्ष की कन्या सुभद्रा कहलाती है। इसका पूजन करने से मानव को समस्त मनोरथ की सिद्धि प्राप्त होती है।

समस्त कन्याओं का श्रीरस्तु इस मन्त्र से अथवा किन्हीं भी श्रीयुक्त देवी मन्त्र से अथवा बीज मन्त्र से भक्ति पूर्वक भगवती की पूजा करनी चाहिए।

नित्य एक ही कुमारी का पूजन करें अथवा प्रतिदिन एक-एक कुमारी की संख्या में वृद्धि क्रम से पूजन करें अथवा प्रतिदिन दुगने - तिगुने वृद्धि क्रम से और या तो प्रत्येक दिन नौ कुमारी कन्याओं का पूजन करें।

अष्टमी तिथि को विशेष रूप से कुमारी कन्याओं का पूजन करना चाहिए।

दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करने वाली महा भयानक भगवती भद्रकाली करोड़ों योगिनियों सहित अष्टमी तिथि को ही प्रकट हुई थीं।

उपांग ललिता व्रत आज

ललिता व्रत, जिसे ललिता पंचमी के नाम से भी जाना जाता है, हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण त्योहार है। यह व्रत हर साल शारदीय नवरात्रि के पांचवें दिन, यानी आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। देवी ललिता को त्रिपुर सुंदरी, षोडशी और राजेश्वरी नामों से भी जाना जाता है। इन्हें सौंदर्य, शक्ति और सौभाग्य की देवी माना जाता है। यह व्रत मुख्यतः गुजरात और महाराष्ट्र में प्रचलित है। इस दिन भक्त उपवास रखकर देवी की पूजा करते हैं। वर्ष 2025 में उपांग ललिता व्रत शुक्रवार, 26 सितंबर को मनाया जाएगा।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवी ललिता, कामदेव के शरीर की राख से उत्पन्न राक्षस भण्ड का वध करने के लिए प्र क्ट हुई थीं इस दिन उनकी पूजा करने से भक्तों के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। यह व्रत नवविवाहित महिलाओं के लिए और उनके परिवार की सुख-शांति के लिए विशेष लाभकारी

माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस व्रत को करने से ज्ञान, सौभाग्य, दीर्घायु और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

शुभ मुहूर्त

==========

पंचमी तिथि आरंभ 26 सितंबर 2025, सुबह 09:33 बजे से शुरू होगी वहीं पंचमी तिथि समाप्त 27 सितंबर 2025, दोपहर 12:03 बजे है। अभिजीत मुहूर्त11:48 बजे से दोपहर 12:36 बजे तक है।

परंपरा और पूजा विधि

==========

स्नान और संकल्पः उपांग ललिता व्रत के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें। इसके बाद देवी ललिता की पूजा और व्रत का संकल्प लें।

स्थापनाः पूजा स्थल पर एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर देवी ललिता की प्रतिमा या मूर्ति स्थापित करें।

पूजाः देवी को लाल रंग के फूल, लाल वस्त्र, रोली, कुमकुम, अक्षत और अन्य पूजा सामग्री अर्पित करें।

पाठ और जापः इस दिन 'ललिता सहस्त्रनाम' और 'ललिता त्रिशती' का पाठ करना बहुत शुभ माना जाता है। साथ ही 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः' मंत्र का जाप करने से आर्थिक समस्याएं दूर होती हैं।

नवदुर्गा अर्थात दिव्य नौ औषधियाँ...

माँ जगदम्बा दुर्गा के नौ रूप मनुष्य को शांति, सुख, वैभव, निरोगी काया एवं भौतिक आर्थिक इच्छाओं को पूर्ण करने वाले हैं। माँ अपने बच्चों को हर प्रकार का सुख प्रदान कर अपने आशीष की छाया में बैठाती है।

.नवदुर्गा के नौ रूप औषधियों के रूप में भी कार्य करते हैं। यह नवरात्रि इसीलिए सेहत नवरात्रि के रूप में भी जानी जाती है। सर्वप्रथम इस पद्धति को मार्कण्डेय चिकित्सा पद्धति के रूप में दर्शाया परंतु गुप्त ही रहा। भक्तों की जिज्ञासा की संतुष्टि करते हुए नौ दुर्गा के औषधि रूप दे रहे हैं। इस चिकित्सा प्रणाली के रहस्य को ब्रह्माजी ने अपने उपदेश में दुर्गाकवच कहा है। नौ प्रमुख दुर्गा का विवेचन किया है। ये नवदुर्गा वास्तव में दिव्य गुणों वाली नौ औषधियाँ हैं।

.प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी,

तृतीयं चंद्रघण्टेति कुष्माण्डेती चतुर्थकम।।

पंचम स्कन्दमातेति षष्ठम कात्यायनीति च।

सप्तमं कालरात्रीति महागौरति चाष्टम।।

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिता।

.ये औषधियाँ प्राणियों के समस्त रोगों को हरने वाली और रोगों से बचाए रखने के लिए कवच का काम करने वाली है। ये समस्त प्राणियों की पाँचों ज्ञानेंद्रियों व पाँचों कर्मेंद्रियों पर प्रभावशील है। इनके प्रयोग से मनुष्य अकाल मृत्यु से बचकर सौ वर्ष की आयु भोगता है।

ये आराधना मनुष्य विशेषकर नौरात्रि, चैत्रीय एवं अगहन (क्वार) में करता है। इस समस्त देवियों को रक्त में विकार पैदा करने वाले सभी रोगाणुओं को काल कहा जाता है।

भय दूर करती है शैलपुत्री

प्रथम शैलपुत्री (हरड़)- प्रथम रूप शैलपुत्री माना गया है। इस भगवती देवी शैलपुत्री को हिमावती हरड़ कहते हैं। यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है जो सात प्रकार की होती है।

हरीतिका (हरी) जो भय को हरने वाली है।

पथया - जो हित करने वाली है।

कायस्थ - जो शरीर को बनाए रखने वाली है।

अमृता - अमृत के समान

हेमवती - हिमालय पर होने वाली।

चेतकी - जो चित्त को प्रसन्न करने वाली है।

श्रेयसी (यशदाता) शिवा - कल्याण करने वाली।

स्मरण शक्ति को बढ़ाती है ब्रह्मचारिणी : द्वितीय ब्रह्मचारिणी (ब्राह्मी) - दुर्गा का दूसरा रूप ब्रह्मचारिणी को ब्राह्मी कहा है। ब्राह्मी आयु को बढ़ाने वाली स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली, रूधिर विकारों को नाश करने के साथ-साथ स्वर को मधुर करने वाली है। ब्राह्मी को सरस्वती भी कहा जाता है।

क्योंकि यह मन एवं मस्तिष्क में शक्ति प्रदान करती है। यह वायु विकार और मूत्र संबंधी रोगों की प्रमुख दवा है। यह मूत्र द्वारा रक्त विकारों को बाहर निकालने में समर्थ औषधि है। अतः इन रोगों से पीड़ित व्यक्ति ने ब्रह्मचारिणी की आराधना करना चाहिए।

हृदय रोग ठीक करती है देवी चंद्रिका .....

तृतीय चंद्रघंटा (चन्दुसूर) - दुर्गा का तीसरा रूप है चंद्रघंटा, इसे चनदुसूर या चमसूर कहा गया है। यह एक ऐसा पौधा है जो धनिये के समान है। (इस पौधे की पत्तियों की सब्जी बनाई जाती है। ये कल्याणकारी है। इस औषधि से मोटापा दूर होता है। इसलिए इसको चर्महन्ती भी कहते हैं। शक्ति को बढ़ाने वाली, खत को शुद्ध करने वाली एवं हृदय रोग को ठीक करने वाली चंद्रिका औषधि है।अतः इस बीमारी से संबंधित रोगी ने चंद्रघंटा की पूजा करना चाहिए।

रक्त विकार को ठीक करती हैं कुष्माण्डा .....

चतुर्थ कुष्माण्डा (पेठा) - दुर्गा का चौथा रूप कुष्माण्डा है। ये औषधि से पेठा मिठाई बनती है। इसलिए इस रूप को पेठा कहते हैं। इसे कुम्हडा भी कहते हैं। यह कुम्हड़ा पुष्टिकारक वीर्य को बल देने वाला (वीर्यवर्धक) व रक्त के विकार को ठीक करता है एवं पेट को साफ करता है। मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति के लिए यह अमृत है। यह शरीर के समस्त दोषों को दूर कर हृदय रोग को ठीक करता है। कुम्हड़ा रक्त पित्त एवं गैस को दूर करता है। यह दो प्रकार की होती है। इन बीमारी से पीड़ित व्यक्ति ने पेठा का उपयोग के साथ कुष्माण्डा देवी की आराधना करना चाहिए।

कफ रोगों का नाश करती हैं स्कंदमाता .....

पंचम स्कंदमाता (अलसी) - दुर्गा का पाँचवा रूप स्कंद माता है। इसे पार्वती एवं उमा भी कहते हैं। यह औषधि के रूप में अलसी के रूप में जानी जाती है। यह वात, पित्त, कफ, रोगों की नाशक औषधि है।

अलसी नीलपुष्पी पावर्तती स्यादुमा क्षुमा।अलसी मधुरा तिक्ता स्त्रिग्धापाके कदुर्गरुः।।उष्णा दृष शुकवातन्धी कफ पित्त विनाशिनी।

इस रोग से पीड़ित व्यक्ति ने स्कंदमाता की आराधना करना चाहिए।

कैंसर रोग का शमन करती हैं कात्यायनी .....

षष्ठम कात्यायनी (मोइया) - दुर्गा का छठा रूप कात्यायनी है। इस आयुर्वेद औषधि में कई नामों से जाना जाता है। जैसे अम्बा, अम्बालिका, अम्बिका इसको मोइया अर्थात माचिका भी कहते हैं। यह कफ, पित्त, अधिक विकार एवं कैंसर के रोग का नाश करती है। इससे पीड़ित रोगी ने कात्यायनी की माचिका प्रस्थिकाम्बष। तथा अम्बा, अम्बालिका, अम्बिका, खताविसार पित्तास्त्र कफ कण्डामयापहस्य।

.मस्तिष्क विकारों को हरती हैं कालरात्रि .....

.सप्तम कालरात्रि (नागदौन) - दुर्गा का सप्तम रूप कालरात्रि है जिसे महायोगिनी, महायोगीश्वरी कहा गया है। यह नागदौन औषधि के रूप में जानी जाती है। सभी प्रकार के रोगों की नाशक सर्वत्र विजय दिलाने वाली मन एवं मस्तिष्क के समस्त विकारों को दूर करने वाली औषधि है।

इस पौधे को व्यक्ति अपने घर में लगा ले तो घर के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। यह सुख देने वाली एवं सभी विषों की नाशक औषधि है। इस कालरात्रि की आराधना प्रत्येक पीड़ित व्यक्ति को करना चाहिए।

रक्त शोधक होती हैं महागौरी .....

अष्टम महागौरी (तुलसी) - दुर्गा का अष्टम रूप महागौरी है। जिसे प्रत्येक व्यक्ति औषधि के रूप में जानता है क्योंकि इसका औषधि नाम तुलसी है जो प्रत्येक घर में लगाई जाती है। तुलसी सात प्रकार की होती है। सफेद तुलसी, काली तुलसी, मरुता, दवना, कुढेरक, अर्जक, षटपत्र। ये सभी प्रकार की तुलसी रक्त को साफ करती है। रक्त शोधक है एवं हृदय रोग का नाश करती है।

तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमंजरी।

अपेतराक्षसी महागौरी शूलघ्नी देवदुन्दुभिः तुलसी कटुका तिक्ता हुध उष्णाहाहपित्तकृत।

मरुदनिप्रदो हध तीक्षणाष्णः पित्तलो लघुः।

इस देवी की आराधना हर सामान्य एवं रोगी व्यक्ति को करना चाहिए।

बलबुद्धि बढ़ाती हैं सिद्धिदात्री .....

नवम सिद्धिदात्री (शतावरी) - दुर्गा का नवम रूप सिद्धिदात्री है। जिसे नारायणी या शतावरी कहते हैं। शतावरी बुद्धि बल एवं वीर्य के लिए उत्तम औषधि है। रक्त विकार एवं वात पित्त शोध नाशक है। हृदय को बल देने वाली महाऔषधि है। सिद्धिदात्री का जो मनुष्य नियमपूर्वक सेवन करता है। उसके सभी कष्ट स्वयं ही दूर हो जाते हैं। इससे पीड़ित व्यक्ति को सिद्धिदात्री देवी की आराधना करना चाहिए।

इस प्रकार प्रत्येक देवी आयुर्वेद की भाषा में मार्कण्डेय पुराण के अनुसार नौ औषधि के रूप में मनुष्य की प्रत्येक बीमारी को ठीक कर रक्त का संचालन उचित एवं साफ कर मनुष्य को स्वस्थ करती है। अतः मनुष्य को इनकी आराधना एवं सेवन करना चाहिए।

।। भक्तप्रवर प्रह्लाद और ध्रुव ।।

विश्व के भक्तों में भक्तप्रवर श्रीप्रह्लाद और ध्रुव की भक्ति, प्रेम, सहिष्णुता अत्यन्त ही अलौकिक थी। दोनों प्रातःस्मरणीय भक्त श्रीभगवान्‌के विलक्षण प्रेमी थे। प्रह्लादजी के निष्काम भाव की महिमा कही नहीं जा सकती। आरंभ से ही इनमें पूर्ण निष्काम भाव था। जब भगवान्‌ नृसिंहदेव ने इनसे वर मांगने को कहा तब इन्होंने जवाब दिया कि, 'नाथ! मैं क्या लेन देन करनेवाला व्यापारी हूं? मैं तो आपका सेवक हूं, सेवक का काम मांगना नहीं है और स्वामी का कुछ दे दिलाकर सेवक को टाल देना नहीं है।'

परन्तु जब भगवान्‌ने फिर आग्रह किया तो प्रह्लाद ने एक वरदान तो यह मांगा कि 'मेरे पिता ने आपसे द्वेष करके आपकी भक्ति में बाधा पहुंचाने के लिये मुझपर जो अत्याचार किये, हे प्रभो! आपकी कृपा से मेरे पिता उस दुष्कर्म से उत्पन्न हुए पाप से अभी छूट जायं।' 'स्वत्प्रसादात् प्रभो सद्यस्तेन मुच्यते मे पिता।' कितनी महानता है! दूसरा वरदान यह मांगा कि 'प्रभो! यदि आप मुझे वरदान देना ही चाहते हैं तो यह दीजिये कि मेरे मन में कभी कुछ मांगने की अभिलाषा ही न हो।'

कितनी अद्भुत निष्कामता और दृढ़ता है। पिता ने कितना कष्ट दिया, परन्तु प्रह्लादजी सब कष्ट सुखपूर्वक सहते रहे, पिता से कभी द्वेष नहीं किया, और अन्त में महान्‌ निष्कामी होने पर भी पिता का अपराध क्षमा करने के लिये भगवान्‌से प्रार्थना की!

भक्तवर ध्रुवजी में एक बात की और विशेषता है, उनमें अपनी सौतेली माता सुरुचिजी के लिये भगवान्‌से यह कहा कि 'नाथ! मेरी माता ने यदि मेरा तिरस्कार न किया होता तो आज आपके दुर्लभ दर्शन का अलभ्य लाभ मुझे कैसे मिलता? माता ने बड़ा ही उपकार किया है।' इस तरह दोष में उल्टा गुण का आरोप कर उन्होंने भगवान्‌से सौतेली माँ के लिये मुक्ति का वरदान मांगा। कितने महत्व की बात है!

पर इससे यह नहीं समझना चाहिये, कि भक्तवर प्रह्लादजी ने पिता में दोषारोपण कर भगवान्‌के सामने उसे अपराधी बतलाया, इससे उनका भाव नीचा है। ध्रुवजी की सौतेली माता ने ध्रुव से द्वेष किया था, उनके इष्टदेव भगवान्‌ से नहीं, परन्तु प्रह्लादजी के पिता हिरण्यकशिपु ने तो प्रह्लाद के इष्टदेव भगवान्‌ से द्वेष किया था। अपने प्रति किया हुआ दोष तो भक्त मानते ही नहीं, फिर माता-पिता द्वारा किया हुआ तिरस्कार तो उत्तम फल का कारण होता है। इसलिये ध्रुवजी का माता में गुण का आरोप करना उचित ही था। परन्तु प्रह्लादजी के तो इष्टदेव का तिरस्कार था। प्रह्लादजी ने अपने को कष्ट देनेवाला जानकर पिता को दोषी नहीं बतलाया, उन्होंने भगवान्‌ से उनका अपराध करने के लिये क्षमा मांगकर पिता का उद्धार चाहा।

बहुत सी बातों में एक से होने पर भी प्रह्लादजी में निष्काम भाव की विशेषता थी और ध्रुवजी में सौतेली माता के प्रति गुणारोप कर उसके लिये मुक्ति मांगने की! वास्तव में दोनों ही विलक्षण भक्त थे। भगवान्‌का दर्शन करने के लिये दोनों की ही प्रतिज्ञा अटल थी, दोनों ने उसको बड़ी ही दृढ़ता और तत्परता से पूरा किया। प्रह्लादजी ने घर में पिता के द्वारा दिये हुए कष्ट प्रसन्न मन से सहे, तो ध्रुवजी ने वन में अनेक कष्टों को सानन्द सहन किया। नियमों से कोई किसी प्रकार भी नहीं हटे, अपने सिद्धान्त पर दृढ़ता से डटे रहे, कोई भी भय या प्रलोभन उन्हें तनिक सा भी नहीं झुका सका।

वास्तव में दोनों ही परम आदर्श और वन्दनीय हैं, हमें दोनों ही के जीवन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

मनुष्य को किस किस अवस्थाओं में भगवान विष्णु को किस किस नाम से स्मरण करना चाहिए

भगवान विष्णु के 16 नामों का एक छोटा श्लोक प्रस्तुत है।

औषधे चिंतयते विष्णुं, भोजन च जनार्दनम।
शयने पद्मनाभं च विवाहे च प्रजापतिं ॥
युद्धे चक्रधरं देवं प्रवासे च त्रिविक्रमं।
नारायणं तनु त्यागे श्रीधरं प्रिय संगमे ॥
दुःस्वप्ने स्मर गोविन्दं संकटे मधुसूदनम।
कानने नारसिंहं च पावके जलशायिनाम ॥
जल मध्ये वराहं च पर्वते रघुनन्दनम।
गमने वामनं चैव सर्व कार्येषु माधवम ॥
षोडश एतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत।

सर्व पाप विनिर्मुक्ते, विष्णुलोके महियते ॥

(1) औषधि लेते समय विष्णु
(2) भोजन के समय - जनार्दन
(3) शयन करते समय - पद्मनाभ
(4) विवाह के समय - प्रजापति
(5) युद्ध के समय चक्रधर
(6) यात्रा के समय त्रिविक्रम
(7) शरीर त्यागते समय - नारायण
(8) पत्नी के साथ - श्रीधर
(9) नींद में बुरे स्वप्न आते समय - गोविंद
(10) संकट के समय - मधुसूदन
(11) जंगल में संकट के समय - नृसिंह
(12) अग्नि के संकट के समय जलाशयी
(13) जल में संकट के समय - वाराह
(14) पहाड़ पर संकट के समय - रघुनंदन
(15) गमन करते समय वामन
(16) अन्य सभी शेष कार्य करते समय - माधव

ॐ विष्णवै नमः

किस अवस्था में विष्णु को किस किस नाम से स्मरण करना चाहिए

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर, एनडीएमसी ने 'एक दिन - एक घंटा - साथ' स्वच्छता के लिए श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन किया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के अवसर पर, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद ने आज सुबह प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में, एनडीएमसी के 10,000 कर्मचारियों, विभिन्न सरकारी मंत्रालयों और विभागों द्वारा पूरे नई दिल्ली क्षेत्र की सफाई के लिए स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत ₹एक दिन - एक घंटा - साथ₹ श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन किया।

स्वच्छता के लिए इस श्रमदान कार्यक्रम में, एनडीएमसी अध्यक्ष - केशव चंद्रा, एनडीएमसी उपाध्यक्ष - कुलजीत सिंह चहल और परिषद सदस्य - सरिता तोमर ने कुशक नाला क्षेत्र और हनुमान मंदिर परिसर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में विशेष सफाई अभियान में भाग लिया।

इस अवसर पर, एनडीएमसी अध्यक्ष ने बताया कि जोनल नोडल अधिकारियों और तीन सब- नोडल अधिकारियों के नेतृत्व में 56 विशेष टीमों के तहत 14 स्वच्छता सर्कल क्षेत्र में श्रमदान अभियान में 10,000 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक और सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने कहा कि एनडीएमसी ने अभियान को और अधिक प्रभावी और परिणामोन्मुखी बनाने के लिए अपनी सभी आधुनिक मशीनरी जैसे मैकेनिकल रोड स्वीपर, प्रेसर जेटिंग मशीन, स्क्रबिंग मशीन आदि को भी तैनात किया।

चहल ने कहा कि ₹स्वच्छ भारत मिशन₹ का शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एनडीएमसी क्षेत्र के मंदिर मार्ग से किया था और आज उसी भावना को आगे बढ़ाते हुए, यह श्रमदान कार्यक्रम उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया। उन्होंने आगे कहा कि एनडीएमसी ने सुबह के समय नागरिकों के लिए स्वच्छ और धूल-मुक्त वातावरण सुनिश्चित करने हेतु रात्रिकालीन गीली सफाई और रात्रिकालीन स्वीपिंग जैसी पहलों को पहले ही लागू कर दिया है।

चहल ने इस बात पर ज़ोर दिया कि स्वच्छता एक दिन की बात नहीं होनी चाहिए; यह जीवन का एक अभिन्न अंग होना चाहिए। ₹एक दिन, एक घंटा, साथ₹ अभियान का उद्देश्य नागरिकों और कर्मचारियों में सामूहिक ज़िम्मेदारी की भावना को मज़बूत करना है। श्री चहल ने सभी कर्मचारियों, अधिकारियों और नागरिकों को बधाई दी और उनके योगदान की सराहना की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह श्रमदान कार्यक्रम स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और जन जागरूकता को एक नई दिशा प्रदान करेगा।

एनडीएमसी के श्रमदान कार्यक्रम में विभिन्न केंद्रीय सरकारी विभागों के कर्मचारियों ने भी भाग लिया, जैसे कि पंडित रविशंकर शुक्ल लेन पर आवास और शहरी मामलों का मंत्रालय, कर्तव्य पथ पर वाणिज्य मंत्रालय, बाराखंभा रोड के फायर ब्रिगेड लेन पर पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन और मंदिर मार्ग, नई दिल्ली पर राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) के कर्मचारियों ने श्रमदान किया।

डेंगू के रोकथाम हेतु सचेत रहने की आवश्यकता: सतीश गर्ग

– अहिल्या उद्धार , सीता स्वयंवर व लक्ष्मण– परशुराम संवाद की लीला का हुआ मंचन

उमेश कुमार

नई दिल्ली। आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस-2 में अहिल्या उद्धार ,सीता स्वयंवर व लक्ष्मण- परशुराम संवाद की लीला का मंचन निपुण कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। कंप्यूटरराइड यंत्रों , लेजर लाइट व एलईडी स्क्रीन के सहयोग से भव्य एवं खूबसूरत महल दिखाया गया। जहां सीता स्वयंवर कि लीला देख दर्शक भाव विभोर हो गए तो वही लक्ष्मण परशुराम संवाद कि लीला देख दर्शक रोमांचित हो उठे । रामलीला का उद्घाटन सासंद योगेन्द्र चंदोलिया व विधायक राजकुमार भाटिया के द्वारा किया गया। इस अवसर पर योगेंद्र चंदोलिया ने अपने संबोधन में कहा कि राम का आदर्श ही मानव चेतना का उत्कर्ष है, हमें उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। रामलीला के मुख्य सलाहकार व भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश के कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग ने डेंगू रोकथाम के लिए जागरूक किया। अध्यक्ष अशोक गर्ग व महामंत्री अनिल यादव ने पर्यावरण संरक्षण में सहयोग हेतु अपील की। कार्यक्रम में देवराज,चंदन शर्मा, नितिन बत्रा, संदीप गुप्ता, प्रदीप गोयल, संदीप गुप्ता, विजय बंसल, प्रवीण कुमार सिंह,राहुल गुप्ता, पंकज वासिया , मनीष मित्तल,रमेश अग्रवाल, आशीष मित्तल उपस्थित रहे।

चार दिन की सम्पूर्ण रामायण का शुभारंभ

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। सनातन प्रचार ट्रस्ट (रजि.) रामलीला मैदान, वेस्ट एन्क्लेव पीतम पुरा में अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों द्वारा सम्पूर्ण रामायण का शुभ आरम्भ शुरू हो गया है जो चार दिनों तक लगातार चलेगा1 कमेटी के महासचिव धीरज गोयल ने बताया है कि आज रामलीला की शुरुआत गणेश वंदना के साथ शुरू हुई, जिसके बाद कमेटी के लोगो ने आरती की है जिसके बाद कलाकारों ने सम्पूर्ण रामायण की शुरुआत की है ए आई से लेस इस सम्पूर्ण रामायण में हाई टेक्निक ग्राफीक का इस्तेमाल किया गया है जिसको देखने के लिए आज हज़ारो लोग पंडाल में पहुंचे है इससे पहले खाटू श्याम और हनुमंत लीला का बहुत सुन्दर नज़ारा भक्तों को देखने को मिला है इसके बाद हमारे यहाँ डांडिया का प्रोग्राम होगा

जो चार दिनों तक चलेगा जिसमे बॉलीवुड के सिंगर भाग लेंगे इस मोके पर कमेटी के दीपक कुमार, अशोक जिंदल, अभय गुप्ता महाजन, भीमसेन और दीपक अग्रवाल मोजूद रहे है रामलीला के पुरे रामलीला पंडाल को सीसीटीवी से कवर किया गया है।

"नवरात्रि, प्रसाद और पालन-पोषण: आस्था में विवेक का महत्व"

नवरात्रि में हलवा-पूरी जैसे पारंपरिक प्रसाद का महत्व है, लेकिन यह केवल इंसानों के लिए ही सुरक्षित है। गाय का पाचन तंत्र इंसानों से भिन्न होता है, इसलिए घी, चीनी और मैदे से बनी चीज़ें उन्हें हानिकारक हो सकती हैं। इस दौरान गायों को केवल हरी घास, भूसा, फल और चारा देना चाहिए। श्रद्धा और सुरक्षा एक साथ चल सकती है। नवरात्रि का उद्देश्य केवल भक्ति नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण आस्था और पशु संरक्षण भी है। संतुलन बनाए रखते हुए हम परंपरा और पशु कल्याण दोनों निभा सकते हैं।

– डॉ प्रियंका सौरभ

नवरात्रि, भारतीय संस्कृति और धार्मिक आस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व है। यह केवल नौ दिन का उत्सव नहीं है, बल्कि यह भक्ति, संयम, स्वास्थ्य और सामाजिक जिम्मेदारी का प्रतीक भी है। नवरात्रियों के दौरान भक्त अपने घरों और मंदिरों में देवी दुर्गा की पूजा करते हैं और भोजन तथा खान-पान पर विशेष ध्यान देते हैं। हलवा-पूरी, चने की दाल, फल और अन्य पारंपरिक व्यंजन इस अवसर पर श्रद्धालुओं के लिए विशेष महत्व रखते हैं। इन व्यंजनों का स्वादिष्ट और पवित्र होना उन्हें एक धार्मिक अनुष्ठान का हिस्सा बनाता है।

हालांकि, इस पवित्र परंपरा के बीच एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है: क्या नवरात्रियों में बनाए जाने वाले ये व्यंजन केवल मानव उपभोग के लिए ही सुरक्षित हैं, या इन्हें हमारे पवित्र मित्र, जैसे गाय, को भी दिया जा सकता है? यह प्रश्न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और पारिस्थितिक संतुलन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

नवरात्रियों में हलवा-पूरी का प्रसाद मुख्य रूप से गेहूं के आटे, घी और चीनी से तैयार किया जाता है। इसके स्वाद और सुगंध से भक्त आनंदित होते हैं और इसे देवी की भक्ति का प्रतीक मानते हैं। हलवा-पूरी का आनंद लेना न केवल उत्सव का हिस्सा है, बल्कि यह पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को भी मजबूत करता है। हालांकि, इसके स्वास्थ्य पहलू पर ध्यान देना भी उतना ही जरूरी है।

इंसानों के लिए हलवा-पूरी सीमित मात्रा में ऊर्जा और संतोष प्रदान करती है। परंतु, अत्यधिक मात्रा में इसे खाना पाचन समस्याएँ, वजन बढ़ना और अन्य स्वास्थ्य जोखिम पैदा कर सकता है। नवरात्रियों के दौरान लोग अक्सर फल, हल्का सत्त्विक भोजन और दूध जैसी चीज़ों का सेवन करते हैं, ताकि शरीर और मन दोनों को शुद्ध किया जा सके। इसलिए, हलवा-पूरी का सेवन संयमित और सोच-समझकर होना चाहिए।

अब सवाल उठता है कि क्या गाय को भी हलवा-पूरी दी जा सकती है। हिंदू धर्म में गाय को अत्यंत पवित्र माना गया है। इसे माता का दर्जा प्राप्त है और धार्मिक ग्रंथों में उनकी सेवा और संरक्षण का विशेष महत्व बताया गया है। लेकिन, गायों का पाचन तंत्र इंसानों से भिन्न होता है। वे मुख्य रूप से हरी घास, चारा, भूसा और अनाज पर निर्भर करती हैं। घी, चीनी और मैदा जैसी भारी और मीठी चीज़ें उनके लिए हानिकारक हो सकती हैं। हलवा-पूरी में मौजूद अत्यधिक घी और चीनी उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इससे दस्त, अपच और अन्य जठरांत्र संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

यहाँ पर संतुलन की आवश्यकता स्पष्ट होती है। नवरात्रियों का उद्देश्य न केवल आस्था और भक्ति है, बल्कि पशुओं और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व बनाए रखना भी है। श्रद्धा और सुरक्षा एक साथ चल सकते हैं। गायों के स्वास्थ्य के लिए हलवा-पूरी देना सही नहीं है, और उन्हें प्राकृतिक चारा, हरी घास और फल देना सर्वोत्तम विकल्प है। धार्मिक दृष्टि से, श्रद्धा का वास्तविक अर्थ यही है कि हम अपनी आस्था का पालन करते हुए भी विवेक का उपयोग करें।

पारंपरिक दृष्टि से, नवरात्रियों में प्रसाद वितरण केवल मानव उपभोग तक सीमित होना चाहिए। ऐसा करने से धार्मिक आस्था का पालन होता है और पशुओं की सुरक्षा भी सुनिश्चित रहती है। कई मंदिर और धार्मिक स्थल इस संतुलन को बनाए रखते हुए अपने प्रसाद में केवल फल, हरी पत्तियाँ और सूखा अनाज देते हैं। इससे गायों को पोषण मिलता है और उनका स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है।

सांस्कृतिक दृष्टि से यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय परंपरा में गाय को माता का दर्जा दिया गया है। धार्मिक ग्रंथों और लोक कथाओं में उनका संरक्षण, सम्मान और सेवा विशेष रूप से उल्लेखित है। अगर हम नवरात्रियों में श्रद्धा और परंपरा का पालन करते हुए गायों के स्वास्थ्य की अनदेखी करते हैं, तो हम उनकी सुरक्षा और पालन-पोषण के सिद्धांतों के प्रति उत्तरदायी नहीं रह पाते। यह एक ऐसा मामला है जहाँ धर्म और विज्ञान का संतुलन आवश्यक है।

शिक्षा और जागरूकता इस संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। धार्मिक आयोजकों, मंदिरों और परिवारों को यह समझना आवश्यक है कि उनके द्वारा दिया जाने वाला प्रत्येक प्रसाद केवल इंसानों के लिए ही नहीं, बल्कि अगर पशु उसमें सम्मिलित हैं, तो उनके लिए भी सुरक्षित होना चाहिए। स्कूलों, सामाजिक संस्थाओं और धार्मिक संगठनों के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए, ताकि लोग समझ सकें कि हलवा-पूरी गायों के लिए सुरक्षित नहीं है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञ भी यह मानते हैं कि गायों को इंसानों के खान-पान से अलग रखना उनके दीर्घकालीन स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। घी, चीनी और तेल से बनी चीज़ें उनके जठरांत्र प्रणाली में समस्याएँ पैदा कर सकती हैं। इसलिए नवरात्रियों के दौरान पारंपरिक प्रसाद का आनंद केवल इंसानों के लिए ही लेना चाहिए। इससे धार्मिक आस्था भी बनी रहती है और पशुओं की सुरक्षा सुनिश्चित होती है। नवरात्रियों में हलवा-पूरी का महत्व केवल स्वाद या परंपरा तक सीमित नहीं है। यह भक्ति, सामूहिक उत्साह और परिवार के साथ समय बिताने का माध्यम भी है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि श्रद्धा का अर्थ केवल परंपरा निभाना नहीं है, बल्कि इसमें विवेक और समझदारी भी शामिल होनी चाहिए। गायों और अन्य पालतू पशुओं के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए प्रसाद का वितरण किया जाना चाहिए।

अध्ययन और अनुभव बताते हैं कि धार्मिक आयोजनों में पशुओं की अनदेखी करने से न केवल उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है, बल्कि समाज में जागरूकता की कमी भी उजागर होती है। इसलिए, नवरात्रियों में पशु सुरक्षा और मानव स्वास्थ्य दोनों को प्राथमिकता देना आवश्यक है। इससे हमारी धार्मिक आस्था और सामाजिक जिम्मेदारी दोनों पूरी होती हैं।

इस परंपरा के माध्यम से हम बच्चों को भी एक महत्वपूर्ण शिक्षा दे सकते हैं। उन्हें यह सिखाया जा सकता है कि धार्मिक पर्व केवल उत्सव और आनंद का माध्यम नहीं हैं, बल्कि इसमें विवेक, जिम्मेदारी और सह-अस्तित्व का भी संदेश छिपा है। बच्चे जब यह सीखते हैं कि हलवा-पूरी केवल इंसानों के लिए है और गायों को प्राकृतिक चारा दिया जाता है, तो वे अपने जीवन में भी संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनते हैं।

नवरात्रियों का संदेश यही है कि आस्था, संयम और विवेक को एक साथ अपनाया जाए। पारंपरिक व्यंजनों और प्रसाद का आनंद लेते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारे चार-पाँव वाले मित्रों की सुरक्षा और स्वास्थ्य सर्वोपरि है। अगर हम यह संतुलन बनाए रखते हैं, तो नवरात्रियों का उत्सव और भी अर्थपूर्ण और सुखदायक बन जाता है।

अंत में, यह याद रखना चाहिए कि नवरात्रियों का वास्तविक उद्देश्य केवल खाने-पीने और उत्सव का आनंद नहीं है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि श्रद्धा और विवेक साथ-साथ चल सकते हैं। इंसान और पशु दोनों के स्वास्थ्य का ध्यान रखना हमारी धार्मिक और सामाजिक जिम्मेदारी है। इसलिए, नवरात्रियों में हलवा-पूरी का सेवन संयमित रूप से इंसानों के लिए किया जाए और गायों को केवल प्राकृतिक चारा दिया जाए। यही सही और संतुलित दृष्टिकोण है, जो आस्था, संस्कृति और सुरक्षा का समन्वय स्थापित करता है।

मानसिक स्वास्थ्य और अपने जुनून को जीना : डॉ. अंकुर शरण

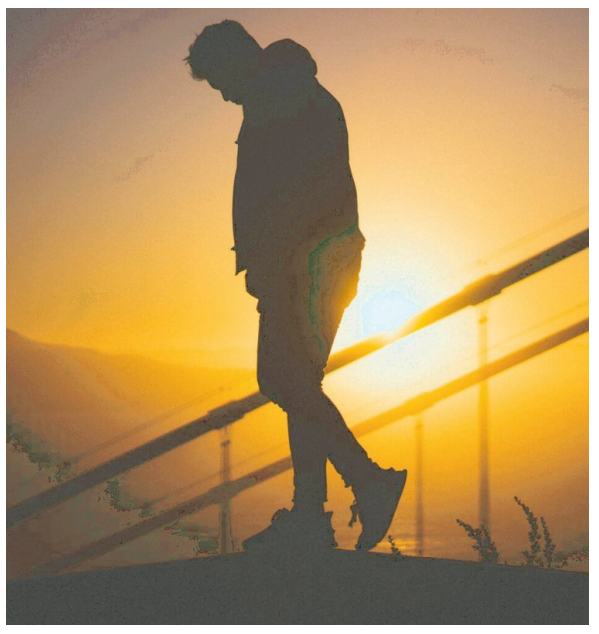

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health) सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभर रहा है। युवाओं में तनाव, चिंता और असंतुलन की स्थिति इसलिए भी बढ़ रही है क्योंकि वे अपना ज़्यादातर समय मोबाइल, लैपटॉप और ऑनलाइन माध्यमों पर बिता रहे हैं। यह डिजिटल दुनिया हमें जानकारी तो देती है, लेकिन अगर हम केवल इसी पर निर्भर रहें तो यह हमारे मन और शरीर दोनों को थका देती है।

सच्चाई यह है कि हमें बाहर की दुनिया से ज़्यादा, अपने भीतर झाँकने की ज़रूरत है। मानसिक स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए आराम, आत्मचिंतन और अपने जुनून (Passion) को जीना बहुत ज़रूरी है। जब हम अपने पसंदीदा काम—जैसे संगीत, लेखन, खेल, योग या किसी भी रचनात्मक गतिविधि—में समय लगाते हैं, तो हमारा मन शांत होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है।

मैं, डॉ. अंकुर शरण, युवाओं को लगातार यह संदेश दे रहा हूँ कि—

👉 सिर्फ़ गैजेट्स पर समय बिताना समाधान नहीं है।

👉 असली समाधान है खुद पर काम करना, आत्मअनुशासन और आत्मविश्वास को मज़बूत करना।

👉 अगर मन को थकान से बचाना है, तो आराम करना सीखिए और अपने जुनून की राह पकड़िए।

इसी सोच को आगे बढ़ाने के लिए मैंने युवाओं के साथ एक स्वस्थ अभियान (Healthy Campaign) शुरू किया है, जहाँ उन्हें मानसिक स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूक किया जाता है। इस अभियान का उद्देश्य है कि युवा केवल ऑनलाइन माध्यमों में उलझकर न रह जाएँ, बल्कि अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्यों को पहचानें और उन्हें हासिल करने की दिशा में कदम बढ़ाएँ।

आज का समय हमें यही सीख देता है कि अब और इंतज़ार मत कीजिए—आराम कीजिए, अपने आप पर काम करना शुरू कीजिए और अपने जुनून को जीना शुरू कीजिए।

आईटीबीपी भर्ती पेपर लीक मामले में तीन निदेशकों सहित पांच लोग दिल्ली पुलिस अपराध शाखा द्वारा गिरफ्तार

स्वतंत्रत सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने आईटीबीपी भर्ती पेपर लीक मामले में परीक्षा संचालन एजेंसी आईआईपी के तीन निदेशकों सहित पाँच को गिरफ्तार किया है।

अपराध शाखा के उपायुक्त विक्रम सिंह ने बताया कि उनकी टीम ने भारतीय मनोमिति संस्थान (आईआईपी) के तीन निदेशकों अमिताव रॉय,जयदीप गोस्वामी, सुभेंदु कुमार पॉल,रोहित रॉय और धर्मेंद्र को आईटीबीपी कांस्टेबल परीक्षा लीक मामले में गिरफ्तार किया है, जिसकी वर्तमान में अपराध शाखा द्वारा जाँच की जा रही है।

उन्होंने बताया कि कुशल कुमार, कमांडेंट, भर्ती, आईटीबीपी, नई दिल्ली द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत के आधार पर कार्यवाही कि गई। शिकायत में उन्होंने आरोप लगाया कि एवरग्रीन प्लाजा, 117 बैरकपुर ट्रंक रोड, कोलकाता, पश्चिम बंगाल स्थित मेसर्स इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइकोमेट्री (आईआईपी) को निविदा प्रक्रिया के माध्यम से आईटीबीपी के विभिन्न पदों के लिए लिखित परीक्षा आयोजित करने का काम आउटसोर्स किया गया था।अनुबंध की शर्तों के अनुसार, फर्म प्रश्न पत्रों की तैयारी और मुद्रण, छिद्रित ओएमआर उत्तर पुस्तिकाओं की डिजाइनिंग और मुद्रण, लिखित परीक्षा का संचालन, ओएमआर शीट की स्कैनिंग, प्रश्न पत्रों और उत्तर पुस्तिकाओं की सुरक्षित पैकिंग और परिवहन, पूरी प्रक्रिया के दौरान उच्च स्तर की गोपनीयता बनाए रखने के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार थी। कांस्टेबल (ट्रेड्समैन) पद के लिए लिखित परीक्षा 10/01/2021 को सुबह 11:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक 13 शहरों के 81 केंद्रों पर 46,174 उम्मीदवारों के लिए आयोजित की गई थी।

हालांकि, परीक्षा शुरू होने से पहले, प्रश्नपत्र व्हाट्सएप के माध्यम से प्रसारित किया गया था और आईटीबीपी के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों को भी प्राप्त हुआ था। परीक्षा शुरू होने के बाद, प्रश्नपत्र के व्हाट्सएप संस्करण का वास्तविक प्रश्नपत्र से मिलान किया गया और यह पुष्टि हुई कि दोनों प्रश्नपत्र एक जैसे थे।आईटीबीपी की आंतरिक जाँच में पाया गया कि प्रश्नपत्र लीक हुआ था और परीक्षा शुरू होने से पहले ही अभ्यर्थियों के बीच व्यापक रूप से प्रसारित हो गया था। परिणामस्वरूप, उपर्युक्त मामला दर्ज किया गया। जाँच के दौरान आईटीबीपी और आरोपी कंपनी आईआईपी दोनों से जवाब माँगा गया और अनुबंधों व समझौता ज्ञापनों सहित संबंधित दस्तावेज़ ज़ब्त कर लिए गए। आईआईपी के कर्मचारियों से पूछताछ की गई। एक कर्मचारी ने बताया कि निदेशक अमिताव रॉय और उनके सहयोगी इस उल्लंघन के लिए ज़िम्मेदार थे और परीक्षा प्रक्रिया किसी अन्य कंपनी को आउटसोर्स कर दी गई थी।नोटिस जारी किए जाने के बावजूद, निदेशक जाँच में शामिल नहीं हुए। आरोपियों को पकड़ने के लिए एसीपी कैलाश चंद्र शर्मा,इंस्पेक्टर उमेश सती, एआई राहुल,हेड कांस्टेबल विकास और भूपेंद्र की एक समर्पित टीम गठित की गई। 19/09/2025 को जांच अधिकारी ने निदेशकों से मुलाकात की और पूछताछ की। आरोपियों ने जांच को गुमराह करने का प्रयास किया और सहयोग नहीं किया। गिरफ्तारी के पर्याप्त आधार पाए जाने और असहयोग के कारण, आगे के संबंधों को उजागर करने और निरंतर जांच के लिए तीनों निदेशकों को गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश किया गया, जिसने आगे की जांच के लिए पुलिस हिरासत प्रदान की। हिरासत में पूछताछ के दौरान, दोनों आरोपियों ने पूरे रैकेट में सलाहकार और प्रिंटर की भूमिका का खुलासा किया।इसके बाद, 24/09/25 और 25/09/25 की मध्यरात्रि को, रोहित राज (आईआईपी के सलाहकार) और धर्मेंद्र (प्रिंटर) को उनकी गिरफ्तारी के पर्याप्त आधार पाए जाने पर गिरफ्तार कर लिया गया। आगे कि जाँच अभी भी जारी है।

दर्दनाक घटना न हो फिर ...!

एक 'बच्चा' झाड़ियों में था पड़ा रहा,
चरवाहा अपने पशुओं को चरा रहा।
चरवाहा उस बच्चे को निहारता रहा,
दयालु ईश्वर देवदूत बन भेजता रहा।

माता-पिता निर्दयी एवं हैवान हो गए,
मुंह में भरे पत्थर व होठों पे लगे ग्लू!
रूह काँप गई हैं अब और क्या?कहूं,
15 दिन के नवजात का बहाया लहू।

भीलवाड़ा के मंडलगढ़ 'बिजोलिया',
बच गया बच्चा आँसूओं ने भिगोया।
'अस्पताल' में बच्चे की हालत स्थिर,
अब ऐसी दर्दनाक घटना न हो फिर।
(संदर्भ-15 दिन के नवजात से रूह कंपाने वाली हैवानियत)

संजय एम तराणेकर

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

गंजडुंडवारा कासगंज श्री जनकपुरी महोत्सव सत्र 2025 का दीप प्रज्वलन नगर के पूर्व चेयरमैन श्री संजीव महाजन जी के द्वारा किया गया। वहीं कार्यक्रम का उदघाटन प्रमुख समाजसेवी श्री मनजीत सिंह राठौड़ जी के द्वारा किया गया। साथ ही कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रामलीला कमेटी के अध्यक्ष श्री अजय गुप्ता जी एवं महामंत्री श्री पंकज सोलंकी जी भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर कमेटी के अध्यक्ष श्री अंकित भूषण जी एवं महामंत्री श्री स्कंद महाजन जी अंकित गुप्ता पत्रकार के द्वारा सभी सम्मानित अतिथियों, पत्रकार बन्धुओं का स्वागत किया गया। इस वर्ष जनकपुरी महोत्सव में पांच कन्याओं का सामूहिक विवाह सम्पन्न कराया गया। इस दौरान जनकपुरी महोत्सव के संरक्षक, मंत्री, उपाध्यक्ष आदि पदाधिकारी गण उपस्थित रहे। इस उत्सव में समस्त श्रद्धालुओं ने जमकर आनंद लिया।

24 महीने बाद जेल से छूट कानपुर आएंगे पूर्व सपा विधायक इरफान सोलंकी

सुनील बाजपेई

कानपुर। 24 महीने जेल में रहने के बाद आज गुरुवार को समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक इरफान सोलंकी को अब जमानत मिल गई है वह आज शुक्रवार को कानपुर आ सकते हैं।

यहां मिली जानकारी के मुताबिक गैंगस्टर एक्ट मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गुरुवार को इरफान, उनके भाई रिजवान समेत 4 लोगों को जमानत दी।

इस बीच हाईकोर्ट पहुंचीं विधायक पत्नी नसीम ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि पौने तीन साल से जारी संघर्ष का सफर आज पूरा हुआ।

इस बारे में अवगत कराते चलें कि इरफान 2 दिसंबर, 2022 से जेल में बंद हैं। अभी महराजगंज जेल में हैं। इरफान सोलंकी पर कुल 10 केस दर्ज हैं। यह वह आखिरी मामला था, जिसमें इरफान को जमानत नहीं मिली थी। इस मामले में 2 सितंबर को कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया था।

लगभग 2 साल बाद जमानत पर छूट समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक इरफान सोलंकी पर एक झोपड़ी जलाने का आरोप था। इसके बाद एक मुकदमा उनके खिलाफ फर्जी आधार कार्ड बनाने का हुआ था, इसके बाद उन्होंने कोर्ट में आत्मसमर्पण कर दिया था। इसके बाद ही उसी महीने में उनके खिलाफ गैंगस्टर एक्ट में मुकदमा लिखा गया था। तभी से वह महाराजगंज जेल में निरुद्ध थे।

जातिवादी प्रदर्शन पर पूर्ण रोक: वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान ने योगी सरकार के ऐतिहासिक निर्णय की सराहना - बताया सामाजिक सुधार की ओर निर्णायक कदम

लखनऊ, संजय सागर सिंह। योगी सरकार का जातिवादी प्रदर्शन पर पूर्ण रोक का निर्णय न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि पूरे भारत के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण हैं। इस महत्वपूर्ण फैसले का व्यापक स्वागत करते वरिष्ठ समाजसेवी एवं प्रख्यात सामाजिक चिंतक मुसरफ खान ने बताया कि भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने भी 100 साल पूर्व में इसे भारतीय समाज और देश कि तरक्की में सबसे बड़ी बाधा कहा था। आज़ादी के बाद भी जातिवादी राजनीति ने देश को बांटने और कमजोर करने का कार्य किया। उन्होंने योगी महाराज के इस ऐतिहासिक कदम को समानता, न्याय और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों को व्यवहारिक धरातल पर सशक्त करने वाला महत्वपूर्ण कदम बताया है।

समरसता, भाईचारा और सौहार्द की दिशा में एक नई पहल : प्रख्यात सामाजिक चिंतक मुसरफ खान

इस फैसले का स्वागत करते हुए वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान ने कहा कि, योगी आदित्यनाथ सरकार का यह निर्णय एक व्यापक सामाजिक दृष्टिकोण का परिचायक है। ऐसा साहस राजनीतिक स्वार्थों के चलते अब तक किसी भी राजनेता ने नहीं दिखाया, लेकिन योगी सरकार ने यह साहस दिखाया है तो उसका स्वागत होना ही चाहिए। अब समय है कि अन्य राज्य सरकारें भी योगी जी कि इस महत्वपूर्ण पहल को अपनाएं और जातिवाद के विरुद्ध निर्णायक कदम उठाएं। उन्होंने जातिवाद के खिलाफ केवल बयानबाजी नहीं की, बल्कि इसे समाप्त करने के लिए कानूनी, सामाजिक और प्रशासनिक स्तर पर ठोस कदम उठाए हैं। इस निर्णय से एक नई सामाजिक चेतना के जन्म लेने की आशा की जा रही है, जहाँ व्यक्ति की पहचान जाति नहीं, उसके कार्य, नैतिकता और योगदान से होगी। योगी सरकार का यह निर्णय न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि पूरे भारत के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बन सकता है। भारत जैसे विविधता से भरे देश में जाति के नाम पर विभाजन की राजनीति और सामाजिक संरचनाएं अब अप्रासंगिक होती जा रही हैं।

यदि इसे सख्ती और ईमानदारी से लागू किया गया तो निश्चित ही समाज में सौहार्द, भाईचारा और समानता का वातावरण बनेगा

उन्होंने आगे कहा कि पुलिस रिकॉर्ड में जाति का उल्लेख अपराधी को अपराधी नहीं बल्कि किसी जाति का प्रतिनिधि बना देता था, जिससे कानून-व्यवस्था पर भी प्रतिकूल असर पड़ता था। इन जटिल स्थितियों में योगी सरकार का यह निर्णय विषमताओं एवं विसंगतियों को समाप्त करने की दिशा में एक नया अध्याय है। यदि इसे सख्ती और ईमानदारी से लागू किया गया तो निश्चित ही समाज में सौहार्द, भाईचारा और समानता का वातावरण बनेगा। जाति-आधारित पहचान की जगह योगदान को महत्व मिलेगा। किसी जाति के प्रति लगाव दर्शाने के लिए किसी अन्य जाति को नीचा दिखाने की भी गलत परंपरा देखी जाती रही है। जाति आधारित पोस्टर या प्रतीक न केवल गलियों में, मकानों पर बल्कि अपने वाहनों पर भी लगाए जा रहे हैं। ऐसे में, परस्पर भेद, ऊंच-नीच की भावना बढ़ती जा रही है। ऐसे भेद को मिटाने की मांग उठती रही है। समाज के लिए चिंतित रहने वाले लोग यही चाहते हैं कि जातिगत झंडों और पोस्टरों पर एक हद तक लगाम लगनी चाहिए, लेकिन ऐसा साहस राजनीतिक स्वार्थों के चलते अब तक किसी भी राजनेता ने नहीं दिखाया।

यूपी सरकार की मंशा सराहनीय और इन दिशा-निर्देशों को पूरी ईमानदारी से लागू करने की जरूरत

श्री खान ने यह भी बताया कि योगी सरकार द्वारा जारी 10 सूत्रीय दिशा-निर्देश में यह बात विशेष रूप से गौर करने लायक है कि अब जाति के नाम, नारे या स्टिकर वाले वाहनों का केंद्रीय मोटर वाहन अधिनियम, 1988 के तहत चालान किया जाएगा। यहां तक कि प्रथम सूचना रिपोर्ट में भी जाति को दर्शाने से बचा जाएगा। अभी तक होता यह है कि अपराधी जाति के आधार पर अपनी पहचान बना लेते हैं और मजबूत हो जाते हैं। यह बहुत अफसोस की बात है कि विशेष रूप से चुनाव के समय जाति आधारित बैनरों की बाढ़ आ जाती है। राजनीतिक दल एवं नेता जातिगत समीकरणों से समाज को बांटने में जुट जाते हैं। लेकिन अब यूपी सरकार की मंशा सराहनीय है, और इन दिशा-निर्देशों को पूरी तरह से लागू करने की जरूरत है। वाकई समाज से अपराध को मिटाने के लिए अपराधी की जाति देखना गैर-वाजिब है। हां, यह सावधानीपूर्वक कुछ मामलों में जाति का उल्लेख करने की छूट दी गई है। जैसे, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत मामलों में जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल होता रहेगा।

प्रेम - पच्चीसा (भाग 28)

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत्त जेल अधीक्षक
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

रोहन और उनकी टीम विधायक जी के आगमन का इंतज़ार कर रहे थे, लेकिन रात में तेज़ बारिश के कारण पास की नदी में बाढ़ आ गई। इस प्राकृतिक आपदा ने नदी के किनारे बसे पेड़ों, घरों और जानवरों को बहा ले गया। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए विधायक जी तुरंत बाढ़ प्रभावित क्षेत्र की ओर रवाना हो गए। रोहन और उनकी टीम ने भी देरी न करते हुए राहत और बचाव कार्यों में सहायता के लिए बाढ़ग्रस्त क्षेत्र की ओर प्रस्थान किया। जब रोहन और उनकी टीम बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में पहुंचे, तो वहां का दृश्य बेहद दुखद और चुनौतीपूर्ण था। नदी का पानी गाँवों में घुस चुका था, जिससे कई घर ढह गए थे और लोग बेघर हो गए थे। पेड़ उखड़ चुके थे और कई जानवर या तो बह गए थे या अपनी जान बचाने के लिए ऊंचे स्थानों पर शरण ले रहे थे। बाढ़ के कारण बिजली और संचार सेवाएं ठप हो चुकी थीं, जिससे प्रभावित लोगों तक मदद पहुंचाना और भी मुश्किल हो रहा था।

रोहन की टीम ने तुरंत स्थिति का जायज़ा लिया और स्थानीय प्रशासन, बाढ़ आपदा प्रबंधन / बचाव टीम के साथ समन्वय स्थापित किया। विधायक श्री राम लाल जी पहले से ही वहां मौजूद थे और राहत कार्यों की निगरानी कर रहे थे। रोहन ने अपनी टीम को तीन समूहों में बांटा पहला बचाव दल इस समूह का काम फंसे हुए लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाना था। कई लोग अपने घरों की छतों पर या ऊंचे स्थानों पर फंसे थे। रोहन की टीम ने रस्सियों, नावों और स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर लोगों को सुरक्षित निकाला। खासकर बच्चों, बुजुर्गों और बीमार लोगों को प्राथमिकता दी गई। दूसरे जरूरी कार्य में राहत सामग्री वितरण दल बाढ़ प्रभावित लोगों को तत्काल भोजन, पानी, कंबल और दवाइयों की जरूरत थी। रोहन की टीम ने स्थानीय स्वयंसेवी संगठनों और प्रशासन के साथ मिलकर राहत सामग्री वितरित की। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि सामग्री उन तक पहुंचे जो सबसे अधिक प्रभावित थे, जैसे कि बेघर परिवार और छोटे बच्चे। तीसरे स्तर डॉ सुधा, मालती जी और माया जी चिकित्सा सहायता दल के साथ बाढ़ के पानी में डूबने, चोट लगने और पानी से होने वाली बीमारियों का खतरा रोकने का प्रयास कर रहीं थीं।

रोहन की टीम में कुछ स्थानीय स्वयंसेवक चिकित्सा विशेषज्ञ और पेरा – मेडिकल के साथ ही नेसनल केडिट कोर, स्काउट्स के साथ अस्थायी चिकित्सा शिविर स्थापित किए। उन्होंने घायलों का प्राथमिक उपचार किया और गंभीर मामलों को नज़दीकी अस्पतालों में भेजने की व्यवस्था की।

विधायक जी के साथ जिलाधीश, पुलिस अधीक्षक और सहयोगी विभाग भी मिलकर राहत कार्यों को गति दे रहे थे। उन्होंने स्थानीय लोगों को भी संगठित किया ताकि अधिक से अधिक लोग बचाव कार्य में सहायता कर सकें। बाढ़ के पानी के कम होने तक रोहन और उनकी टीम दिन-रात काम करते रहे। इस दौरान, उन्होंने न केवल लोगों की जान बचाई, बल्कि उनके हौसले को भी बनाए रखा। कई दिनों की मेहनत के बाद, स्थिति धीरे-धीरे नियंत्रण में आई। बाढ़ का पानी कम होने लगा, और लोग अपने जीवन को फिर से पटरी पर लाने की कोशिश करने लगे।

रोहन की टीम ने न केवल तात्कालिक राहत प्रदान की, बल्कि दीर्घकालिक पुनर्वास के लिए भी योजनाएं बनाईं, जैसे कि क्षतिग्रस्त घरों की मरम्मत और बाढ़ रोकथाम के उपायों पर चर्चा कर गॉव में आई आपदा में सहयोग कर यश कमाया।

(क्रमशः भाग 29)

शिक्षा की जड़ें मजबूत होंगी तभी स्वर्णिम छत्तीसगढ़ की कल्पना साकार हो सकेगी: डॉ कर

स्वर्णिम छत्तीसगढ़ के लिए साहित्यकारों और विद्वानों की चिंतन बैठक 'बढ़ती अराजकता स्वर्णिम छत्तीसगढ़ की राह में सबसे बड़ी बाधा'

सुनील चिंचोलकर

रायपुर, छत्तीसगढ़। राजधानी रायपुर में सोमवार को थिंक आईएएस संस्थान में स्वयंसेवी सामाजिक संगठन पीपला वेलफेयर छत्तीसगढ़ के संयोजन से साहित्यकारों और विद्वानों की बैठक-सह विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रदेश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों, विद्वानों और पत्रकारों ने सम्मिलित होकर स्वर्णिम छत्तीसगढ़ बनाने की दिशा में विचार-विमर्श किया। गोष्ठी में समाज के समक्ष खड़ी विभिन्न चुनौतियों और लगातार बढ़ रही अराजकता पर चिंता जताई गई और उनके समाधान के उपाय सुझाए गए।

समाज के समक्ष चुनौतियाँ

वरिष्ठ साहित्यकार माणिक विश्वकर्मा ने कहा कि आज समाज नशावृत्ति, अनियंत्रित जनसंख्या, जल संकट, वायुप्रदूषण, इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट और ध्वनि प्रदूषण जैसी अनेक गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। यदि इन पर समय रहते कठोर कदम नहीं उठाए गए, तो ये समस्याएँ विकास की राह में बड़ी रुकावट बन जाएंगी और स्वर्णिम छत्तीसगढ़ का सपना अधूरा रह जाएगा।

भाषाविद् डॉ. चितरंजन कर ने बदलते समय में बच्चों के नैतिक मूल्यों, शिक्षा और संस्कार पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि यदि शिक्षा की जड़ें मजबूत होंगी, तभी छत्तीसगढ़ का भविष्य उज्ज्वल बन पाएगा और स्वर्णिम छत्तीसगढ़ की कल्पना साकार हो सकेगी। शिक्षा और सामाजिक मूल्यों की भूमिका पर शिक्षाविद् एवं थिंक आईएएस के डायरेक्टर मुरली मनोहर देवांगन ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर विचार रखते हुए कहा कि शिक्षा के बिना किसी राज्य या समाज का विकास संभव नहीं है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही वह माध्यम है, जिससे भविष्य की पीढ़ी संस्कारवान बनेगी और राज्य का भविष्य सुनहरा होगा। नेत्र विशेषज्ञ एवं चिंतक डॉ. मनीष एस. श्रीवास्तव ने बच्चों और समाज में

मोबाइल एवं तकनीक के बढ़ते उपयोग पर गंभीर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि मोबाइल का अत्यधिक प्रयोग बच्चों में पढ़ाई और सामाजिक व्यवहार- दोनों पर प्रतिकूल असर डाल रहा है, जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। पीपला फाउंडेशन के संरक्षक पारसनाथ साहू ने कहा कि यदि समाज में बढ़ती अराजकता और अव्यवस्था पर समय रहते रोकथाम नहीं की गई तो स्वर्णिम छत्तीसगढ़ का सपना सिर्फ कल्पना बनकर रह जाएगा। उन्होंने अनुशासन और जागरूकता को समाज सुधार का सबसे बड़ा हथियार बताया।

साहित्यकारों व पत्रकारों के सुझाव

बैठक में वरिष्ठ साहित्यकार रामेश्वर शर्मा और वरिष्ठ पत्रकार बाबूलाल शर्मा ने भी अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि साहित्य और पत्रकारिता समाज का आईना हैं/ इन्हीं के माध्यम से लोगों में सकारात्मक सोच और बदलाव का संदेश फैलाया जा सकता है।

इसी कड़ी में वरिष्ठ साहित्यकार अरविंद मिश्रा, सुखनवर हुसैन, नगेन्द्र वर्मा, जेके सिंगरौल, संजीव ठाकुर, इन्द्रदेव यदु तथा अन्य उपस्थित विद्वानों ने भी अपने-अपने सुझाव दिए और कहा कि शिक्षा, संस्कार, संस्कृति एवं सामाजिक समरसता को मजबूत किए बिना स्वर्णिम छत्तीसगढ़ का निर्माण असंभव है।

संगठन की सराहना और सम्मान

सभी वक्ताओं ने पीपला फाउंडेशन के इस प्रयास की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और कहा कि इस तरह की पहल समाज को नई दिशा देने वाली है। विचार गोष्ठी के अंत में थिंक आईएएस संस्थान की ओर से सभी साहित्यकारों और वक्ताओं का शाल एवं श्रीफल भेंटकर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में पीपला फाउंडेशन से संरक्षक पारसनाथ साहू, अध्यक्ष दूजेराम धीवर, संयोजक महेन्द्रकुमार पटेल, मार्गदर्शक सदस्य शशांक खरे, शिक्षाविद् मुरली मनोहर देवांगन, कोषाध्यक्ष कोमल लाखोटी, सदस्य प्रतीक टोंड्रे सहित बड़ी संख्या में साहित्यकार, पत्रकार और चिंतकगण उपस्थित रहे। बैठक सह गोष्ठी सकारात्मक विचारों और सामूहिक संकल्प के साथ संपन्न हुई। उपस्थित सभी विद्वानों ने एक स्वर में यह संदेश दिया कि समाज में अनुशासन, शिक्षा, संस्कार और पर्यावरण संरक्षण पर जोर देकर ही स्वर्णिम छत्तीसगढ़ के सपने को हकीकत बनाया जा सकता है।

27वें अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह में हुआ ऊषा शर्मा "प्रिया" की तीन पुस्तकों का विमोचन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी के प्रेक्षागृह में पं० हरप्रसाद पाठक स्मृति अखिल भारतीय साहित्य पुरस्कार समिति, मथुरा के द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर संपन्न हुए 27वें अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह में ₹मैमोरी गर्ल₹ प्रेरणा शर्मा की माँ एवं वरिष्ठ साहित्यकार ऊषा शर्मा ₹प्रिया₹ की तीन पुस्तकों का विमोचन बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ हुआ। उनकी तीनों पुस्तकें अलग-अलग विधाओं में हैं। ज्ञात हो कि साहित्यकार ऊषा शर्मा ₹प्रिया₹ आज के समय में हिन्दी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनकी अब तक 35 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनको समूचे देश में काफी पसंद किया गया है।

इस अवसर पर उपस्थित चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के पूर्व उप-कुलपति, पद्मश्री डॉ. रवीन्द्र कुमार, कार्यक्रम के संयोजक डॉ. दिनेश पाठक "शशि", ब्रज साहित्य मंडल के अध्यक्ष व प्रख्यात साहित्यकार डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी, उमेश यादव, डॉ. ब्रजेश पचौरी, डॉ. आशु सक्सेना, डॉ. रामप्रताप सिंह, डॉ. राधाकांत शर्मा एवं राजेश कुमार आदि ने ऊषा शर्मा को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं दी हैं। साथ ही ईश्वर से उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना भी की।

ग्राम प्रधान मझारा और पशु चिकित्सक द्वारा गौवंश संरक्षण के नाम पर गौवंश के साथ क्रूरता की घटना वायरल होने पर पशु प्रेमी विकेंद्र शर्मा ने ईमेल के माध्यम से जिलाधिकारी, पूर्व कैबिनेट मंत्री मेनका गाँधी तथा निदेशक पशु पालन विभाग से की शिकायत.

तीव्र गति से आ रहे वाहन ने दो वाइक सवारो को रौंदा, मौके पर मौत

बदायूं। थाना सिविल लाइन क्षेत्र के गांव शेखूपुर केन्द्रीय विद्यालय के निकट बृहस्पतिवार करीब 11:00 तीव्र गति से आ रहे वाहन ने दो वाइक सवारो को रौंद दिया जिससे दोनों की मौके पर मौत हो गई जवकि वाइक पर सवार एक युवक घायल हो गया दोनों मृतक थाना विनावर क्षेत्र के एक गांव के वताये जा रहे हैं सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों मृतकों के शवो को कब्जे में लेकर पीएम को भेजा है. उत्तर प्रदेश के बदायूं में एक दर्दनाक सड़क हादसे में बाइक सवार दंपती की मौत हो गई। सिविल लाइंस थाना क्षेत्र के कादरचौक रोड पर शेखूपुर गांव के पास यह हादसा हुआ। बिनावर थाना क्षेत्र के अहिरवारा गांव निवासी पप्पू (45) अपनी पत्नी आसमां (40) और भतीजे यूसुफ (24) के साथ रमजानपुर गांव दवा लेने गए थे। वापसी के दौरान विपरीत दिशा से आ रही तेज रफ्तार कार ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में दंपती की मौके पर ही मौत हो गई। यूसुफ को मामूली चोटें आईं।

कार चालक मौके से फरार : पप्पू को करीब 20 दिन पहले आंवला रोड पर हुए एक हादसे में कॉलर बोन में फ्रैक्चर हुआ था। वह रमजानपुर के एक वैद्य से इलाज करवा रहे थे। उसी की दवा लेने वह पत्नी और भतीजे के साथ गए थे। हादसे के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में ले लिया है। दंपति की मौत से उनका 11 वर्षीय इकलौता बेटा फरहान अनाथ हो गया है। घटना की सूचना मिलते ही परिजन मौके पर पहुंच गए।

इन्कमटैक्स पेयर्स ध्यान दें !शॉर्ट- टर्म कैपिटल गेन पर 87ए की छूट ,गलती संशोधित-19 सितंबर 2025 के सर्कुलर का व्यापक विश्लेषण

टैक्सपेयर को बकाया टैक्स, ब्याज और संभव हो तो पेनल्टी भी देनी पड़ेगी।यह स्थिति कई लोगों के लिए भारी हो सकती है- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

भारत में आयकर कानून समय-समय पर संशोधित होते रहते हैं और हर बदलाव का असर सीधे तौर पर टैक्सपेयर्स पर पड़ता है। हाल ही में 19 सितंबर 2025 को जारी आयकर विभाग के सर्कुलर ने लाखों टैक्सपेयर्स का ध्यान अपनी ओर खींचा है। इसमें कहा गया कि शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन (एसटीसीजी) पर पहले गलती से धारा 87ए की छूट दे दी गई थी, लेकिन अब इस गलती को ठीक किया जाएगा। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने कहा है कि करदाता आयकर अधिनियम की धारा 87ए के तहत उस आय पर कर छूट का दावा नहीं कर सकते, जिस पर विशेष दरों पर कर लगाया जाता है, जिसमें शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन भी शामिल है, वित्तीय वर्ष 2023-24 में कई करदाताओं ने शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन पर छूट का दावा किया था, लेकिन आयकर विभाग ने उनके अनुरोधों को अस्वीकार कर दिया और बकाया करों की मांग की है। विभाग ने अब ऐसे करदाताओं से 31 दिसंबर, 2025 तक अपना बकाया कर चुकाने को कहा है, यह उन मामलों पर भी लागू होता है जहां पहले गलती से छूट दे दी गई थी. सीबीडीटी ने 19 सितंबर को जारी अपने सर्कुलर में कहा था कि कई मामलों में रिटर्न गलत तरीके से प्रोसेस किए गए थे और विशेष कर दरों के अंतर्गत आने वाली आय पर छूट दी गई थी, समय पर नहीं चुकाया तो देना होगा ब्याज, अब इन गलतियों को सुधारा जा रहा है और नई डिमांड को जारी किया जा रही हैं, सर्कुलर में यह भी चेतावनी दी गई है कि भुगतान में किसी भी तरह की देरी पर आयकर अधिनियम की धारा 220(2) के तहत ब्याज लग सकता है, हालांकि, करदाताओं की परेशानी कम करने के लिए, आयकर विभाग ने राहत की पेशकश की है, उसने 31 दिसंबर, 2025 से पहले बकाया करों का भुगतान करने पर ब्याज माफ करने का फैसला किया है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूं कि जुलाई 2024 से, आयकर विभाग धारा 87ए के तहत 7 लाख रुपए से कम आय वाले करदाताओं के लिए शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन पर छूट के दावों को खारिज कर रहा है, वित्तवर्ष 2023-24 के लिए, इन शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन पर 15 प्रतिशत कर लगाया जाता था, लेकिन वित्त वर्ष 2024-25 से यह दर बढ़ाकर 20 प्रतिशत कर दी गई है, हाईकोर्ट तक पहुंचा मामला- वित्त वर्ष 2023-24 के लिए छूट की सीमा ओल्ड टैक्स रिजीम के तहत 5 लाख रुपए और नई टैक्स रिजीम के तहत 7 लाख रुपए थी, हालांकि, इस प्रावधान ने कर देयता को शून्य करने में मदद की, लेकिन यह छूट एसटीसीजी जैसी विशेष दरों पर कर योग्य आय को कवर करने के लिए नहीं थी. बाद में यह मामला बॉम्बे उच्च न्यायालय तक पहुंच गया था, जिसमें दिसंबर 2024 में आयकर विभाग से करदाताओं को अपने रिटर्न संशोधित करने की अनुमति देने का अनुरोध किया था। जनवरी 2025 में ऐसे संशोधनों के लिए 15 दिनों की अवधि निर्धारित की गई थी, लेकिन बाद में भी कई करदाताओं को अपने लंबित बकाया का भुगतान करने के लिए नोटिस प्राप्त हुए, अंततः, केंद्रीय बजट 2025 ने यह कहकर सभी भ्रम दूर कर दिए कि धारा 111ए के तहत एसटीसीजी सहित विशेष दर वाली आय, वित्त वर्ष 2025-26 से धारा 87ए के तहत छूट के लिए पात्र नहीं होगी, अब टैक्सपेयर्स को यह समझना ज़रूरी है कि इस बदलाव का उनके टैक्स प्लानिंग, उनकी जेब और अनुपालन पर क्या असर होगा। इसलिए आज हम मीडिया में अवेलेबल जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, इन्कमटैक्स पेयर्स ध्यान दें ! शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन पर 87ए की छूट गलती संशोधित -19 सितंबर 2025 के सर्कुलर का व्यापक विश्लेषण को हर करदाता ने ध्यान से देखना चाहिए।

साथियों बात अगर हम शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन पर अब छूट क्यों नहीं मिलेगी? व धारा 87ए की छूट और एसटीसीजी में टकराव की करें तो, शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन वह लाभ है जो निवेशक को शेयर, म्यूचुअल फंड, सिक्योरिटीज या अन्य पूंजीगत संपत्तियों को 12 महीने से कम समय तक रखने के बाद बेचने पर होता है। भारत का आयकर कानून इसे विशेष श्रेणी की आय मानता है और इस पर फ्लैट दर से टैक्स लगता है। धारा 87ए टैक्सपेयर्स को 5 लाख रुपये तक की कुल आय पर 12,500 रूपए तक की टैक्स छूट देती है। लेकिन यह छूट केवल सामान्य आय (जैसे सैलरी, ब्याज, हाउस प्रॉपर्टी से आय आदि) पर लागू होती है। विशेष दर वाली आय, जैसे एसटीसीजी (धारा 111ए) और लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेन (धारा 112ए) पर यह छूट कभी लागू नहीं रही। हालांकि, तकनीकी गड़बड़ी या गलत सॉफ्टवेयर प्रोसेसिंग की वजह से कई रिटर्न में एसटीसीजी पर भी धारा 87ए की छूट दे दी गई थी। अब सरकार ने स्पष्ट किया है कि यह एक गलती थी और इसे सुधारा जाएगा। इसलिए अब से एसटीसीजी पर 87ए छूट नहीं मिलेगी। धारा 87ए की छूट और एसटीसीजी का टकराव-आयकर अधिनियम की भाषा स्पष्ट है- 87ए केवल "टोटल इन्कम" पर उपलब्ध है, लेकिन उसमें स्पेशल रेट इन्कम शामिल नहीं होती। इसका मतलब है कि यदि किसी व्यक्ति की कुल आय 4.5 लाख रूपए है और उसमें से 1.5 लाख रूपए एसटीसीजी से आया है, तो वह व्यक्ति छूट का लाभ नहीं ले पाएगा। क्योंकि, एसटीसीजी पर टैक्स फ्लैट 15पेर्सेंट की दर से लगेगा। बाकी आय पर स्लैब रेट लगेगा। धारा 87ए केवल स्लैब रेट वाली आय पर छूट देती है, स्पेशल रेट वाली आय पर नहीं। इसलिए सरकार ने यह स्पष्ट किया कि कोई भी टैक्सपेयर अब एसटीसीजीको 87ए छूट में क्लेम नहीं कर सकेगा।

साथियों बात अगर हम क्या पहले गलती से मिली छूट वापस करनी होगी? की करें तो, यदि किसी टैक्सपेयर को पहले एसटीसीजी पर 87ए की छूट मिल चुकी है, तो उसे अब वह राशि वापस करनी होगी। उदाहरण-मान लीजिए, किसी व्यक्ति की कुल आय 4.8 लाख रूपए थी, जिसमें से 2 लाख रूपए एसटीसीजी था सॉफ्टवेयर ने उसे गलती से 87ए छूट दे दी और टैक्स शून्य हो गया। अब विभाग रिटर्न री-प्रोसेस करेगा और कहेगा- एसटीसीजी पर 15 पर्सेंट टैक्स दो। इस तरह उस टैक्सपेयर को बकाया टैक्स, ब्याज और संभव हो तो पेनल्टी भी देनी पड़ेगी। यह स्थिति कई लोगों के लिए भारी हो सकती है, क्योंकि वे यह मानकर चल रहे थे कि उन्हें कोई टैक्स नहीं देना। पर 87ए की छूट मिल चुकी है, तो उसे अब वह राशि वापस करनी होगी।

साथियों बातें अगर हम, बकाया कर जमा न करने पर क्या होगा? इसको समझने की करें तो, यदि कोई टैक्सपेयर 31 दिसंबर 2025 तक बकाया कर जमा नहीं करता, तो आयकर विभाग सख्त कार्रवाई करेगा (1) ब्याज- धारा 234A, 234B, 234C के तहत 1पर्सेंट प्रति माह की दर से ब्याज लगेगा। (2) जुर्माना- धारा 271 और 273 के तहत भारी जुर्माना लग सकती है (3) रिकवरी-विभाग बैंक अकाउंट, वेतन या प्रॉपर्टी से वसूली कर सकता है। (4) प्रोसेक्युशनः गंभीर मामलों में अभियोजन भी संभव है। यानें टैक्सपेयर्स को गलती से मिली छूट वापस करने से बचने का कोई रास्ता नहीं है। अतःअगर हम उपरोक्त पर्यावरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि टैक्सपेयर्स के लिए चेतावनी और सबक- शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन हमेशा से ही एक विशेष श्रेणी की आय रही है जिस पर फ्लैट दर से टैक्स लगता है। धारा 87ए का लाभ इस पर कभी नहीं था। लेकिन तकनीकी गलती से छूट मिल गई, जिससे टैक्सपेयर्स को झूठा फायदा हुआ। अब विभाग ने इस गलती को सुधार लिया है और टैक्सपेयर्स को 31 दिसंबर 2025 तक अपना बकाया चुका देना होगा। यदि वे ऐसा नहीं करते, तो उन्हें ब्याज, पेनल्टी और वसूली का सामना करना पड़ेगा।

व्यंग्य : और इनसे मिलिए...!

कस्तूरी दिनेश

मेरा नगर एक तरह से राष्ट्रीय-अन्तराष्ट्रीय राजनीति का साक्षात जीवंत नमूना है ! यहाँ राजनीति के हर प्रसिद्ध चेहरे का "सेम्पल" मिल जायेगा,जिनके बारे में आप अखबारों और टी.वी.में रोज पढ़ते-सुनते होंगे.पत्रकार होने के कारण इस शहर के प्रायः हरेक राजनीतिज्ञ बन्धु से मेरे मधुर सम्बन्ध हैं।आज सुबह की ही बात है,हमारी प्रातःभ्रमण-मंडली में गोवर्धन भाई आ मिले। वे नगर निगम में अपने मोहल्ले के पार्षद हैं ।

नमस्कार-चमत्कार के बाद बात शहर की सफाई व्यवस्था पर आकर ठहर गई। पत्रकार नकुल दुबे ने शिकायत करते हुए कहा—"पूरे नगर की सफाई के लिए ठेकेदार को पच्चीस लाख का ठेका मिला हुआ है पर न सड़कों की ठीक से सफाई होती है न नालियों की। मेरे मोहल्ले में तो नालियां सड़कों पर गंगा-यमुना की तरह हिलोरें मार रहीं हैं। रात तो रात दिन को भी मच्छर-सुंदरियां नृत्य करती हुई गालों और माथे का मधुर चुम्बन लेकर दिन दहाड़े रोमांस प्रगट करती हैं !"कपड़ों की रेडीमेड दुकानवाले नानूमल कहाँ चूकने वाले थे। वे बोले—"सब चोर है साले... !जनता के पैसों की चोरी... ! बहराम चोट्टे... !निगम के अध्यक्ष चोर,प्रशासक चोर... ! अध्यक्ष और प्रशासक से मिली भगत है,बेदर्दी से गुलछर्रे उड़ाये जा रहे हैं... !" हरि वर्मा हाई स्कूल में टीचर हैं। वे गोवर्धन भाई से शिकायती स्वर में बोले—"आप पार्षद लोग कुछ बोलते-टोकते क्यों नहीं गोनू भाई ! आँखों में देखकर मक्खी निगल रहे हैं... !" उनकी बात सुनकर गोवर्धन भाई की त्योरियां थोड़ी चढ़ गईं. वे तुर्श स्वर में बोले—"मैं अकेले क्या कर सकता हूँ....। बाक़ी पार्षदों के रिश्तेदारों को तो शहर में छोटे-बड़े ठेके देकर अध्यक्ष ने मिला रखा है. लगा हूँ जुगाड़ में,कुछ प्रूफ-श्रूफ़,कच्चा-चिट्ठा हाथ लगे तो देख लेना, एक दिन निगम की जनरल मीटिंग में बम फोड़ूंगा... ! ऐसा–वैसा नहीं पूरा हाईड्रोजन बम... !"

महात्मा गांधी वार्ड के ढेलूराम प्रजापति चायपत्तीवाले भी साथ थे ! मैंने टोह लेते हुए पूछा—"आपके यहाँ के पार्षद का क्या हालचाल है...?" वे त्योरियां चढ़ाते हुए बोले—"बाहरी है गधे की औलाद ... ! हमारे मोहल्ले का है ही नहीं ... ! मोहल्ले में बहुत सारे घुसपैठिये हैं, बाहरी प्रांत से आकर बसे हुए। बस उन्हीं के सहारे जीतकर पार्षद बन गया है। निगम की नाली-सडक का ठेका अपने रिश्तेदारों को दिलाकर मोटा माल छाप रहा है उसे यहाँ की समस्याओं से क्या लेना देना...?

किराना दूकान वाले मन्नू अग्रवाल बहुत देर से मुंह बांधे चुप चल रहे थे। अचानक वे गुर्राए—पिछली बार निगम में जब हमारी पार्टी की सरकार थी तब बेईमान भ्रष्टाचार-भ्रष्टाचार की खूब हांक लगाते थे। अब देख लो इन लुटिया चोरों को ... ! शहर का क्या हाल कर रखा है...? आये दिन साला कोई न कोई स्केम... !एक महीना पहले हमारे व्यापारी संघ वाले अपनी समस्याओं को लेकर प्रशासक से मिले तो बात ही बात में थोड़ी गर्मा-गर्मी हो गई ... ! घोंचू ने गुस्से में आकर दुकानों का टैक्स बढ़ाकर डेवढ़ा कर दिया... ! प्रशासक क्या है, साला पूरा ट्रम्प है... ! लो अब मरो... ! उनके हाथ में कलम की ताकत है,उनसे कुश्ती थोड़ी लड़ोगे ...?" शहर की समस्याओं को लेकर भ्रमण-मंडली की इन रोचक बातों में प्रातः-भ्रमण कब पूरा हुआ और कब मेरा घर आ गया मुझे पता ही नहीं चला ! मैंने मुस्कुराते हुए हाथ जोड़कर उनसे विदा ली और अपने घर में प्रविष्ट हो गया। अब आप अनुमान लगाइए कि हमारे शहर की राजनीति में इस समय कौन-कौन से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नेताओं के जुड़वें हैं...?

उत्तर प्रदेश भारत का विकास इंजन बन गया है

राजेश कुमार पासी

जब भी बीमारू राज्यों की बात की जाती थी तो जिन दो राज्यों का नाम सबसे पहले जहन में आता था, उसमें पहला नाम बिहार और दूसरा यूपी का होता था। इसके अलावा मध्यप्रदेश और उड़ीसा भी बीमारू राज्य थे। जहां तक बिहार की बात है, वो भी विकास कर रहा है लेकिन अभी भी बीमारू राज्य की श्रेणी से बाहर नहीं आ पाया है। योगी आदित्यनाथ के राज में उत्तर प्रदेश अब बीमारू राज्य की श्रेणी से बाहर निकल चुका है। आज यूपी देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और अब यूपी सरकार ने 2030 तक इसे एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य तय किया है। देखा जाए तो यह काम आसान होने वाला नहीं है लेकिन योगी के रिपोर्ट कार्ड को देखते हुए असंभव भी नहीं लगता है।

मुख्यमंत्री योगी ने बयान दिया है कि 2017 में यूपी की जीडीपी 12.36 लाख करोड़ रुपये थी, इसे वर्ष के अंत तक सरकार 36 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचाने जा रही है। उनका कहना है कि इस तरह यूपी की जीडीपी नौ वर्षों में तीन गुने की वृद्धि दर्ज करवाने जा रही है। उन्होंने कहा है कि इसी तरह राज्य की प्रति व्यक्ति आय भी नौ वर्षों में 45000 से बढ़कर 120000 रुपये पर पहुंच रही है। उनका कहना है कि आज प्रदेश हर सेक्टर में विकास कर रहा है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा है कि प्रधानमंत्री मोदी द्वारा 2047 तक विकसित भारत बनाने का संकल्प लिया गया है, उसी प्रकार उनकी सरकार 2047 तक विकसित उत्तर प्रदेश के विजन पर काम कर रही है। देखा जाए तो यह जरूरी भी है, अगर भारत को 2047 तक विकसित देश बनना है तो यूपी को भी विकसित राज्य बनाना होगा। 25 करोड़ की जनसंख्या वाला देश पिछड़ जाता है तो भारत कैसे विकास कर सकता है। नीति आयोग के सीईओ सुब्रमण्यम ने कहा है कि विकसित भारत बनाना है, तो यूपी को विकसित बनाना ही पड़ेगा। उनका कहना है कि अगर यूपी एक देश होता तो पांचवा सबसे बड़ा देश होता। जहां योगी उत्तर प्रदेश को आगे बढ़ाने की बात कर रहे हैं तो दूसरी तरफ विपक्ष के नेताओं का कहना है कि यूपी पहले से ज्यादा बर्बाद हो गया है। यूपी के बारे में सरकार हवा-हवाई प्रचार कर रही है।

यूपी के विकास का विश्लेषण करें तो पता चलता है कि योगी के 6 साल के शासन में यूपी की जीडीपी दो गुना हो गई थी। वर्ष 2016-17 में यूपी की जीडीपी 12.47 लाख करोड़ रुपये थी, जो कि वर्ष 2023-24 में बढ़कर 24.39 करोड़ रुपये हो गई। हमें याद रखना चाहिए कि जहां यूपी ने अपनी जीडीपी सिर्फ 6 साल में दुगुनी कर ली, वहीं दूसरी तरफ भारत की जीडीपी को दोगुना होने में दस वर्ष का समय लगा है। देखा जाए तो यूपी की अर्थव्यवस्था देश की अर्थव्यवस्था से कहीं ज्यादा तेजी से आगे बढ़ रही है। अगर यूपी अपनी इस रफ्तार को बनाए रखता है तो वो भारत का ग्रोथ इंजन बनने जा रहा है। यह सब एक संत के शासन में हो रहा है जिनका कुछ बड़े नेताओं ने मजाक बनाते हुए कहा था कि तुम बाबा हो, यहां क्या कर रहे हो, मठ में जाओ, घंटी बजाओ।

अग्नि-प्राइम: भारत की सुरक्षा कवच में जुड़ा स्वर्णिम अध्याय

भारत ने रक्षा प्रौद्योगिकी में एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है, जो उसकी सामरिक शक्ति को नई ऊंचाइयों तक ले जाती है और वैश्विक मंच पर उसकी स्थिति को मजबूत करती है। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) और त्रि-सेवा सामरिक बल कमांड (एसएफसी) के संयुक्त प्रयास से रेल-आधारित मोबाइल लॉन्चर प्रणाली से मध्यम दूरी की 'अग्नि-प्राइम' मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया है। 2,000 किलोमीटर की मारक क्षमता वाली यह मिसाइल अचूक सटीकता और विनाशकारी शक्ति के साथ लक्ष्य भेदने में सक्षम है। रेल-आधारित लॉन्चर प्रणाली अद्वितीय गतिशीलता और परिचालन लचीलापन प्रदान करती है, जो आधुनिक युद्ध के जटिल परिदृश्य में त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करती है। यह उपलब्धि भारत को रेल-आधारित मिसाइल प्रक्षेपण क्षमता वाले चुनिंदा देशों की श्रेणी में शामिल करती है, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा और आत्मनिर्भरता को और बल मिलता है।

'अग्नि-प्राइम' की तकनीकी श्रेष्ठता इसे अपनी श्रेणी में बेजोड़ बनाती है। नवीन प्रणोदन प्रणाली (प्रोपल्शन सिस्टम), समग्र रॉकेट मोटर केसिंग और अत्याधुनिक नेविगेशन व मार्गदर्शन प्रणाली से सुसज्जित यह मिसाइल अपनी कैनिस्टर-लॉन्च प्रणाली के कारण प्रक्षेपण समय को न्यूनतम करती है। यह सुविधा मिसाइल को सड़क या रेल मार्ग से तीव्र गति से स्थानांतरित करने और लंबे समय तक सुरक्षित भंडारण के बाद तत्काल प्रक्षेपण की क्षमता प्रदान करती है। डीआरडीओ के अनुसार, यह पहला प्री-इंडक्शन नाइट लॉन्च था, जिसे सामरिक बल कमांड ने संचालित किया, जो भारत के परमाणु शस्त्रागार के प्रबंधन में केंद्रीय भूमिका निभाता है। 'अग्नि-प्राइम' धीरे-धीरे 700 किलोमीटर रेंज वाली 'अग्नि-I' का स्थान लेगी, जिससे भारत का सामरिक शस्त्रागार और अधिक आधुनिक, प्रभावी और विश्वसनीय बनेगा। इसकी रेंज और गतिशीलता इसे क्षेत्रीय खतरों, खासकर पड़ोसी देशों से उत्पन्न चुनौतियों, के खिलाफ एक जबरदस्त हथियार बनाती है।

इस परीक्षण का सामरिक महत्व अपार है। भारत का पड़ोस, जहां तनाव और सामरिक प्रतिस्पर्धा सतत बनी रहती है, ऐसी तकनीक की मांग करता है जो त्वरित, सटीक और प्रभावशाली जवाबी कार्रवाई सुनिश्चित करे। 'अग्नि-प्राइम' को विशेष रूप से क्षेत्रीय खतरों को ध्यान में रखकर विकसित किया गया है, जबकि 5,000 किलोमीटर रेंज वाली 'अग्नि-V' व्यापक क्षेत्रीय कवरेज प्रदान करती है। डीआरडीओ के आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत ने पिछले दो दशकों में अपनी बैलिस्टिक मिसाइल क्षमताओं को निरंतर उन्नत किया है। 'पृथ्वी-II' (350 किमी), 'अग्नि-II' (2,000 किमी), 'अग्नि-III' (3,000 किमी), और 'अग्नि-IV' (4,000 किमी) जैसी मिसाइलें पहले ही तैनात की जा चुकी हैं, और अब 'अग्नि-प्राइम' इस शस्त्रागार को और सशक्त बनाएगी। यह उपलब्धि न केवल भारत की रक्षा रणनीति को मजबूती प्रदान करती है, बल्कि विश्व मंच पर उसकी तकनीकी और सामरिक प्रभुता को स्पष्ट रूप से स्थापित करती है।

भारत ने 'अग्नि-प्राइम' मिसाइल के रेल-आधारित लॉन्च के साथ रक्षा प्रौद्योगिकी में एक ऐसी क्रांतिकारी छलांग लगाई है, जो उसकी सामरिक शक्ति को अभेद्य बनाती है और वैश्विक मंच पर उसकी स्थिति को और सशक्त करती है। इस प्रणाली की सबसे बड़ी ताकत इसकी अप्रत्याशित गतिशीलता और लचीलापन है। पारंपरिक स्थिर लॉन्चरों के विपरीत, रेल-आधारित प्रणाली मिसाइल को देश के विशाल रेल नेटवर्क पर तेजी से स्थानांतरित करने की सुविधा देती है, जिससे दुश्मन के लिए इसका पता लगाना और निशाना बनाना लगभग असंभव हो जाता है। रक्षा विशेषज्ञ इसे आधुनिक युद्ध की 'हिट-एंड-रन' रणनीति का प्रतीक मानते हैं, जो सामरिक युद्ध में निर्णायक बढ़त प्रदान करती है। कैनिस्टर-लॉन्च प्रणाली मिसाइल को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के साथ-साथ तात्कालिक प्रक्षेपण की क्षमता प्रदान करती है, जो भारत को रक्षा और आक्रामक रणनीतियों में अभूतपूर्व श्रेष्ठता देती है। यह तकनीक भारत के रेल नेटवर्क की विशालता का उपयोग कर मिसाइल तैनाती को इतना अप्रत्याशित और प्रभावी बनाती है कि यह सामरिक दृष्टिकोण से एक गेम-चेंजर साबित होती है।

भारत की रक्षा नीति का मूलमंत्र आत्मनिर्भरता और तकनीकी नवाचार है। डीआरडीओ के आंकड़ों के अनुसार, भारत ने 2000 के दशक से अपनी मिसाइल रेंज को 350 किलोमीटर से बढ़ाकर 5,000 किलोमीटर तक विस्तारित किया है, जो क्षेत्रीय और वैश्विक खतरों से निपटने की उसकी अडिग प्रतिबद्धता को दर्शाता है। 'अग्नि-प्राइम' का यह परीक्षण इस दिशा में एक और मील का पत्थर है, जो भारत के सामरिक शस्त्रागार को और अधिक आधुनिक और प्रभावशाली बनाता है। इसके साथ ही, स्वदेशी विमानवाहक पोत, ड्रोन प्रौद्योगिकी, और लेजर-आधारित हथियारों जैसे क्षेत्रों में भारत की प्रगति आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को रेखांकित करती है। ये उपलब्धियां न केवल तकनीकी उन्नति का प्रतीक हैं, बल्कि भारत की वैश्विक छवि को एक सशक्त, नवाचार-प्रधान और स्वावलंबी राष्ट्र के रूप में स्थापित करती हैं।

'अग्नि-प्राइम' का यह सफल परीक्षण केवल तकनीकी या सामरिक उपलब्धि नहीं, बल्कि भारत की वैश्विक प्रभुता का एक शक्तिशाली घोषणापत्र है। यह प्रणाली भारत को उन चुनिंदा देशों की कतार में ला खड़ा करती है, जो आधुनिक युद्ध की जटिलताओं को न केवल समझते हैं, बल्कि उनका जवाब देने के लिए पूरी तरह तैयार भी हैं। यह उपलब्धि क्षेत्रीय स्थिरता और शक्ति संतुलन में महत्वपूर्ण योगदान देती है, साथ ही भारत की रक्षा क्षमताओं को नई ऊंचाइयों तक ले जाती है। यह परीक्षण भारत के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और सामरिक बलों के अथक परिश्रम और दृढ़ संकल्प का परिणाम है, जिन्होंने दिन-रात मेहनत कर देश को इस गौरवशाली मुकाम तक पहुंचाया है।

'अग्नि-प्राइम' का यह ऐतिहासिक परीक्षण भारत के लिए गर्व का एक स्वर्णिम क्षण है, जो रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और तकनीकी श्रेष्ठता का प्रतीक है। यह विश्व को स्पष्ट संदेश देता है कि भारत अपनी संप्रभुता और सुरक्षा के लिए किसी भी चुनौती का सामना करने को तत्पर है। यह उपलब्धि भारत के नवाचार, दृढ़ता और सामरिक दूरदर्शिता का जीवंत उदाहरण है, जो देश की रक्षा यात्रा में एक नया अध्याय जोड़ती है। 'अग्नि-प्राइम' न केवल भारत की तकनीकी प्रगति का द्योतक है, बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि भारत वैश्विक मंच पर एक ऐसी शक्ति के रूप में उभर रहा है, जो भविष्य की हर चुनौती के लिए सक्षम और सजग है। यह उपलब्धि भारत को न केवल क्षेत्रीय, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक अजेय शक्ति के रूप में स्थापित करती है, जो अपनी सुरक्षा और संप्रभुता के लिए हर कदम पर तैयार है।

उत्तर प्रदेश पुलिस फिर गिरी गाज! एक साथ 16 पुलिसकर्मी सस्पेंड, इंस्पेक्टर और दारोगा भी लिस्ट में शामिल, SSP के एक्शन से महकमे में हड़कंप

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

उत्तर प्रदेश पुलिस फिर गिरी गाज! एक साथ 16 पुलिसकर्मी सस्पेंड, इंस्पेक्टर और दारोगा भी लिस्ट में शामिल, SSP के एक्शन से महकमे में हड़कंप

सहारनपुर : उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में एसएसपी आशीष तिवारी ने लापरवाह पुलिसकर्मियों पर सख्त एक्शन लेते हुए एक साथ 16 पुलिसवालों को निलंबित कर दिया है। ये सभी पुलिसकर्मी नवरात्र और शाकुंभरी देवी मेले के दौरान बिना सूचना के ड्यूटी से नदारद थे। जिसे गंभीर लापरवाही मानते हुए यह कार्रवाई की गई। एसएसपी के इस एक्शन से पुलिस महकमे में

हड़कंप मच गया है।

लिस्ट में किस-किस का नाम शामिल

एसएसपी द्वारा जारी निलंबन आदेश में निरीक्षक संजय कुमार, उपनिरीक्षक रामेंद्र सिंह और महिला उपनिरीक्षक मनबीरी सिंह का नाम शामिल है। इसके अलावा मुख्य आरक्षी प्रदीप कुमार, अरुण सोलंकी और भोपाल सिंह को भी सस्पेंड किया गया है। वहीं आरक्षी रवींद्र कुमार, रोबिन कुमार, मुनीश कुमार और महिला मुख्य आरक्षी निर्मला भी निलंबन की इस लिस्ट में शामिल हैं। इसके साथ-साथ रिक्रूट आरक्षी दीपक कुमार, धनंजय सरकार, अशोक कुमार, योगेन्द्र सिंह, हरिओम सिंह और भोपाल सिंह को भी अनुशासनहीनता के चलते निलंबित किया गया है।

एसएसपी आशीष तिवारी ने स्पष्ट कहा कि त्योहार या भीड़भाड़ के समय ड्यूटी से गायब रहना अपराध है और जनता की सुरक्षा से कोई समझौता बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस सख्त कदम के बाद यह संदेश गया है कि ड्यूटी के दौरान अनुशासनहीनता किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

कासगंज शादी का झांसा देकर प्रिंसिपल ने बनाए शारीरिक संबंध, दो साल बाद शिक्षक पीड़िता ने दर्ज

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

थाना सिढ़पुरा क्षेत्र के एक गांव के निजी स्कूल के प्रिंसिपल पर शादी का झांसा देकर शारीरिक संबंध बनाने का आरोप लगा है। पीड़ित अध्यापिका ने करीब दो साल बाद प्रिंसिपल के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस मामले की जांच कर रही हैं

थाना सिढ़पुरा क्षेत्र के एक गांव के निजी स्कूल के प्रिंसिपल पर शादी का झांसा देकर शारीरिक संबंध बनाने का आरोप लगा है। पीड़ित अध्यापिका ने करीब दो साल बाद प्रिंसिपल के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पीड़िता ने पुलिस को बताया कि वर्ष 2023 में वह अपेक्स स्मार्ट अकैडमी स्कूल में पढ़ाती थी। वहीं नरेशचंद्र पुत्र रामदास प्रिंसिपल के पद पर कार्यरत था। इस दौरान प्रिंसिपल ने शादी का झांसा देकर उसे प्रेमजाल में फंसा लिया। शारीरिक संबंध

बनाए।

जब युवती ने कई बार शादी का दबाव डाला तो प्रिंसिपल टालमटोल करता रहा। हाल ही में 3 अगस्त 2025 को जब उसने फिर से शादी की बात कही तो नरेशचंद्र ने धमकी दी कि यदि आगे से शादी की जिद की तो जान से मार देगा। इसके बाद उसने मोबाइल भी बंद कर लिया।

प्रिंसिपल की हरकतों से परेशान होकर पीड़िता ने थाने पहुंचकर उसके विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराई। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

पानी कितना जरूरी ! इसकी बचत भी उतनी जरूरी

चंद्र मोहन

सावन अभी अभी ख़तम हुआ. कहीं बादल फटा तो कहीं बाढ़. चारों और पानी ही पानी. धरती पर 70 प्रतिशत पानी है तो हमारे शरीर में भी पानी लगभग 70 प्रतिशत है. इतना सारा पानी है, फिर भी उसकी बचत भी बहुत जरूरी है.

बचपन में खेलते हुए कई बार दोहराया है कि... मछली जल की रानी है, जीवन उसका पानी है.....

पानी के महत्व को दर्शाता है.

पानी की बचत करनी चाहिए. पानी तो बंद बोतलों में भी उपलब्ध होने लगा है.

अभी हाल ही में ₹रेल नीर ₹ ने अपने बोतल बंद पानी की कीमत भी कम की है.

₹बिन पानी सब सून₹ एक प्रसिद्ध दोहा है जो कवि रहीम दास द्वारा लिखा गया है, जिसका अर्थ है कि पानी (जल) के बिना सब कुछ व्यर्थ है क्योंकि इसके बिना मोती अपनी चमक खो देते हैं, मनुष्य अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान खो देते हैं और चूना (आटा) भी उपयोगी नहीं रहता. यह दोहा हमें पानी का महत्व समझाता है और जल संरक्षण का संदेश देता है.

दोहे का पूरा रूप

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून॥

अर्थ विस्तार

पानी का अर्थः इस दोहे में ₹पानी₹ शब्द के तीन अलग-अलग अर्थ हैंः

मोती के लिएः चमक, आभा, या तेज़. पानी के बिना मोती की चमक चली जाती है.

मनुष्य के लिएः विनम्रता, मान-सम्मान, या प्रतिष्ठा. मनुष्य में यह विनम्रता या सम्मान के बिना उसका कोई मूल्य नहीं रहता.

चूना (आटा) के लिएः जल. पानी के बिना आटे को गूंथा या उपयोग नहीं किया जा सकता.

दोहे का भावः कवि रहीम दास कहते हैं कि पानी का महत्व समझकर उसे बचाना चाहिए, क्योंकि पानी के बिना ये तीनों चीजें (मोती, मनुष्य, और चूना) अपना मूल्य और अस्तित्व खो देते हैं.

मनुष्य के शरीर में औसतन 50 से 75% तक पानी होता है जो लिंग, उम्र और शरीर की संरचना पर निर्भर करता है, जिसमें औसत वयस्क पुरुष में लगभग 60% और महिला में लगभग 55% पानी होता है. शिशुओं में यह प्रतिशत अधिक होता है और उम्र बढ़ने के साथ कम होता जाता है.

पानी का प्रतिशत उम्र के हिसाब सेः

शिशुः

लगभग 75-78%

एक साल का बच्चाः

लगभग 65%

वयस्क महिलाः

लगभग 55% पानी होता है.

वयस्क पुरुषः

लगभग 60% पानी होता है.

पानी की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकः

उम्रः

उम्र बढ़ने के साथ शरीर में पानी की मात्रा कम होती जाती है.

लिंगः

महिलाओं में पुरुषों की तुलना में शरीर में वसा की मात्रा अधिक होती है, और वसायुक्त ऊतकों में दुबले ऊतकों की तुलना में कम पानी होता है.

शारीरिक गठनः

दुबले शरीर वाले व्यक्तियों में अधिक वसायुक्त व्यक्तियों की तुलना में पानी की मात्रा अधिक होती है.

व्यायाम का स्तरः

एथलीटों और नियमित व्यायाम करने वालों में पानी की मात्रा अधिक हो सकती है.

शरीर में पानी क्यों ज़रूरी है?

यह रक्त, पाचक रस और पसीने का आधार बनता है.

यह शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है.

यह जैव रासायनिक अभिक्रियाओं को नियंत्रित करने में मदद करता है.

सभी कोशिकाओं को कार्य करने के लिए पानी की आवश्यकता होती है.

धरती पर कुल अनुमानित पानी की मात्रा लगभग 1.386 अरब घन किलोमीटर है, जिसमें से लगभग 97.5% खारा पानी (मुख्य रूप से महासागरों में) और 2.5% मीठा पानी है. इस मीठे पानी का अधिकांश भाग ग्लेशियरों और बर्फ की चोटियों में है, जबकि बहुत कम मात्रा (लगभग 0.3% मीठे पानी का) नदियों, झीलों और भूजल के रूप में उपलब्ध है जो मानव उपयोग के लिए सुलभ है.

पानी का प्रतिशत (लगभग) में वितरण

महासागरः

पृथ्वी पर कुल पानी का लगभग 97% खारे पानी के रूप में महासागरों में है.

ग्लेशियर और बर्फः

पृथ्वी के मीठे पानी का अधिकांश हिस्सा ग्लेशियरों और बर्फीली चोटियों में जमा है.

भूजलः

कुछ पानी जमीन के नीचे भूजल के रूप में भी पाया जाता है.

सतही जलः

नदियाँ, झीलें और अन्य सतही जल के स्रोत कुल पानी का बहुत छोटा हिस्सा हैं.

वायुमंडलः हवा में जलवाष्प के रूप में भी कुछ पानी मौजूद है.

भले ही पृथ्वी पर बहुत अधिक पानी हो लेकिन इसका लगभग 97.5% खारा है. बचा हुआ 2.5% मीठा पानी है, लेकिन इसका भी बड़ा हिस्सा ग्लेशियरों और गहरे भूजल में है, जो आसानी से पहुंच योग्य नहीं है। इसलिए, मानव उपयोग के लिए उपलब्ध मीठे पानी की मात्रा बहुत सीमित है, जो कुल पानी का एक छोटा सा अंश है.

जमीन के नीचे पानी की मात्रा निश्चित नहीं है क्योंकि यह भौगोलिक स्थितियों पर निर्भर करती है; हालांकि, पृथ्वी की पपड़ी के नीचे, विशेष रूप से ऊपरी परत के भीतर, बड़ी मात्रा में पानी मौजूद है. वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के भीतर, 1000 किमी की गहराई तक पानी की मौजूदगी पाई है, और पृथ्वी के ऊपरी हिस्से के अंदर लगभग 23.6 मिलियन क्यूबिक किलोमीटर पानी मौजूद हो सकता है.

जमीन के नीचे पानी की गहराई और उपलब्धता

स्थानीय विविधताः

जमीन के नीचे पानी की गहराई हर जगह एक समान नहीं होती है. नदियों के पास पानी सतह के करीब हो सकता है, जबकि पहाड़ी या रेगिस्तानी इलाकों में यह काफी नीचे जा सकता है.

बोरवेल और भूजलः

कुओं, बोरवेलों और चापानलों के माध्यम से हम जो पानी निकालते हैं, वह भूजल होता है। यह विभिन्न भौगोलिक स्थितियों के आधार पर 30-40 फीट से लेकर 400 फीट या उससे अधिक गहराई तक मिल सकता है.

एक्वाफेयरः

जमीन के नीचे पानी के जो भंडार होते हैं, उन्हें एक्वाफेयर कहा जाता है.

जलभृतः

पृथ्वी की सतह के नीचे भी पानी मौजूद है, जिसे आप मिट्टी की नमी और भूजल जलभृतों के रूप में देख सकते हैं.

जमीन के नीचे कुल पानी की मात्रा

वैज्ञानिकों के अनुसार, पृथ्वी की पपड़ी में लगभग 43.9 मिलियन क्यूबिक किलोमीटर पानी मौजूद है, और पृथ्वी की सतह के ठीक नीचे के ऊपरी परत में 23.6 मिलियन क्यूबिक किलोमीटर से अधिक पानी पाया जाता है.

हालांकि, धरती के बहुत गहरे हिस्सों, जैसे पृथ्वी के आवरण में, कई महासागरों के बराबर पानी हो सकता है.

पानी का महत्व बहुत अधिक है, यह जीवन का आधार है और हमारे शरीर के लिए बहुत ज़रूरी है. पानी शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है, पाचन में मदद करता है, और शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है. पानी के बिना, जीवन संभव नहीं है

पानी के महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता हैः

जीवन का आधारः

पानी पृथ्वी पर जीवन के लिए आवश्यक है।

शरीर के लिए आवश्यकः

मानव शरीर लगभग 60% पानी से बना है, और स्वस्थ रहने के लिए इसकी आवश्यकता होती है.

आयुर्वेद को जीवन का विज्ञान कहा जाता है

विजय गर्ग

शहरी जीवन प्रदूषण, धूल और एलर्जी के लिए निरंतर संपर्क लाता है, जिससे लगातार साइनस सिरदर्द, अवरुद्ध नाक या यहां तक कि मस्तिष्क कोहरा होता है। नासिया में नासिका में हर्बल तेलों (जैसे अनु तैला) की कुछ बूंदें लगाना शामिल है। आयुर्वेद बताता है कि यह सिर क्षेत्र से विषाक्त पदार्थों को साफ करता है और संवेदी कार्यों को तेज करता है। जबकि यह सरल लगता है, कई चिकित्सक साइनस की भीड़ को कम करने और यहां तक कि मानसिक स्पष्टता का समर्थन करने की क्षमता के लिए प्रतिज्ञा करते हैं, इस डिजिटल युग में एक कम आवश्यकता है।

(आयुर्वेदिक अनुष्ठान जो इतने आधुनिक स्वास्थ्य मुद्दों का समाधान हैं)

क्या आयुर्वेदिक प्रथाएं आधुनिक स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान हो सकती हैं? आयुर्वेद, जिसे जीवन का विज्ञान भी कहा जाता है, हमेशा एक चिकित्सा प्रणाली से अधिक रहा है। यह जीवन जीने का एक तरीका है जो शरीर, मन और पर्यावरण को जोड़ता है। आज की स्क्रीन थकान, तनाव, अनियमित खाने के पैटर्न और जीवन शैली से चलने वाली बीमारियों की दुनिया में, आयुर्वेद के कई सरल अनुष्ठान समय पर समाधान की तरह महसूस करते हैं। इस विश्व आयुर्वेद दिवस पर, यहां छह प्रथाएं हैं जो आधुनिक स्वास्थ्य चुनौतियों को सबसे प्राकृतिक तरीके से संबोधित करने की शक्ति को बनाए रखती हैं ऐसी दुनिया में जहां तनाव ईमेल की तुलना में तेजी से यात्रा करता है, अभ्यंग एक मारक की तरह काम करता है। गर्म तेल की मालिश, पारंपरिक रूप से तिल या औषधीय तेलों के साथ की जाती है, त्वचा को पोषण देती है और तंत्रिका तंत्र को शांत करती है। आधुनिक अध्ययनों से पता चलता है कि यह कोर्टिसोल (तनाव हार्मोन) को कम कर सकता है और रक्त परिसंचरण में सुधार कर सकता है। कई लोग रिपोर्ट करते हैं कि कुछ ही हफ्तों के बाद, वे हल्का महसूस करते हैं, बेहतर सोते हैं, और मांसपेशियों की जकड़न कम कर देते हैं, कुछ आधुनिक डेस्क नौकरियां बदतर हो जाती हैं।

शहरी जीवन प्रदूषण, धूल और एलर्जी के लिए निरंतर संपर्क लाता है, जिससे लगातार साइनस सिरदर्द, अवरुद्ध नाक या यहां तक कि मस्तिष्क कोहरा होता है। नासिया में नासिका में हर्बल तेलों (जैसे अनु तैला) की कुछ बूंदें लगाना शामिल है। आयुर्वेद बताता है कि यह सिर क्षेत्र से विषाक्त पदार्थों को साफ करता है और संवेदी कार्यों को तेज करता है। जबकि यह सरल लगता है, कई चिकित्सक साइनस की भीड़ को कम करने और यहां तक कि मानसिक स्पष्टता का समर्थन करने की क्षमता के लिए प्रतिज्ञा करते हैं, इस डिजिटल युग में एक कम आवश्यकता है।

10-15 मिनट तक मुंह में एक चम्मच तेल बह सकता है, जो पुराने जमाने का लग सकता है, लेकिन गंडुशा समय की कसौटी पर खरा उतरा है। यह अनुष्ठान मौखिक बैक्टीरिया को हटाने में मदद करता है, मसूड़ों को मजबूत करता है, और खराब सांस को कम करता है। आधुनिक शोध मौखिक स्वास्थ्य को मधुमेह और हृदय रोग जैसी स्थितियों से जोड़ता है। रोजाना मुंह साफ करके, गंडुशा अप्रत्यक्ष रूप से बेहतर समग्र स्वास्थ्य में योगदान देता है, एक सही उदाहरण है कि एक साधारण अभ्यास सिर्फ दांतों से अधिक कैसे प्रभावित करता है।

अंतहीन स्क्रीन घंटों ने आंखों में खिंचाव और मानसिक बेचैनी को आम बना दिया है। ट्राटाका, एक ध्यान तकनीक जिसमें एक लौ पर स्थिर टकटकी लगाना शामिल है, राहत प्रदान करता है। यह आंखों की मांसपेशियों को मजबूत करता है, डिजिटल थकान को कम करता है, और एकाग्रता को तेज करता है। कई चिकित्सकों को इस अभ्यास के बाद शांति की भावना का भी अनुभव होता है, जिससे यह शारीरिक और मानसिक दोनों डिटॉक्स हो जाता है। आज के संदर्भ में, यह थकी हुई आंखों और बेचैन दिमाग दोनों के लिए एक उपाय की तरह लगता है। आयुर्वेद ने कभी भी स्वास्थ्य को एक आकार-फिट-ऑल के रूप में नहीं देखा। मौसमी परिवर्तनों के लिए जीवन शैली और आहार को अपनाने की प्रथा ऋतुचार्य शरीर को प्रकृति के साथ लय में रहने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, गर्मियों में ठंडा खाद्य पदार्थों का सेवन, सर्दियों में गर्म मसाले, या मानसून के दौरान हल्का भोजन पाचन को मजबूत और प्रतिरक्षा को स्थिर रखता है। आज, जहां मोटापा और मधुमेह जैसे चयापचय संबंधी विकार बढ़ रहे हैं, रितुचार्य का निवारक ज्ञान हड़ताली रूप से आधुनिक लगता है।

लगातार सूचनाओं और जीवन की भीड़ ने चिंता को एक आधुनिक महामारी बना दिया है। शिरोधारा, माथे पर धीरे से गर्म औषधीय तेल डालने का अभ्यास, तंत्रिका तंत्र के लिए चिकित्सा की तरह काम करता है। यह गहरी छूट को बढ़ावा देता है, नींद की गुणवत्ता में सुधार करता है, और चिंता के लक्षणों को कम करने में मदद करता है। यद्यपि आमतौर पर पेशेवर पर्यवेक्षण के तहत अभ्यास किया जाता है, इसका प्रभाव दर्शाता है कि आयुर्वेद ने सदियों पहले मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को कैसे मान्यता दी थी, एक अवधारणा जो दुनिया केवल अब प्राथमिकता देने लगी है।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल,

विजयादशमी: बुराई चाहे बाहर हो या भीतर, अंत तय है

विजयादशमी का पावन पर्व भारतीय संस्कृति का वह अमर अध्याय है, जो सत्य, धर्म और मानवता की विजय का प्रतीक है। यह केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक गहन दर्शन है, जो हमें आत्ममंथन और आत्मविजय की ओर प्रेरित करता है। यह वह अवसर है जब हम अपने भीतर और बाहर के रावण—अहंकार, लोभ, क्रोध, और सामाजिक अन्याय का सामना करने का प्रण लेते हैं। विजयादशमी हमें सिखाती है कि सच्ची जीत वही है, जो मर्यादा, धैर्य और करुणा के पथ पर चलकर हासिल की जाए। यह पर्व हमें हमारी समृद्ध परंपराओं से जोड़ता है और आधुनिक चुनौतियों के बीच भी प्रासंगिकता का नया प्रकाश दिखाता है।

रामायण की कथा से प्रेरित यह पर्व श्रीराम की रावण पर विजय की गाथा का स्मरण कराता है। उत्तर भारत में रावण दहन इस दिन का सबसे प्रतीकात्मक क्षण है। जब विशाल रावण का पुतला अग्नि में जलता है, तो यह केवल एक प्रतीकात्मक अंत नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली संदेश है—बुराई का विनाश निश्चित है। लेकिन यह पर्व हमें बाहरी रावण से ज्यादा भीतर के रावणों—काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया, अहंकार, ईर्ष्या, घृणा, भय और द्वेष पर विजय पाने की चुनौती देता है। यह आत्मचिंतन का अवसर है, जो हमें अपने मन की गहराइयों में उतरकर अपनी कमियों को पहचानने और सुधारने की प्रेरणा देता है।

विजयादशमी का महत्व केवल राम-रावण की कथा तक सीमित नहीं। पूर्वी भारत, विशेषकर बंगाल, असम और ओडिशा में, यह पर्व माँ दुर्गा की महिषासुर पर विजय के रूप में मनाया जाता है। दुर्गा पूजा के अंतिम दिन, माँ की प्रतिमा का विसर्जन केवल एक अनुष्ठान नहीं, बल्कि शक्ति, साहस और दृढ़ता का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि चाहे बुराई कितनी भी प्रबल हो, उसे परास्त करने की शक्ति हमारे भीतर ही है। दक्षिण भारत में 'आयुध-पूजा' और 'विद्यारंभ' के रूप में यह पर्व कर्म और ज्ञान के प्रति श्रद्धा का संदेश देता है। किसान का हल, कारीगर का औजार, या विद्यार्थी की किताब—विजयादशमी हमें याद दिलाती है कि हमारे साधनों की सार्थकता तभी है, जब उनका उपयोग समाज के कल्याण के लिए हो।

महाराष्ट्र की 'सीमोल्लंघन' परंपरा एक अनूठा दर्शन प्रस्तुत करती है। आप्टे वृक्ष (बौहिनिया रेसेमोसा) के पत्तों को "सोना" कहकर बांटने की रस्म केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि यह सिखाती है कि सच्ची समृद्धि धन में नहीं, बल्कि धर्म, परिश्रम और समर्पण में निहित है। यह हमें अपनी सीमाओं को लांघने, नई शुरुआत करने और साहस के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। गुजरात में नवरात्रि के बाद गरबा और दांडिया की रंगीन छटा के साथ विजयादशमी सामूहिक एकता और उल्लास का प्रतीक बनकर उभरती है। यह पर्व हमें जोड़ता है—अतीत से, वर्तमान से, और एक बेहतर भविष्य के सपने से।

विजयादशमी का ऐतिहासिक महत्व इसके धार्मिक स्वरूप को और गहराई देता है। छत्रपति शिवाजी महाराज ने इसी पावन दिन शस्त्र-पूजन कर स्वराज्य की रक्षा का संकल्प लिया, जिसने विजयादशमी को केवल एक धार्मिक पर्व से कहीं आगे बढ़ाकर राष्ट्र निर्माण और स्वतंत्रता की भावना का प्रतीक बना दिया। स्वतंत्रता संग्राम में भी यह पर्व स्वाधीनता सेनानियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा। 1857 की क्रांति से लेकर 20वीं सदी के आंदोलनों तक, विजयादशमी ने अन्याय के खिलाफ संघर्ष की चेतना को प्रज्वलित किया। आज भी यह पर्व हमें राष्ट्र और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का बोध कराता है, साथ ही एकता और साहस का संदेश देता है।

रूढ़ियों को तोड़कर जिम्मेदारी की ओर—विश्व गर्भनिरोधक दिवस

विश्व गर्भनिरोधक दिवस (26 सितंबर) का संदेश एक ऐसी चिंगारी है, जो मानवता के भविष्य को प्रज्वलित करती है, आजादी, समानता और स्थायित्व के नए क्षितिज खोलती है। यह कोई साधारण अवसर नहीं, बल्कि एक परिवर्तनकारी विचारधारा है—जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सशक्त करती है, लैंगिक समता को नई ऊंचाइयों तक ले जाती है और पर्यावरणीय संतुलन को पुनर्जनन की दिशा में प्रेरित करती है। गर्भनिरोधक, जो कभी केवल चिकित्सीय समाधान था, आज मानवाधिकारों और वैश्विक समृद्धि का प्रबल ध्वजवाहक है। लेकिन क्या हम इसकी सच्ची गहराई को आत्मसात कर पाए हैं? क्या हम उन अनछुए सत्यों को उजागर कर रहे हैं, जो समाज की गहराइयों में दबे हैं?

गर्भनिरोधक का इतिहास मानव सभ्यता की यात्रा जितना ही प्राचीन और परिवर्तनकारी है। प्राचीन मिस्र के शहद और जड़ी-बूटियों के मिश्रण से लेकर आधुनिक युग की गोलियों, इंजेक्शनों और उन्नत उपकरणों तक, तकनीकी प्रगति ने इस क्षेत्र में क्रांति ला दी है। फिर भी, विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी चौंकाने वाली है—21.4 करोड़ महिलाएँ आज भी आधुनिक गर्भनिरोधक साधनों से वंचित हैं। यह आँकड़ा एक कटु सत्य को उजागर करता है: हमारा समाज समावेशी और समान स्वास्थ्य सेवाओं से अभी भी कोसों दूर है। खासकर भारत जैसे देशों में, जहाँ जनसंख्या का दबाव आर्थिक और पर्यावरणीय संकटों को गहरा रहा है, गर्भनिरोधक केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं, बल्कि सामाजिक और वैश्विक उत्तरदायित्व का प्रतीक है।

गर्भनिरोधक को केवल गर्भावस्था रोकने का उपाय मानना इसके व्यापक महत्व को कमतर आंकना है। यह एक मौलिक अधिकार है, जो हर व्यक्ति को अपनी प्रजनन इच्छाओं पर स्वतंत्र नियंत्रण की शक्ति देता है। मगर कई समाजों, विशेषकर ग्रामीण और रूढ़िगत क्षेत्रों में, यह अधिकार सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक बंधनों में जकड़ा हुआ है। भारत में, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5) भले ही गर्भनिरोधक उपयोग में वृद्धि दर्शाता हो, लेकिन पुरुष-प्रधान मानसिकता के कारण यह जिम्मेदारी अब भी महिलाओं के कंधों पर ही पड़ती है। जहाँ महिला नसबंदी की दर 36% से अधिक है, वहीं पुरुष नसबंदी, जो सुरक्षित और प्रभावी है, मात्र 0.3% पुरुषों द्वारा अपनाई जाती है। यह लैंगिक असंतुलन न केवल स्वास्थ्य सेवाओं की विषमता को उजागर करता है, बल्कि पुरुषों को परिवार नियोजन में सक्रिय भागीदार बनाने की तत्काल आवश्यकता को भी रेखांकित करता है।

एक और अनदेखा आयाम है पुरुष गर्भनिरोधक साधनों की सीमित उपलब्धता और सामाजिक स्वीकार्यता। कॉन्डम और नसबंदी के अलावा पुरुषों के लिए विकल्प लगभग न के बराबर हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान पुरुष गर्भनिरोधक गोलियों और इंजेक्शनों जैसे नवाचारों की दिशा में अग्रसर है, पर उनकी व्यावसायिक उपलब्धता अभी दूर की बात है। इसका कारण सामाजिक धारणाएँ हैं, जो पुरुषों को परिवार नियोजन की जिम्मेदारी से किनारा करने को प्रेरित करती हैं। विश्व गर्भनिरोधक दिवस हमें इस दिशा में चिंतन और कार्रवाई के लिए प्रेरित करता है—पुरुषों को गर्भनिरोधक के प्रति जागरूक और जवाबदेह बनाने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे। यदि लैंगिक समानता हमारा लक्ष्य है, तो पुरुषों को इस प्रक्रिया का समान भागीदार बनाना अनिवार्य है।

किशोरों और युवाओं के लिए यौन और प्रजनन स्वास्थ्य शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है, जो विश्व गर्भनिरोधक दिवस के मंच पर शायद ही उचित ध्यान पाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी गंभीर है: हर साल 1.2 करोड़ किशोरियाँ, विशेष रूप से विकासशील देशों में, अनियोजित गर्भधारण का सामना करती हैं। भारत में, जहाँ यौन शिक्षा को सामाजिक वर्जना का शिकार बनाया जाता है, किशोरों को गर्भनिरोधक साधनों की सटीक जानकारी से वंचित रखा जाता है। इसका परिणाम है असुरक्षित गर्भपात, यौन संचारित रोगों का प्रसार और सामाजिक कलंक का बोझ। स्कूलों और समुदायों में व्यापक यौन शिक्षा को सामान्य और अनिवार्य बनाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यह न केवल अनचाहे गर्भ को रोकता है, बल्कि किशोरों को सशक्त बनाकर उनके भविष्य को उज्ज्वल और सुरक्षित करता है। विश्व गर्भनिरोधक दिवस इस सशक्त संदेश को दोहराता है: यौन शिक्षा कोई वर्जना नहीं, बल्कि हर युवा का मौलिक अधिकार है।

गर्भनिरोधक का पर्यावरणीय प्रभाव एक ऐसा आयाम है, जो वैश्विक चर्चाओं में अक्सर अनदेखा रहता है। बढ़ती जनसंख्या प्राकृतिक संसाधनों पर असहनीय दबाव डाल रही है। विश्व बैंक का अनुमान चेतावनी देता है कि 2050 तक वैश्विक जनसंख्या 970 करोड़ तक पहुँच सकती है, जिससे जलवायु परिवर्तन, खाद्य असुरक्षा और जल संकट जैसी चुनौतियाँ और विकराल हो जाएँगी। गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित कर पर्यावरणीय संतुलन को पुनर्जनन की राह दिखा सकता है। फिर भी, धार्मिक और राजनीतिक कारणों से इस महत्वपूर्ण मुद्दे को अक्सर दबा दिया जाता है। विश्व गर्भनिरोधक दिवस हमें इस संवेदनशील परंतु निर्णायक विषय पर खुली और साहसिक चर्चा का अवसर देता है।

आर्थिक सशक्तिकरण के दृष्टिकोण से गर्भनिरोधक का महत्व अतुलनीय है। जब महिलाएँ अपने प्रजनन विकल्पों को स्वतंत्र रूप से नियंत्रित कर सकती हैं, तो वे शिक्षा, करियर और आर्थिक स्वायत्तता की दिशा में सशक्त कदम उठाती हैं। एक अध्ययन दर्शाता है कि जिन देशों में गर्भनिरोधक साधनों तक व्यापक पहुँच है, वहाँ महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी और आर्थिक योगदान में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारत में, एनएफएचएस-5 के आँकड़े इस सच्चाई को रेखांकित करते हैं कि गर्भनिरोधक उपयोग ने मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी लाई है। यह स्पष्ट है कि गर्भनिरोधक न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य को सुदृढ़ करता है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक प्रगति का मजबूत आधार भी बनता है।

फिर भी, चुनौतियाँ अनसुलझी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, गर्भनिरोधक साधनों की ऊँची कीमत, और गहरी जड़ें जमाए सामाजिक रूढ़ियाँ प्रगति की राह में काँटों की तरह बिछी हैं। इनका समाधान तभी संभव है जब सरकार, गैर-सरकारी संगठन और समुदाय कंधे से कंधा मिलाकर एकजुट हों। जागरूकता अभियानों को तीव्र करना, मुफ्त या किफायती स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना, पुरुषों को परिवार नियोजन का सक्रिय भागीदार बनाना, और स्कूलों में यौन शिक्षा को अनिवार्य करना जैसे कदम इस दिशा में क्रांतिकारी बदलाव ला सकते हैं। साथ ही, हमें उन सांस्कृतिक और धार्मिक बंधनों को तोड़ना होगा जो गर्भनिरोधक के उपयोग को दबाते हैं।

विश्व गर्भनिरोधक दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक सशक्त आह्वान है—हमारी उपलब्धियों का उत्सव मनाने और उन अनकही कहानियों को उजागर करने का, जो समाज को नई दिशा दे सकती हैं। पुरुष गर्भनिरोधक, किशोरों के लिए यौन शिक्षा, पर्यावरणीय संतुलन, और आर्थिक सशक्तिकरण जैसे विषयों को मुख्यधारा में लाना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। यह दिन हमें यह स्मरण कराता है कि हर व्यक्ति का प्रजनन स्वास्थ्य और स्वतंत्रता का अधिकार सुनिश्चित करना हमारा साझा दायित्व है। इस विश्व गर्भनिरोधक दिवस पर एक ऐसे भविष्य का संकल्प लें, जहाँ हर व्यक्ति अपनी पसंद की स्वतंत्रता का स्वामी हो, और हम एक स्वस्थ, समतामूलक, और टिकाऊ विश्व की नींव रखें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

चाक, समर्पण, और पक्षपात का वजन

विजय गर्ग

शिक्षा के गलियारों में, जहां चाक धूल सपनों के साथ घुलमिल जाती है और हर सबक भविष्य को आकार देने की क्षमता रखता है, एक व्यक्ति को सर्वोच्च शासन करने के लिए योग्यता, समर्पण और अखंडता की उम्मीद है। फिर भी स्टाफ रूम के बंद दरवाजों के पीछे, एक और बल चुपचाप पनपता है - स्कूल की राजनीति। सूक्ष्म लेकिन संक्षारक, यह पेशे की गरिमा पर भी सबसे मेहनती शिक्षकों और चिप्स के करियर को कम करता है।

कई शिक्षकों के लिए, कक्षा पवित्र भूमि है। वे पाठ तैयार करने, असाइनमेंट डिजाइन करने और अपनी क्षमता का पता लगाने के लिए बच्चों का पोषण करने में अनगिनत घंटे लगाते हैं। एक हिचकिचाते हुए शिक्षार्थी को एक आश्वस्त उपलब्धि में बढ़ने की खुशी है जो उनकी दृढ़ता को बढ़ावा देती है। लेकिन अक्सर, पदोन्नति, मान्यता, या जिम्मेदारियों को योग्यता से नहीं बल्कि गठबंधन, पक्षपात और स्थानांतरण नेटवर्क द्वारा निर्धारित किया जाता है, तो उनकी भक्ति किसी का ध्यान नहीं रखती है। ऐसे वातावरण में, कड़ी मेहनत एक प्रसिद्ध गुण के बजाय एक मूक संघर्ष बन जाती है। स्कूलों में राजनीति से होने वाला नुकसान शायद ही कभी विस्फोटक होता है, लेकिन इसके प्रभाव अथक हैं। एक शिक्षक जो कुछ नया करने की हिम्मत करता है, वह उसके तरीकों को खारिज कर सकता है - इसलिए नहीं कि वे छात्रों को विफल करते हैं, बल्कि इसलिए कि वे उन लोगों के आराम को बाधित करते हैं जो बदलने के लिए तैयार नहीं हैं। एक सहकर्मी जो छात्र प्रतियोगिताओं के लिए अथक परिश्रम करता है, वह किसी को क्रेडिट के साथ बेहतर जुड़ा हुआ देख सकता है। गॉसिप और फुसफुसाए प्रतिद्वंद्विता ब्लॉटिंग पेपर पर स्याही जैसे स्टाफ रूम के माध्यम से सीप, निर्माण में वर्षों लग गए प्रतिष्ठा की पुष्टि । इन लड़ाइयों को खुले तौर पर नहीं बल्कि शांत बहिष्करण और सूक्ष्म युद्धाभ्यास के माध्यम से लड़ा जाता है जो धीरे-धीरे शिक्षकों को नीचे पहनते हैं।

त्रासदी तब गहरी होती है जब हमें पता चलता है कि परिणाम व्यक्तियों से कहीं अधिक होते हैं। हर बार जब एक समर्पित शिक्षक को दरकिनार, ध्वस्त या छोड़ने के लिए मजबूर किया जाता है, तो छात्र एक संरक्षक को खो देते हैं जिसने अपने जीवन को बदल दिया हो सकता है। एक कक्षा तब ग्रस्त होती है जब सामने खड़े शिक्षक न केवल पाठ योजनाओं, बल्कि राजनीतिक युद्धाभ्यास का वजन भी वहन करते हैं।

नवाचार कलंकित है, मध्यस्थता जड़ लेती है, और स्कूल - निष्पक्षता और सीखने का प्रतीक है - क्षुद्र शक्ति संघर्ष के क्षेत्र में बदल जाते हैं। कई कहानियां शिक्षकों की प्रसारित होती हैं, जिन्होंने उत्साह और दृष्टि के साथ शिक्षण में प्रवेश किया, रचनात्मक प्रथाओं को पेश करने के लिए उत्सुक, केवल यह पता लगाने के लिए कि उनके उत्साह ने सिस्टम को अस्थिर कर दिया। कुछ ने अपनी प्रतिभा को सिर्फ रफिटर करने के लिए मंद कर दिया, जबकि अन्य थके हुए हो जाते हैं और चले जाते हैं। दोनों परिणाम एक गहरा नुकसान का प्रतिनिधित्व करते हैं - न केवल शिक्षकों के लिए बल्कि उन छात्रों की पीढ़ियों के लिए जो उनके मार्गदर्शन में पनप सकते थे।

पक्षपात अक्सर इस संस्कृति के केंद्र में होता है, जहां व्यक्तिगत निष्ठा योग्यता और क्षमता से अधिक होती है। वरिष्ठ भूमिकाएँ उन लोगों को सौंपी जाती हैं जो एहसान करते हैं, न कि जो सम्मान कमाते हैं। परिणाम आक्रोश, विभाजन और संदेह है। शिक्षा के मिशन से एकजुट होने के बजाय, शिक्षक खुद को शिविरों में विभाजित पाते हैं, शिक्षण की तुलना में जीवित रहने पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। शिक्षा का महान उद्देश्य छोटे प्रतिद्वंद्वियों द्वारा ग्रहण किया जाता है, और इस शिथिलता की लागत अपार है। यदि स्कूलों को शिक्षण की गरिमा को पुनः प्राप्त करना है, तो उन्हें निष्पक्षता और पारदर्शिता को अपनाना चाहिए।

मेरिट कनेक्शन से अधिक मायने रखती है; सहयोग को क्लिक्स को बदलना होगा। इस तरह के सुधार साहस की मांग करते हैं, लेकिन विकल्प गंभीर है - एक ऐसी प्रणाली जहां युवा दिमाग को आकार देने के लिए सौंपे गए लोग खुद को कलंकित करते हैं। इसके मूल में एक सरल सत्य निहित है: जब राजनीति स्कूलों में पनपती है, तो यह न केवल शिक्षकों के करियर हैं जो क्षतिग्रस्त हैं बल्कि शिक्षा का बहुत भविष्य है जिसे जोखिम में डाला जाता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्

मुश्ताक अहमद और सलमा शाह ,संघर्ष, सेवा और सफलता की अमर दास्तान

डॉ. एम. ए. शाह.हरदा

यह कोई कहानी नहीं बल्कि हक़ीक़त है, एक ऐसी हक़ीक़त जो बताती है कि अगर इरादा पक्का हो, तालीम (शिक्षा) की रोशनी को पकड़े रखा जाए और मेहनत व सब्र (धैर्य) का सहारा लिया जाए तो गरीबी और मुश्किलें इंसान का रास्ता नहीं रोक सकतीं। यह दास्तान है मुश्ताक अहमद और उनकी पत्नी सलमा शाह की, जिनका जीवन कम उम्र की शादी, तंगहाली, ज़िम्मेदारियों और संघर्ष से शुरू हुआ लेकिन उन्हीं कठिनाइयों के बीच से उन्होंने अपने परिवार को कामयाबी तक पहुँचाया और खुद भी समाज के लिए मिसाल बन गए।कम उम्र में शादी हुई, न पढ़ाई पूरी हुई थी, न साधन थे, न रोज़गार। माता-पिता की विरासत में मिला सब कुछ सिर्फ़ संघर्ष और गरीबी था। लेकिन शादी के बाद मुश्ताक और सलमा ने यह ठाना कि वे अपनी पढ़ाई अधूरी नहीं छोड़ेंगे। दिनभर की जिम्मेदारियाँ निभाते, रात को दूसरों के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर कुछ पैसे कमाते और फिर देर रात तक खुद पढ़ाई करते। नींद और आराम छिन गए, मगर तालीम (ज्ञान) की प्यास और मक़सद (लक्ष्य) ने उन्हें टिकाए रखा। मुश्ताक अहमद ने हार नहीं मानी और बी.एड. की डिग्री हासिल की, इसके साथ ही नेचुरोपैथी की डिग्री भी पूरी की और आगे चलकर आयुर्वेद की तालीम भी प्राप्त की। फार्मेसी की पढ़ाई भी अधूरी न रही,दूसरी तरफ़ सलमा शाह ने भी अपना सपना पूरा किया, उन्होंने शहर जाकर ग्रेजुएशन और पढ़ाई की। पॉलीटेक्निक कॉलेज से संबद्ध होकर गांव की महिलाओं बच्चियों को सिलाई कढ़ाई की शिक्षा भी दी,उस दौर में खर्च इतना तंग था कि इन दोनों ने अपने खर्चे खुद उठाए, अक्सर रातों की नींद बेचकर शिक्षा का उजाला थामा।संघर्ष की इस डगर पर चलते हुए मुश्ताक अहमद ने कई नौकरियाँ भी कीं। वे सबसे पहले ग्रामीण विकास विस्तार अधिकारी (बलड़ी, जिला खंडवा) बने। इसके बाद उन्होंने शिक्षा की दुनिया में कदम रखा और उर्दू माध्यमिक शालाबलड़ी में प्रधान पाठक की जिम्मेदारी निभाई। अपनी मेहनत और लगन से वे आगे बढ़े और ज्ञानदीप हायर सेकेंडरी स्कूल, मगरधा (जिला हरदा) में प्राचार्य बने। यह सब केवल रोज़गार नहीं था बल्कि समाज में शिक्षा और जागरूकता फैलाने का उनका मिशन था। आज भी उनका वर्तमान पेशा चिकित्सा सेवा है, जहाँ वे लोगों की तंदुरुस्ती के लिए काम कर रहे हैं और समाज की बीमारियों को दूर करने में अपने तजुर्बे और ज्ञान के सहारे योगदान दे रहे हैं।शादी के बाद परिवार बढ़ा और छह बच्चों के पालन-पोषण की जिम्मेदारियाँ जुड़ीं। हालात बेहद कठिन थे, लेकिन मुश्ताक और सलमा ने अपने बच्चों को वही सबक सिखाया जो उन्होंने खुद जिया ,मेहनत, ईमानदारी, सब्र और तालीम की अहमियत। यह उनके संस्कार ही थे कि गरीबी में पले हुए बच्चे डॉक्टर, डेंटल सर्जन और फार्मासिस्ट बने।बड़ी बेटी नीलिमा ने BDS किया और एक कुशल डेंटल सर्जन बनीं। बेटे समीर ने भी BDS कर डेंटिस्ट के रूप में कार्यभार संभाला। साथ में pharmacist भी हैं समीर,तीसरी संतान बेटी रिज़वाना ने BHMS (होम्योपैथी) में डॉक्टरी की डिग्री हासिल की और खुद का मेडिकल स्टोर भी खोला pharmacist भी हैं रिज़वाना।बेटा जुबैर ने BAMS (आयुर्वेद) कर आयुर्वेदिक चिकित्सक के रूप में समाज को सेवा दी।बेटी आरज़ू ने भी BAMS (आयुर्वेद) किया और लोगों की निरंतर सेवा में लगी हैं ।सबसे छोटा बेटा अमन फार्मासिस्ट है ,और फिलहाल NEET की तैयारी कर रहा है ताकि MBBS की पढ़ाई कर आधुनिक चिकित्सा में अपना योगदान दे सके।एक-एक बच्चे की यह सफलता माता-पिता के त्याग, सब्र और लगातार संघर्ष का नतीजा है।इसी बीच सलमा शाह ने भी घर-परिवार से आगे जाकर समाज सेवा की राह पकड़ी। वे आशा सुपरवाइज़र बनीं और गाँव-गाँव जाकर स्वास्थ्य जागरूकता, प्रसूता माताओं और नवजात बच्चों की देखभाल, महिलाओं का मार्गदर्शन करने में अग्रणी रहीं। उनके सेवाभाव ने उन्हें पूरे समाज में पहचान और सम्मान दिलाया। उन्हें आज एक जागरूक महिला, सेवाभाव की मूर्ति और त्याग की मिसाल के रूप में जाना जाता है।दूसरी तरफ़ मुश्ताक अहमद ने सिर्फ़ शिक्षा और नौकरियों तक खुद को सीमित न रखते हुए व्यावसायिक तौर पर भी कदम रखा। उन्होंने मेडिकल स्टोर खोला और दवाइयों के व्यापार के साथ स्वास्थ्य सेवाओं में लोगों को सस्ती और सही दवाइयाँ उपलब्ध कराईं। मज़दूरी और तंगहाली से गुज़रे इंसान ने जब लोगों को दवाइयाँ दीं तो यह सिर्फ़ व्यापार नहीं बल्कि सेवा का काम था।इतना ही नहीं, मुश्ताक अहमद एक बेहतरीन लेखक भी बने। उनके संघर्ष और जज़्बात उनकी कलम में ढलकर किताबों, कविताओं, ग़ज़लों और लेखों के रूप में सामने आए। उनकी लिखी रचनाएँ समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित होती हैं। उनमें दर्द, उम्मीद, जद्दोजहद और सबक़ की सच्ची तासीर है। उन्हें पढ़कर लगता है जैसे हर पंक्ति उनके जीवन का क़िस्सा सुना रही हो।आज मुश्ताक और सलमा शाह का परिवार खुशहाल है। उनकी मेहनत और त्याग से उनके बच्चे डॉक्टरी और फार्मेसी की दुनियाँ में समाज की सेवा में लगे हैं। सलमा शाह आशा सुपरवाइज़र होकर महिलाओं और बच्चों की सेवा से समाज का मान बढ़ा रही हैं। मुश्ताक अहमद एक ओर चिकित्सा सेवा और व्यवसाय के जरिए लोगों को राहत पहुँचा रहे हैं तो दूसरी ओर अपनी कलम से समाज को विचार और सबक़ दे रहे हैं।यह दंपति आज इस बात की जीवित मिसाल है कि हालात कितने ही कठिन क्यों न हों, अगर सब्र, मेहनत और तालीम का सहारा लिया जाए तो इंसान अपनी तक़दीर खुद बदल सकता है। उनके संघर्ष और कुर्बानी ने साबित कर दिया कि गरीबी,मंज़िल नहीं, बल्कि जद्दोजहद के सहारे इज़्ज़त और कामयाबी की राह बनाई जा सकती है। मुश्ताक अहमद और सलमा शाह की यह दास्तान हमेशा याद रखी जाएगी,यह सिर्फ़ एक परिवार की कहानी नहीं बल्कि पूरी कौम के लिए एक रोशन चिराग़ है जो आने वाली नस्लों को राह दिखाती रहेगी।

चाईबासा में 10 नक्सलियों ने किया सरेंडर, एक दिन पहले 71 दांतेवाड़ा में

दिसंबर अंत तक झारखंड होगा नक्सल मुक्त : अनुराग गुप्ता– डीजीपी ,झारखंड

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

चाईबासा , विकास , शिक्षा बुनियादी सुविधा से से कोसों दूर ,देश का एक सर्वाधिक कुपोषित जिलों में से एक पश्चिम सिंहभूम में 10 भाकपा नक्सलियों ने वृहस्पतिवार सरेंडर कर दिया . गुरुवारको को पुलिस महानिदेशक अनुराग गुप्ता और सीआरपीएफ के कमांडेंट की उपस्थिति में माओवादियों के इन सदस्यों ने अपने हथियार डालकर साधारण जीवन की तरफ लौटने की राह पकड़ ली.

विगत कुछ समय से केन्द्र की नक्सल खात्मे की रणनीति एवं राज्यों पर दबाव से जारी कारवाई से तंग आकर देश के विभिन्न जिलों में नक्सलियो का मनोबल अब कम होने लगा है . एक दिन पहले छत्तीसगढ़ , बस्तर के दांतेवाड़ा में जहां 71 नक्सलियों ने एकसाथ डाले थे हथियार; 30 पर 64 लाख का इनाम था, आत्मसमर्पण करने वालों में कई नक्सली कमांडर भी शामिल बताया जाता है , जिन पर जंगल काटने और पुलिस से मुठभेड़ जैसे आरोप थे. दोनों ही इलाके अविकसित एवं घोर गरीबी तथा शोषण भ्रष्टाचार की कहानी बयां करती है । जिसे सामाजिक तौर पर अध्ययन का समय आ गया है ।

इधर आज पश्चिमी सिंहभूम में नक्सलियों ने अब सरेंडर करना शुरू कर दिया है. हाल ही झारखंड में भी में पलामू, हजारीबाग और गुमला में कई नक्सलियों के मारे जाने के बाद नक्सलियों ने यह कदम उठाया है , सरकार की आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति का लाभ लेते हुए इसमें शामिल हो कर सामाजिक जीवन जीने जा रहे हैं ।

आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को पुलिस महानिदेशक अनुराग गुप्ता ने माला पहनाकर और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया. सरेंडर करने वालों में 4 महिला नक्सली हैं. पुरुष नक्सलियों में गोइलकेरा थाना क्षेत्र के कुइड़ा गांव के श्रीजांगकोचा निवासी रांदो बोयपाई उर्फ क्रांति (एरिया कमेटी सदस्य), टोंटो थाना क्षेत्र के रेंगड़ाहातु गांव के गांधी टोला निवासी गारदी कोड़ा(दस्ता सदस्य), टोंटो के रेंगड़ाहातु गांव के गितिलगुटू टोला निवासी जॉन उर्फ जोहन पुरती, रेंगड़ाहातु के महाबुरू टोला निवासी कैरा कोड़ा, सारजोमबुरू निवासी घोनोर देवगम, गोइलकेरा थाना के बेड़ा दुइया गांव के मुरगीगेना निवासी गोमिया कोड़ा उर्फ टारजन व रांची जिला के तमाड़ थाना के हारबागाढ़ा निवासी प्रदीप सिंह मुंडा शामिल हैं.

महिला नक्सलियों में छोटानागरा थाना क्षेत्र के बाहदा गांव निवासी निरसो सिदू उर्फ आशा, मुफस्सिल थाना क्षेत्र के अंजेदबेड़ा गांव निवासी कैरी कायम उर्फ गुलांची एवं गोइलकेरा थाना क्षेत्र के ईचाहातु गांव के गुटुसाई टोला निवासी सावित्री गोप उर्फ फुटबॉल शामिल हैं. आत्मसर्पण करने पहुंची महिला नक्सली कैरी कायम डेढ़ साल की बेटी को गोद में लेकर आयी थी. सरेंडर करने वाले इन सभी नक्सलियों पर टोंटो, छोटानागरा, जराइकेला और गुवा थाना में हत्या, विस्फोटक पदार्थ अधिनियम, आर्म्स एक्ट और यूएपीए जैसे गंभीर कांड दर्ज हैं.

पुलिस महानिदेशक अनुराग गुप्ता ने बताया कि इनका समर्पण नक्सली संगठन पर एक बड़ा प्रहार है. इससे कोल्हान और सारंडा क्षेत्र में माओवादी गतिविधियों पर अंकुश लगेगा. कहा कि

झारखंड पुलिस

, कोबरा, झारखंड जगुआर एवं सीआरपीएफ के संयुक्त अभियान के कारण पिछले 3 वर्षों में लगातार नक्सलियों पर दबाव बना है. इसी का असर है कि अब तक 26 माओवादी हथियार डालकर मुख्यधारा से जुड़ चुके हैं.

डीजीपी गुप्ता ने बताया कि 3 वर्ष में पश्चिमी सिंहभूम में 9,631 अभियान चलाये गये, जिसमें 175 नक्सली गिरफ्तार किये गये हैं. 10 नक्सलियों को पुलिस ने मुठभेड़ में मार गिराया. ऑपरेशन के दौरान भारी मात्रा में विस्फोटक, हथियार और कारतूस बरामद किये गये. उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की पुनर्वास नीति नक्सलियों को नया जीवन देने का अवसर है. उन्होंने उग्रवादियों से हिंसा का रास्ता छोड़कर समाज की मुख्यधारा से जुड़ने की अपील की है.

डीजीपी ने बताया कि पश्चिमी सिंहभूम जिले के कोल्हान एवं सारंडा क्षेत्र में विगत कुछ वर्षों से प्रतिबंधित संगठन भाकपा माओवादी के ईस्टर्न रीजिनल ब्यूरो का संचालन केंद्रीय समिति सदस्य मिसिर बेसरा, पतिराम माझी उर्फ अनल, असीम मंडल, सुशांत उर्फ अनमोल, मेहनत उर्फ मोछू, अजय महतो उर्फ बुधराम, पिंटु लोहरा, अश्विन, अमित मुंडा, सालुका कायम एवं सागेन अंगरिया के नेतृत्व में किया जा रहा है. इनके विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई के लिए झारखंड पुलिस, झारखंड जगुआर, कोबरा एवं सीआरपीएफ का अभियान दल गठित कर लगातार अभियान चला रहा है.

पुलिस महानिदेशक ने कहा कि 31 दिसंबर 2025 तक झारखंड में नक्सलियों का सफाया हो जायेगा. उन्होंने कहा कि पुलिस का सूचना तंत्र काफी मजबूत और सशक्त है. इसलिए पुलिस के ऑपरेशन सफल हो रहे हैं. उन्होंने कहा कि हमारे सभी अधिकारी अच्छा कार्य कर रहे हैं, हम उनका पूरा ख्याल रखते हैं और जो अधिकारी व जवान शहीद होते हैं, उन्हें सरकार की पॉलिसी के तहत 1.10 करोड़ रुपए और अन्य सारी सुविधाएं दी जाती हैं.

उन्होंने बताया कि आत्म समर्पण करने वालों को ओपेन जेल में रखा जाता है, जहां उन्हें परिवार के लोगों से मिलने का अवसर भी मिलता है. इस मौके पर सीआरपीएफ के आइजी साकेत सिंह, आइजी अभियान माइकल एस राज, आइजी एसटीएफ अनूप बिरथरे, कोल्हान डीआइजी अनुरंजन किस्पोट्टा, चाईबासा एसपी अमित रेशु समेत अन्य वरीय पुलिस पदाधिकारी मौजूद थे।

हम आदेश देते रहेगें सरकार सुनती रहे ऐसा नहीं चलेगा : झारखंड हाईकोर्ट

विना पेसा कानून नियमावली तैयार किये लघु खनीज पर आवंटन पर रोक बरकरार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची । राज्य में पेसा कानून की नियमावली तैयार करने को लेकर झारखंड हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को एक बार फिर सख्त निर्देश दिए हैं। बुधवार को चीफ जस्टिस तरलोक सिंह चौहान और जस्टिस राजेश शंकर की अदालत ने सुनवाई के दौरान नाराजगी जताते हुए कहा कि हम केवल आदेश देते रहेंगे और सरकार सुनती रहेगी, ऐसा नहीं चलेगा।अदालत ने पूर्व में माइनर मिनरल (लघु खनिज) के आवंटन पर रोक हटाने से इनकार कर दिया। अदालत ने सरकार से स्पष्ट कहा कि अगली सुनवाई से पहले पेसा रूल तैयार कर पेश करें। मामले की अगली सुनवाई नौ अक्तूबर को होगी। सुनवाई के दौरान सरकार की ओर से हस्तक्षेप याचिका दायर कर बालू घाटों की नीलामी आवंटन पर लगी रोक हटाने का आग्रह किया गया। अदालत ने इस पर नौ अक्तूबर को सुनवाई की बात कही। और प्रार्थियों को नोटिस जारी किया।

इस संबंध में आदिवासी बुद्धिजीवी मंच ने अवमानना याचिका दायर की है। याचिका में कहा गया है कि हाईकोर्ट ने जुलाई 2024 में ही सरकार को दो माह के भीतर नियमावली तैयार कर लागू करने का आदेश दिया था। पेसा एक्ट 1996 में बना था, लेकिन अब तक झारखंड सरकार नियमावली नहीं बना सकी है।

झारखंड हाईकोर्ट में बीते दिन पेसा नियमावली को लेकर याचिका पर सुनवाई हुई थी। प्रार्थी के अधिवक्ता अजीत कुमार ने बताया था कि पेसा एक्ट में लघु खनिज की नीलामी में ग्राम सभा की अनुमति जरूरी है। उनको दूर रखने के लिए पेसा में विलंब किया जा रहा है। कहा था कि राज्य में 440 घाटों की नीलामी की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है, जो पेसा एक्ट का उल्लंघन है, इसलिए इस पर रोक लगाई जाए। उसी दिन रोक लगाई गई थी।

कुड़मी को अनुसूचित जनजाति श्रेणी में शामिल के विरोध आदिवासियों का जोरदार प्रदर्शन

सरायकेला खरसावां के गांव– गांव से पहुंचे प्रदर्शनकारी, पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष देवेंद्र चंपिया रहे साथ

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला समाहरणालय , कुड़मी समुदाय को अनुसूचित जनजाति श्रेणी में शामिल करने की मांग के विरोध करते हुए आदिवासी समुदाय ने जिला मुख्यालय सरायकेला में एक विशाल विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया। तीन किलोमीटर तक लम्बी लाईन में कड़कदार तेज धूप में मार्च कर सरायकेला से समाहरणालय तक लम्बी मानव कतार पहुंची । जिसमें कुड़मियों के आदिवासी करण विरोधी नारे लग रहे थे ।

इस विरोध प्रदर्शन में सरायकेला-खरसावां जिले के कुचाई, राजनगर , सरायकेला के ग्रामीण इलाकों से बड़ी संख्या में युवा व महिलाएं इस रैली की हिस्सा रही ।जिला मुख्यालय पहुँचने पर प्रदर्शनकारियों ने भारत की राष्ट्रपति और झारखंड के राज्यपाल के नाम पर उपायुक्त नीतीश कुमार सिंह को एक ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में कहा गया - अगर उन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया जाता है, तो वे निश्चित रूप से आदिवासी समुदायों के हक और अधिकारों पर हावी हो जाएँगे। इससे आदिवासियों के लिए आरक्षित नौकरियों, शिक्षा और अन्य सरकारी लाभों पर नकारात्मक असर पड़ेगा ।प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति से लोकुर समिति द्वारा निर्धारित मानदंडों का कड़ाई से पालन करने का आग्रह किया। उन्होंने यह भी अनुरोध किया कि भविष्य में किसी भी अन्य समुदाय को अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में शामिल करने से पहले इन मानदंडों को आधार बनाया जाए ।इस विरोध रैली में कई प्रमुख आदिवासी नेता और सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हुए, जिनमें बिहार विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष देवेंद्र नाथ चम्पिया, गणेश गागराई, सावन सोय, मनोज सोय, और सुरेश हेम्ब्रम प्रमुख थे।।

प्रधानमंत्री का ओडिशा दौरा कार्यक्रम घोषित, झारसुगुड़ा में 95 मिनट रुकेंगे मोदी

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : प्रधानमंत्री मोदी के झारसुगुड़ा दौरे को लेकर लोक सेवा भवन में एक तैयारी बैठक हुई। मुख्य सचिव मनोज आहूजा की अध्यक्षता में एक तैयारी बैठक हुई। सुबह राजस्व मंत्री सुरेश पुजारी, मुख्य सचिव मनोज आहूजा, निर्माण विभाग के प्रधान सचिव ने झारसुगुड़ा का दौरा किया और स्थल का निरीक्षण किया ।इसके बाद कल शाम विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ तैयारियों को लेकर चर्चा की गई।

27 तारीख को मोदी विशेष विमान से सुबह 11:10 बजे झारसुगुड़ा पहुँचेंगे। वहाँ से वे सड़क मार्ग से होते हुए सुबह 11:25 बजे अमलीपाली मैदान में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होंगे। वहाँ निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास, उद्घाटन और लोकार्पण होगा। कार्यक्रम के अंत में प्रधानमंत्री दोपहर 12:45 बजे नई दिल्ली लौटेंगे। कार्यक्रम में लगभग 60 हज़ार लोगों के जुटने की उम्मीद है ।इस संबंध में बैठक में झारसुगुड़ा हवाई अड्डे, झारसुगुड़ा अतिथि गृह, सभा भवन, कार्केड मार्ग, बिजली, पेयजल और पास व्यवस्था पर चर्चा हुई। बैठक में राज्य विकास आयुक्त अनु गर्ग, अतिरिक्त मुख्य सचिव (गृह) सत्यव्रत साहू, अतिरिक्त मुख्य सचिव (उद्योग, सूचना एवं जनसंपर्क) हेमंत शर्मा, पुलिस महानिदेशक वाई.बी. खुरानिया और कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इससे पहले, प्रधानमंत्री का कार्यक्रम ब्रह्मपुर में होना था, लेकिन मौसम की खराबी के कारण इसे झारसुगुड़ा स्थानांतरित कर दिया गया है।

स्लाइट में "शिक्षा महाकुंभ 2025" के संदर्भ में विशेष विचार-विमर्श कार्यक्रम आयोजित

लोंगोवाल, 25 सितंबर (जगसीर सिंह)-

संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (स्लाइट) में "शिक्षा महाकुंभ 2025" के संदर्भ में एक विशेष विचार-विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह महाकुंभ डिपार्टमेंट ऑफ हायर एजुकेशन (डी.एच.ई) तथा एनआईपीईआर मोहाली के सहयोग से 31 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025 मे होने जा रहा है। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता निर्देशक स्लाइट प्रो. मणिकांत पासवान की, इस अवसर पर संस्थान के फैकल्टी सदस्य और छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। उस समय विजय नड्डा ने शिक्षा महाकुंभ 2025 की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह आयोजन उच्च शिक्षा, शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में नए अवसर प्रदान करेगा। उन्होंने बताया कि इस महाकुंभ में देशभर से शोधकर्ता, विद्यार्थी और विशेषज्ञ भाग लेंगे, जिससे विचारों का आदान-प्रदान होगा और शैक्षिक उत्कृष्टता को नई दिशा मिलेगी। प्रो. मणिकांत पासवान ने अपने संबोधन में कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं, यह न केवल अकादमिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देता है बल्कि युवाओं को नेतृत्व, नवाचार और राष्ट्र निर्माण की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग भी दिखाता है ।फैकल्टी सदस्यों और विद्यार्थियों ने भी इस अवसर पर अपने विचार साझा किए और शिक्षा महाकुंभ 2025 को ज्ञान-विज्ञान के आदान-प्रदान का एक ऐतिहासिक अवसर बताया।

नवरात्रि के पावन पर्व पर दिल्ली में मांस, मछली एवं मुर्ग़े की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने की माँग

नई दिल्ली। रेज़िडेंट वेलफेयर एसोसिएशन, आई एवं जे ब्लॉक, जहांगीरपुरी के अध्यक्ष एस. एल. भास्कर ने दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को पत्र लिखकर नवरात्रि के शुभ अवसर पर दिल्ली में मांस, मछली एवं मुर्ग़े की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की माँग की है। भास्कर ने कहा कि नवरात्रि एक धार्मिक और आस्था से जुड़ा पर्व है, जिसमें लोग माता रानी की उपासना, पूजन-पाठ और उपवास रखते हैं। ऐसे अवसर पर सड़कों व बाजारों में खुलेआम मांस, मछली एवं बकरा-मुर्ग़ा काटे जाने से न केवल धार्मिक भावनाएँ आहत होती हैं, बल्कि समाज के लोगों में घृणा और असहजता की भावना भी उत्पन्न होती है। उन्होंने कहा कि धार्मिक भावनाओं की मर्यादा बनाए रखने और सामाजिक सद्भाव कायम रखने के लिए आवश्यक है कि नवरात्रि के दिनों में दिल्लीभर में मांस, मछली और मुर्ग़े की बिक्री पर रोक लगाई जाए। रेज़िडेंट वेलफेयर एसोसिएशन आई एवं जे ब्लॉक, जहांगीर पुरी की ओर से यह माँग की जाती है कि दिल्ली सरकार एवं दिल्ली पुलिस तत्काल प्रभाव से नवरात्रि के पावन पर्व पर मांस, मछली एवं मुर्ग़े की बिक्री पर प्रतिबंध लागू करें।

ज़िला केमिस्ट एसोसिएशन ने नए ज़ोनल लाइसेंसिंग अथॉरिटी श्री अमन वर्मा का किया स्वागत

सुनाम, १५ सितंबर (जगसीर लोगोंवाल)- ज़िला केमिस्ट एसोसिएशन की ओर से ज़िला अध्यक्ष नरेश जिंदल के नेतृत्व में नए ज़ोनल लाइसेंसिंग अथॉरिटी (ज़ेडएलए) श्री अमन वर्मा से मुलाक़ात की गई। इस अवसर पर एसोसिएशन के प्रतिनिधियों ने उन्हें बुके भेंट कर स्वागत किया और भरोसा दिलाया कि एसोसिएशन नियमों के अनुरूप कार्य करती रहेगी।

ज़िला अध्यक्ष नरेश जिंदल ने स्पष्ट किया कि एसोसिएशन स्वास्थ्य विभाग व ज़ेडएलए के साथ हमेशा सहयोग करेगी ताकि ज़िले में दवाइयों की बिक्री पूरी तरह नियमों के अनुसार हो। एसोसिएशन ने यह भी आश्वासन दिया कि किसी भी अवैध कार्य में लिप्त व्यक्ति का समर्थन नहीं किया जाएगा और नियमों का पालन करने वाले फ़ार्मासिस्टों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं होने दी जाएगी। इस अवसर पर ज़ेडएलए श्री अमन वर्मा ने कहा कि सभी केमिस्ट ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट के प्रावधानों और नियमों का कड़ाई से पालन करें। उन्होंने विशेष रूप से कैश बुक और शेड्यूल एच-1 रजिस्टर को सही रखने पर ज़ोर दिया। श्री वर्मा ने यह भी आश्वस्त किया कि किसी भी केमिस्ट को बिना कारण परेशान नहीं किया जाएगा, लेकिन नियमों का उल्लंघन करने वालों के ख़िलाफ़ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

बैठक में ज़िला केमिस्ट एसोसिएशन के महासचिव श्री राजीव जैन, बलविंदर सिंह बब्बला, कुशदीप सिंह, विनीत जिंदल, कौर सिंह ढींडसा, अजयब सिंह सैनी, त्रिलोक गोयल समेत कई अन्य केमिस्ट मौजूद रहे।

मुख्य सूचना आयोग का यह महत्वपूर्ण आदेश सभी को पढ़ना चाहिए : प्रदीप प्रधान

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : जाजपुर जिले के एक प्रमुख आरटीआई कार्यकर्ता के रूप में जाने जाते हैं। वर्ष 2022 में उन्होंने जाजपुर जिले के धर्मशाला पुलिस स्टेशन से कुछ जानकारी मांगी थी। जानकारी थी - 25.9.22 की सीसीटीवी फुटेज, ट्रक मालिकों से अवैध वसूली के खिलाफ पुलिस कार्रवाई के संबंध में जानकारी मांगी गई थी। 16.10.22 को जन सूचना अधिकारी ने जानकारी देने से इनकार कर दिया। इसके बाद सर्वेश्वर ने प्रथम अपीलीय प्राधिकारी और पुलिस अधीक्षक, जाजपुर के समक्ष अपनी प्रथम अपील दायर की। प्रथम अपीलीय प्राधिकारी ने कोई आदेश पारित नहीं किया। इसके बाद सर्वेश्वर ने सूचना आयोग में अपनी द्वितीय अपील दायर की।

तीन वर्ष बाद, यह अपील एसए संख्या 66/23 थी, याचिका की सुनवाई 21.8.25 को मुख्य सूचना आयुक्त, श्री मनोज परिदा द्वारा की गई। याचिकाकर्ता को जन सूचना अधिकारी, प्रथम अपीलीय प्राधिकारी और पुलिस अधीक्षक को नोटिस दिया गया। लेकिन एसपी सुनवाई में नहीं आए और न ही कोई जवाब पेश किया। आयोग ने यह मुद्दा भी नहीं उठाया कि एसपी सुनवाई के दौरान क्यों मौजूद नहीं थे। यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि सूचना आयोग में याचिकाकर्ता की सुनवाई में लगभग कोई भी अपीलीय प्राधिकारी नहीं आता। आयोग उन्हें कारण बताओ नोटिस भी जारी नहीं करता।

सुनवाई के दौरान सर्वेश्वर ने कहा कि उन्हें सूचना नहीं दी गई। जन सूचना अधिकारी ने अपना पक्ष रखा। उसके बाद, आयोग दोनों पक्षों की बात सुनकर सूचना उपलब्ध कराने के निर्देश दे सकता था। या कारण बताकर उसे खारिज कर सकता था। लेकिन हैरानी की बात यह है कि आयोग के श्री परिदा ने पूछा कि प्रथम अपीलीय प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता की सुनवाई क्यों नहीं की, और उक्त याचिका को अपीलीय प्राधिकारी और एसपी ने खारिज कर दिया। मामला जाजपुर भेज दिया गया और मामला बंद कर दिया गया। आयोग ने अपने आदेश में यह उल्लेख नहीं किया कि प्रथम अपीलीय प्राधिकारी कितने दिनों में सुनवाई और निर्णय करेगा। इसलिए, प्रथम अपीलीय प्राधिकारी जब चाहे मामले की सुनवाई कर सकता है। इसमें महीनों या एक साल भी लग सकता है। एक मामले का उदाहरण यहाँ दिया जा सकता है। मुख्य जानकारी आयोग के श्री परिदा के एसए क्रमांक 1474/2021 से है, प्रथम अपीलीय प्राधिकारी और भुवनेश्वर तहसीलदार को सुनवाई का आदेश दिया गया था और सूचना रोक दी गई थी। लेकिन तहसीलदार पूरी तरह से चुप रहे। आयोग ने आदेश की परवाह नहीं की। आयुक्त परिदा ने चूँकि बाल रोक दिए थे, इसलिए उनकी सुनवाई नहीं हो सकी। परिणामस्वरूप, जो नागरिक तीन साल से सूचना न मिलने का इंतज़ार कर रहा था, लेकिन न्याय के लिए सूचना आयोग के दरवाज़े तक पहुँचा था, वह उच्च न्यायालय के दरवाज़े तक पहुँच गया है। यह मुख्य सूचना आयुक्त की न्यायनिर्णयन प्रणाली है।

अब उस मुद्दे पर आते हैं जो सामने आता है। सूचना आयोग ने जाजपुर के एसपी परिदा को सुनवाई का निर्देश दिया है, लेकिन सूचना देने का नहीं। यदि प्रथम अपीलीय प्राधिकारी सर्वेश्वर की अपील को खारिज कर देता है, तो सर्वेश्वर को फिर से सूचना आयोग में द्वितीय अपील दायर करनी होगी और आयोग से न्याय पाने के लिए दो साल और इंतज़ार करना होगा।

यदि सूचना आयोग, श्री परिदा, प्रथम अपीलीय प्राधिकारी को निर्धारित समय सीमा के भीतर सुनवाई पूरी करने का निर्देश देते और कोई अन्य तिथि निर्धारित करते, तो अपीलकर्ता को शीघ्र न्याय की आशा होती। आयोग ने आदेश दिया है कि सर्वेश्वर की मृत्यु के बाद भी उसे सूचना नहीं मिलेगी। सर्वेश्वर को सूचना के लिए वर्षों तक प्रतीक्षा ही करनी पड़ेगी। कितनी भयावह स्थिति है !

सूचना आयोग की अज्ञानता और अनुभवहीनता के कारण हमारे राज्य में ऐसी भयावह स्थिति उत्पन्न हो गई है। आयोग के ऐसे मूर्खतापूर्ण आदेश के कारण लेखकों सहित सैकड़ों लोगों को न्याय नहीं मिल रहा है। वे निराश होकर घर लौट रहे हैं।

आज महामाई के पवित्र नवरात्रों पर आशियाना एस्टेट फतेहगढ़ चूड़ियां रोड पर ठाकुर जी की कृपा से आशियाना कॉलोनी में भूमि पूजन करवाया गया

अमृतसर 25 सितंबर (साहिल बेरी)

आशियाना कॉलोनी के कॉलोनाइजर नितिन चोपड़ा जी गौरव शर्मा जी और आशियाना में रहने वाले सभी सभी परिवारिक मेंबरों ने प्रभु कृपा से पंडित जी के मंत्र उच्चारण के साथ भूमि पूजन करवाया इसमें सबसे ज्यादा योगदान नितिन जी और गौरव जी के द्वारा दिया गया पूजा में बैठे अशोक भंडारी उद्धत भंडारी अश्विनी शर्मा पिंकी राजेश्वरी राहुल नरेंद्र अरोड़ा नरेश अरोड़ा शिरीन राजू नरेश अजय चोपड़ा केवल कृष्ण अरोड़ा मनीष चोपड़ा रेशम अरोड़ा दीपक अरोड़ा संजय गुप्ता अजय खन्ना लाल का प्रसाद अरुण मेहरा रचित दीपक तलवार अजय चोपड़ा अमित मेनन विवेक होंडा साहिल कौशल बॉबी मिश्रा संजय गुप्ता सुभाष सेठ अंकु जोली विकी मेहरा विकास मल्होत्रा कुणाल शर्मा गुरप्रीत सिंह ऋषि अरोड़ा मनीष अरोरा विकास शर्मा मनीष चोपड़ा मिंकु जी और इन सभी के घर

के परिवार मेंबर उपस्थित हुए और भूमि पूजन में प्रभु जी का शुक्रिया अदा किया गौरव जी और नितिन जी ने कहा कि भव्य मंदिर बनकर प्रभु कृपा से तैयार होगा और कॉलोनी के मेंबरों ने भी अपना हर संभव योगदान देने का भरोसा दिया।

बिहार की सृजन संकल्प सभा में डॉ. राजकुमार यादव सम्मानित

बिहार चुनाव में एनसीपी को कम आंकना होगा मुश्किल, पार्टी की मजबूत तैयारी और किंग मेकर की भूमिका पर जोर

राउरकेला: राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी उड़ीसा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव को पटना के रविंद्र भवन में आयोजित राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी बिहार की सृजन संकल्प सभा में अति विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मानित किया गया। उन्हें प्रसिद्ध धार्मिक पीठ जानकी जन्मस्थली पुनौरा धाम से संबंध रखने वाले रजानकी उद्धवस्र प्रतीक चिन्ह से नवाजा गया।

इस अवसर पर पार्टी की राष्ट्रीय महासचिव एवं मुख्य प्रवक्ता ब्रिज मोहन श्रीवास्तव, राष्ट्रवादी युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष धीरेज शर्मा, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह, बिहार प्रदेश संयोजक सूर्यकांत सिंह और बिहार प्रदेश चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष रंजन प्रियदर्शी सहित अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित थे।

अपने अभिभाषण में डॉ. राजकुमार यादव ने कहा कि बिहार में एनसीपी की स्थिति मजबूती से विकसित हो रही है। कार्यकर्ताओं का मनोबल उच्च है और वे समर्पण के साथ प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में पार्टी की महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि बिहार चुनाव में एनसीपी को कम आंकना उचित नहीं है और पार्टी की रणनीति आने वाले समय में किंग मेकर की भूमिका निभाने के लिए सक्षम है।सभा में उपस्थित पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने इस पहल और नेतृत्व क्षमता की सराहना की, जिससे पार्टी की आगामी चुनावी तैयारियों को और बल मिला।

केरल की धर्मनिरपेक्ष विरासत की पुनः पुष्टि !

(आलेख : एम ए बेबी, अनुवाद : संजय पराते)

त्रावणकोर देवस्वोम बोर्ड (टीडीबी) ने अपने प्लैटिनम जयंती समारोह के उपलक्ष्य में वैश्विक अय्यप्पा संगमम का आयोजन किया था, जिसे बड़ी सफलता मिली। 20 सितंबर को पंपा में हुए संगमम में 15 देशों और 14 राज्यों से 4,126 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें 2,125 अन्य राज्यों से और 182 विदेशों से आए थे। यह एक महत्वपूर्ण मंच रहा, जहाँ विकास परियोजनाओं पर चर्चा हुई -- जैसे सबरीमाला मास्टर प्लान, प्रस्तावित सबरीमाला हवाई अड्डा और अन्य पहल, जिनका उद्देश्य बुनियादी ढाँचे और तीर्थयात्रा के अनुभव को बेहतर बनाना है। यह एक राजनीतिक वक्तव्य भी था, जिसमें इस बात पर ज़ोर दिया गया कि केरल का सार्वजनिक जन जीवन विभाजनकारी ताकतों के आगे नहीं झुकेगा। इसने यह भी घोषित किया कि धर्मनिरपेक्षता कोई अमूर्त संवैधानिक सिद्धांत नहीं है, बल्कि केरल की तीर्थ परंपराओं में निहित एक जीवंत प्रथा है।

सामाजिक ताने-बाने का सार

सबरीमाला केवल एक मंदिर नहीं है ; यह केरल के सामाजिक और सांस्कृतिक समन्वय का प्रतीक है। जाति-आधारित और धार्मिक सीमाओं को लांघकर, तीर्थयात्री हफ्तों की तपस्या और आत्म-अनुशासन के बाद पवित्र पर्वत पर चढ़ते हैं, जो समानता और सामूहिक आध्यात्मिक साधना की पुष्टि करता है। भगवान अयप्पा के एक मुस्लिम साथी को समर्पित वावर नाडा की उपस्थिति, विश्वासों के प्रति आपसी सद्भाव की याद दिलाती है। तीर्थयात्रा का मार्ग ऐतिहासिक महत्व के एक ईसाई तीर्थस्थल, अर्थुनकल चर्च से भी जुड़ता है, जिससे एक ऐसा नेटवर्क बनता है, जो धार्मिक सीमाओं से परे है।

समान रूप से प्रतीकात्मक है हरिवरसनम नामक भक्ति गीत का गायन, जिसे मंदिर में हर शाम अयप्पा और उनके भक्तों के लिए लोरी के रूप में बजाया जाता है। इस गीत की रचना दिवंगत जी. देवराजन ने की थी, जो एक प्रसिद्ध संगीतकार थे और एक कट्टर नास्तिक और कम्युनिस्ट भी थे, और इसे के. जे. येसुदास, जो एक प्रतिष्ठित गायक और जन्म से ईसाई थे, की आवाज़ में अमर कर दिया गया। ये सभी तत्व मिलकर सबरीमाला की धर्मनिरपेक्ष, सामंजस्यपूर्ण और समावेशी विरासत को उजागर करते हैं। यह एक ऐसा स्थान है, जहाँ भक्ति को कभी भी सांप्रदायिक पहचान तक सीमित नहीं किया जाता, बल्कि एक सार्वभौमिक मानवीय अभिव्यक्ति के रूप में मनाया जाता है।

संगमम की संकल्पना करके, टीडीबी ने इस दीर्घकालिक धर्मनिरपेक्ष परंपरा का जश्न मनाया और इसकी पुष्टि की। इसने इस मान्यता का संकेत दिया कि सबरीमाला किसी एक संप्रदाय या समुदाय का नहीं, बल्कि पूरे विश्व का है, जो मंदिर में स्वागत करने वाले शब्दों में परिलक्षित होता है, तत्त्वम् असि। इसका अर्थ है, तुम वही हो। यह बताता है कि सभी में एक ही भावना अंकुरित होती है, या कोई भी पराया नहीं है। यह एक ऐसी अवधारणा है, जिसे सभी द्वारा स्वीकार किया जा सकता है। फिर भी, विपक्षी दलों ने इस प्रगतिशील कदम का विरोध करना चुना। इसके अलावा, सांप्रदायिक ताकतों के प्रभुत्व वाले मंच सबरीमाला कर्म समिति ने वैश्विक अयप्पा संगमम के ठीक दो दिन बाद 22 सितंबर को पंडालम में एक तथाकथित भक्तजन संगमम (श्रद्धालुओं का समूह) आयोजित करने की अपनी योजना की घोषणा की। बहरहाल, आम जनता के साथ-साथ अयप्पा भक्तों ने भी उनके नापाक इरादों को उजागर किया है, जो इसमें निराशाजनक भागीदारी से स्पष्ट हो गया।

यहां, यह ध्यान देने की जरूरत है कि इस विशिष्ट मामले में, केरल में हमारे साथियों द्वारा हिंदुत्व सांप्रदायिकता के खिलाफ सभी धर्मनिरपेक्ष ताकतों को व्यापक रूप से संगठित करने का प्रयास किया गया था ; जैसा कि हाल ही में संपन्न 24वीं पार्टी कांग्रेस की राजनीतिक लाइन में निर्देशित किया गया है। कर्म समितियों के आह्वान के प्रति आम जनता की निराशाजनक प्रतिक्रिया उस वैचारिक बढ़त को रेखांकित करती है, जिसे हम अयप्पा संगमम और विश्वासा संगमम के इर्द-गिर्द के विमर्श के संबंध में हासिल करने में सक्षम रहे हैं।

पुनर्जागरण, सुधार और प्रतिगामिता

आस्थावानों और सांप्रदायिक ताकतों के बीच अंतर को समझना बेहद ज़रूरी है। आस्थावान लोग आस्था से अनुशासन, नैतिक शक्ति और भाईचारे की भावना प्राप्त करते हैं। सांप्रदायिक ताकतें संकीर्ण राजनीतिक लाभ के लिए उनकी धार्मिक भावनाओं का दुरुपयोग करती हैं। केरल का इतिहास दर्शाता है कि आस्थावान लोग अक्सर सुधार और प्रगति के पक्ष में खड़े रहे हैं। श्री नारायण गुरु, अय्यंकाली और अन्य सुधारकों के नेतृत्व में संघर्ष समाज और धार्मिक परंपराओं के भीतर से उभरे, और फिर भी उन्होंने मुक्ति, समानता और सामाजिक परिवर्तन की ओर इशारा किया। वैश्विक अय्यप्पा संगमम इसी सुधारवादी परंपरा का हिस्सा था।

सबरीमाला का धर्मनिरपेक्ष चरित्र आकस्मिक नहीं है ; यह सदियों के सुधार, बातचीत और आम भक्तों के संघर्ष का परिणाम है। अतीत में सबरीमाला और अन्य मंदिरों में हुए सुधार बाहर से थोपे जाने से नहीं, बल्कि समाज के भीतर से ही आए थे। वामपंथियों का हमेशा से मानना रहा है कि जातिगत पदानुक्रम और सांप्रदायिक विभाजन को कम करने के लिए ऐसे आंतरिक सुधार आंदोलन आवश्यक हैं। यही कारण है कि संगमम को सांप्रदायिक बनाने के प्रयासों का वैचारिक स्पष्टता के साथ विरोध किया गया। भाजपा और उसके सहयोगी लंबे समय से राजनीतिक लाभ के लिए सबरीमाला को हथियार बनाने की कोशिश करते रहे हैं, प्रगतिशील सुधारों को आस्था पर हमले के रूप में चित्रित करते रहे हैं। लेकिन तथ्य स्पष्ट हैं : सबरीमाला कभी भी सांप्रदायिक ताकतों का हिस्सा नहीं रहा। इसकी समावेशिता, समुदायों के बीच इसके संबंध, सुधारों का इतिहास आदि, सांप्रदायिक आख्यानों के विरोध में खड़े हैं।

अय्यप्पा संगमम के आयोजन को सीपीआई (एम) द्वारा एक धार्मिक आयोजन में हस्तक्षेप करने के प्रयास के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया गया था, क्योंकि कम्युनिस्ट धर्म के आलोचक हैं। कम्युनिस्ट समाज के सभी पहलुओं का अध्ययन और आलोचना करते हैं -- सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि -- ताकि एक बेहतर भविष्य सुनिश्चित किया जा सके। इसलिए, स्वाभाविक रूप से, धर्म भी हमारे रडार के दायरे में आता है, क्योंकि यह समाज का अभिन्न अंग है। मार्क्स की प्रसिद्ध उक्ति है : धर्म उत्पीड़ित प्राणी की आह है, एक हृदयहीन दुनिया का हृदय है, और आत्माहीन परिस्थितियों की आत्मा है। यह लोगों के लिए अफीम है।ध वह इस तथ्य पर प्रकाश डाल रहे थे कि धर्म उत्पीड़ितों को उनके दुखों को भूलने में मदद करता है। यह भी ध्यान देने की जरूरत है कि, मार्क्स के समय, अफीम का उपयोग चिकित्सा क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा दर्द निवारक के रूप में किया जाता था।

संकल्प के साथ आगे बढ़ें

किसी भी धार्मिक अनुष्ठान या परंपरा में हस्तक्षेप किए बिना, वैश्विक अय्यप्पा संगमम ने सबरीमाला को एक वैश्विक तीर्थस्थल के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दुनिया के सबसे बड़े वार्षिक तीर्थस्थल के रूप में, सबरीमाला लंबे समय से भक्ति, अनुशासन और बंधुत्व का प्रतीक रहा है। संगमम का आयोजन निस्संदेह इस सार्वभौमिक आकर्षण को मान्यता देने, सबरीमाला को वैश्विक सांस्कृतिक मानचित्र पर स्थापित करने और केरल की धर्मनिरपेक्ष विरासत की पुनः पुष्टि करने की दिशा में एक कदम था।

(लेखक माकपा के महासचिव हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

झारखंड के पारसनाथ पहाड़ियों मे नक्सलियों के ठिकाने से मिले हथियार, विस्फोटक

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची, नक्सलियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में गिरिडीह पुलिस और सीआरपीएफ को एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। मधुबन थाना क्षेत्र के सतकीरा और पारसनाथ की पहाड़ियों में संयुक्त सर्च ऑपरेशन के दौरान पुलिस ने नक्सलियों के ठिकाने से भारी मात्रा में हथियार और विस्फोटक सामग्री बरामद की है। जानकारी के अनुसार, गिरिडीह पुलिस और सीआरपीएफ की 203 और 154 बटालियन की टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर जोकाई नाला और चीरवाबेड़ा इलाके में अभियान चलाया। इस दौरान सघन सर्चिंग और छापेमारी में एक एसएलआर राइफल, एक 3.3 राइफल, 113 जिंदा कारतूस, 2 मैगजीन पाउच, करीब 700 मीटर कोडेक्स वायर और 23 डेटोनेटर समेत अन्य सामान बरामद किए गए।

बरामदगी के बाद गिरिडीह के पुलिस अधीक्षक डॉ. विमल कुमार और सीआरपीएफ कमांडेंट ने संयुक्त रूप से प्रेस वार्ता कर जानकारी दी। एसपी डॉ. विमल कुमार ने कहा कि जिले में नक्सल उन्मूलन अभियान लगातार जारी रहेगा और आगे भी इस तरह की कार्रवाई की जाएगी। डुमरी अनुमंडल में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में एसपी ने बताया कि यह कार्रवाई अपर पुलिस अधीक्षक अभियान सुरजीत कुमार, डिप्टी कमांडेंट सीआरपीएफ 154 बटालियन अमित कुमार झा, असिस्टेंट कमांडेंट कोबरा 203 वैभव मल्होत्रा, पु.नि. पिंटु शर्मा (सीआरपीएफ 154/F), खुखरा थाना प्रभारी निरंजन कच्छप, निमियाघाट थाना प्रभारी सुमन कुमार समेत जिला पुलिस, कोबरा-203 और सीआरपीएफ 154 बटालियन के जवानों की संयुक्त टीम ने अंजाम दी। पुलिस प्रशासन ने साफ कहा है कि नक्सल गतिविधियों को खत्म करने के लिए अभियान को और तेज किया

बरामदगी के बाद गिरिडीह के पुलिस अधीक्षक डॉ. विमल कुमार और सीआरपीएफ कमांडेंट ने संयुक्त रूप से प्रेस वार्ता कर जानकारी दी। एसपी डॉ. विमल कुमार ने कहा कि जिले में नक्सल उन्मूलन अभियान लगातार जारी रहेगा और आगे भी इस तरह की कार्रवाई की जाएगी।

पलामू व्याघ्र प्रकल्प हेतु780 परिवारों को अन्यत्र बसायेगी झारखंड सरकार

विस्थापितों को 15 लाख रूपये तथा एक एकड़ जमीन दी जायेगी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

सरायकेला, पलामू में शहीद नीलाम्बर-पीताम्बर, उत्तर कोयल जलाशय परियोजना (मंडल डैम) के डूब क्षेत्र में स्थित सात गांवों के 780 परिवारों को राज्य सरकार पुनर्वास करायेगी। सातों गांव पलामू व्याघ्र आरक्षित कोर क्षेत्र में भी अवस्थित हैं। इसमें प्रति परिवार 15 लाख रुपये और एक एकड़ जमीन दी जाएगी। कैबिनेट ने इस पर अपनी स्वीकृति दे दी है। देश के विभिन्न टाइगर रिजर्व के कोर क्षेत्र में बसे 600 से अधिक गांवों का पुनर्वास हो चुका है। पलामू व्याघ्र आरक्ष के कोर क्षेत्र में 35 गांव हैं और पलामू व्याघ्र परियोजना दक्षिणी प्रमंडल, मेदिनीनगर के कोर क्षेत्र में तीन गांवों लाटू, कुजरूम और जयगीर गांव के पुनर्वास के लिए एनटीसीए की अनुमति प्राप्त है और उन तीनों गांवों के कुल 270 परिवारों को पुनर्वासित किया जा रहा।

जमीन नहीं छोड़ेंगे, संघर्ष नहीं छोड़ेंगे : राजधानी में दिन भर डटे रहे किसान और आदिवासी, मुख्यमंत्री के नाम दिया ज्ञापन

परिवहन विशेष न्यूज

भोपाल। मध्यप्रदेश के कई जिलों से आये किसान और आदिवासी आज दिन भर राजधानी में आकर डटे रहे और घाटे में जाती खेती, बर्बाद होती किसानी, पीढ़ियों से काबिज जमीन से जबरिया बेदखली, भूमि के कम्पनीकरण और कारपोरेटीकरण, अतिवर्षा की तबाही, आवारा पशुओं के आतंक और बेतहाशा बढती बेरोजगारी से उपजी समस्याओं पर अपना आक्रोश व्यक्त किया। मध्यप्रदेश किसान सभा (अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध) और मध्यप्रदेश आदिवासी एकता महासभा (आदिवासी अधिकार राष्ट्रीय मंच से संबद्ध) ने दो महीने तक प्रदेश भर में चलाये अभियान के बाद इस धरना-प्रदर्शन का आव्हान किया था।

मप्र किसान सभा के अध्यक्ष अशोक तिवारी और मप्र आदिवासी एकता महासभा के अध्यक्ष बुद्धसेन सिंह गोंड की अध्यक्षता में दिन भर चली सभा में किसान नेताओं ने मध्य प्रदेश में विभिन्न परियोजनाओं के नाम पर अनावश्यक भूमि अधिग्रहण की कार्यवाही रोकने, जहां भी अत्यंत आवश्यक हो, वहीं पर जन हितैषी परियोजनाओं के लिए ही भूमि अधिग्रहण की कार्यवाही केन्द्रीय भूमि अधिग्रहण कानून 2013 के प्रावधानों के अंतर्गत ही करने, बिना उचित मुआवजा दिए लैंड पूलिंग नहीं करने की मांग की। इसी के साथ जंगलों, बीहड़ों, पहाड़ों की भूमि को निजी कॉरपोरेट्स कंपनियों को न सौंपने, पीढ़ियों से शासकीय भूमि पर काबिज भूमिहीन, गरीब किसानों, अनुसूचित जाति, जनजाति के भूमिहीन किसानों को कृषि भूमि के पट्टे देने, कॉर्पोरेट कंपनियों को जमीन आवंटित नहीं करने और जंगलों में निवास कर रहे आदिवासी परिवारों को वनाधिकार कानून 2006 के अंतर्गत कृषि भूमि और आवास के पट्टे देने और उनको अनावश्यक रूप से बेदखल करने की कार्रवाई रोकने की मांग भी की गयी। नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पीढ़ियों से शासकीय भूमि पर निवास कर रहे आवासहीन परिवारों को आवास के पट्टे और आवास स्वीकृत किए जाने और उन्हें अनावश्यक रूप से बेदखल नहीं किये जाने का मुद्दा भी रखा गया।

इस प्रदर्शन के जरिए मांग की गई है कि अतिवृष्टि और जलभराव से किसानों की फसलों को हुए नुकसान का मुआवजा सर्वे कराकर तत्काल किसानों को दिलाने, खाद की समस्या का निराकरण तत्काल करने, खाद वितरण केंद्र तथा खाद का स्टॉक बढ़ाने और ज्यादा मात्रा में डीएपी और यूरिया खाद उपलब्ध कराया जाए। आवारा पशुओं की समस्या हल कर उनका समुचित व्यवस्थापन एवं प्रबंधन करने, किसानों की सभी फसलों की एम एस पी पर गारंटीड खरीदी के लिए कानून बनाने, बिजली के निजीकरण और स्मार्ट मीटर लगाने की कार्रवाई को रोकते हुए किसानों के पुराने लंबित विद्युत बिलों को माफ करने, बिजली की दरें नहीं बढ़ाने और उन्हें किसानों और अन्य उपभोक्ताओं के लिए कम करने की मांग भी रखी गयी।

किसानो ने शासकीय स्कूलों की बंदी पर रोक लगाने और शिक्षा के लोक व्यापीकरण के लिए नए स्कूल खोलने, सभी बेरोजगारों को रोजगार देने की व्यवस्था सुनिश्चित करने और अमरीका के राष्ट्रपति ट्रम्प के भारतीय मालों और कृषि उत्पादों पर लगाये जा रहे टैरिफ़ के दबाव में न झुकने और भारत की कृषि, उद्योग और रोजगार के हितों की हिफाजत के लिए दृढ़ता के साथ खड़े होने की बात भी कही गयी। इनके अलावा अनेक स्थानीय मांगे भी रखी गयीं।

मप्र किसान सभा के राज्य महासचिव अखिलेश यादव के संचालन में हुई इस सभा के मुख्य वक्ता अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव बादल सरोज थे। उन्होंने बड़े लोगों के मुनाफों के लिए खेती किसानी को बर्बाद करना केंद्र तथा राज्य सरकारों की नीतियों का हिस्सा बताया और इनके खिलाफ संघर्ष तेज करने की चेतावनी दी। आदिवासी अधिकार राष्ट्रीय मंच के केन्द्रीय समिति सदस्य रामनारायण कुररिया सहित कोई 42 वक्ताओं ने संबोधित किया। ट्रेड यूनियन, महिला तथा छात्र संगठनों ने भी एकजुटता का आश्वासन दिया।

इस प्रदर्शन की अनुमति देने के लिए भोपाल प्रशासन तैयार नहीं था, रात 12 बजे ही अनुमति दी गयी, वह भी सिर्फ इकट्ठा होकर सभा करने की, जलूस निकालकर प्रदर्शन करना प्रतिबंधित कर दिया गया। मुख्यमंत्री को दिया जाने वाला ज्ञापन प्रशासनिक अधिकारियों ने ही ले लिया।

अखिलेश यादव
महासचिव, मध्यप्रदेश किसान सभा

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023